Hindu Astrology Series

ज्योतिष के मूल सिद्धान्त

प्रियम्बदा अग्रवाल
आशुतोष शर्मा

मार्गदर्शक
श्री के॰ एन॰ राव

वाणी पब्लिकेशन्स
दिल्ली

हिन्दू ज्योतिष श्रृंखला

ALPHA PUBLISHERS AND DISTRIB
BULMIN BASEMENT, GATE No-
BHARATIYA VIDYA BHAVAN
K. G. MARG, NEW DELHI-110001

ज्योतिष के मूल सिद्धान्त

प्रियम्बदा अग्रवाल
आशुतोष शर्मा

मार्गदर्शक
श्री के० एन० राव

वाणी पब्लिकेशन्स
दिल्ली

The Society for Vedic Research and Practices
"a nonprofit research and training organisation"

हिन्दू ज्योतिष श्रृंखला

ज्योतिष के मूल सिद्धान्त

प्रकाशक
वाणी पब्लिकेशन्स
एफ-291, सरस्वती कुंज,
25, आई.पी. एक्सटेन्शन, दिल्ली - 110092

© लेखकाधीन

प्रथम हिन्दी संस्करण 2014
पुनः मुद्रण 2019

ISBN: 81-89221-84-X

केवल भारत में विक्रय हेतु
मूल्यः 150/- रुपये

Setting, Designing and Printing by
D.K. Traders
2431, Chhipiwara, Near Jama Masjid
Chawri Bazar, Delhi-110006.
www.trintrin.com # 23285537, 9810022610

समर्पण

आज के समय में प्रत्येक मानव जीवन की जटिलताओं से परेशान एवं भावी जीवन की असुरक्षाओं से विचलित है। ऐसी अवस्था में ज्योतिषीय ज्ञान ही भविष्य की राह में मार्ग दर्शन कर सकता है। वस्तुतः अन्य विभिन्न विषयों जैसे हस्त विज्ञान, सामुद्रिक विज्ञान, विज्ञान और अंग विज्ञान आदि भी मार्ग दर्शन करते आये हैं, परन्तु जितना गणितीय सूक्ष्म अध्ययन एवं तार्किक स्पष्टीकरण ज्योतिष शास्त्र में सम्भव है आज के समय में अन्य किसी भी शास्त्र में सम्भव नहीं है।

ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत सम्पूर्ण ब्रह्माणीय स्थिति एवं उसमें उपस्थित ऊर्जाओं का अध्ययन किया जाता है, इन ऊर्जाओं का सम्पूर्ण जड एवं चेतन जगत पर सदैव प्रभाव विद्यमान रहता है। ज्योतिषीय गणना के अन्तर्गत सम्पूर्ण 27 (सत्ताइस) नक्षत्रों में 108 (एक सौ आठ) पद होते हैं। जिनमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का समावेश है और प्रत्येक प्राणी का पद इन्हीं में से एक होता है। ऐसे में यदि कोई भी जीव अपने इष्ट को स्मरण करते हुए 108 मनकों द्वारा प्रार्थना करता है तो व्यक्ति विशेष का तो भला होता ही है साथ ही वह व्यक्ति सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भी कामना कर लेता है।

वैदिक काल में ज्योतिष का एकमात्र मुख्य उद्देश्य अपने कर्म बंधन को पूर्ण करते हुए मोक्ष की ओर अपने जीवन मार्ग को प्रशस्त करने की कोशिश करना था, परन्तु वर्तमान समय में ज्योतिषीय गणना का प्रयोग अपनी सुख-सुविधाओं की प्राप्ति और उत्तरदायित्व की पूर्ति हेतु किया जा रहा है। वर्तमान में सभी ज्योतिषियों का कर्त्तव्य है कि ज्योतिषीय गणना का उचित प्रयोग करते हुए सही मार्ग-दर्शन करें एवं सत्कर्म करने के लिये प्रोत्साहित करें।

प्रस्तुत पुस्तक में उद्देश्य रहा है कि ज्योतिष शास्त्र के मूल सिद्धान्तों को समझा जाये और ज्योतिषीय नियमों को इन्हीं सिद्धान्तों के परिपेक्ष्य में प्रयोग किया जाय, जिससे गणना में दिशा भ्रम न हो। ज्योतिषीय गणना में सही निष्कर्ष के लिए सभी तत्वों की जांच अवश्यक है क्योंकि महादशा, अन्तर्दशा, ग्रह स्थिति और गोचर इत्यादि पहले भी वैदिक काल से वर्तमान समय तक अपना प्रभाव देते आ रहे हैं और भविष्य में भी अपना प्रभाव देते रहेगें। परन्तु पहले की जीवन-चर्या और रहन-सहन वर्तमान से बहुत अलग थी और इनमें भविष्य में भी परिवर्तन होते रहेगें, अत: कहा जा सकता है कि जगत की सभी इकाइयाँ एकल रूप में न होकर सामूहिक रूप से प्रभावशील होती हैं। इस सामूहिक प्रभाव को जाँचने के लिए प्रस्तुत पुस्तक के मूल सिद्धान्तों को समझना अति आवश्यक है।

वर्तमान समय में सभी विशेषज्ञ ज्योतिष को अपने विशेष के संदर्भ में जाँचना चाहते हैं जैसे कला, विज्ञान और वाणिज्य आदि के विशेषज्ञ। इस पुस्तक के अन्तर्गत जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है उनके द्वारा समाज के सभी विषयों को ज्योतिषीय संदर्भ में समझा जा सकता है।

ज्योतिष के सभी मूल नियम सदैव देश-काल-पात्र की सीमा के अन्तर्गत क्रियान्वित होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में दिये गये नियम ज्योतिषीय प्रेमी को वह पात्रता प्रदान करने में सक्षम हैं जिससे वह देश-काल-पात्र के अनुसार सही निष्कर्ष प्राप्त कर सके।

हमें ज्योतिष शास्त्र के नियम सिखाने वाले तथा ज्योतिष रूपी नेत्र को प्रदान करने वाले वर्तमान समय के हमारे आदर्श और ज्योतिष के भीष्म पितामह श्री कोटम राजू नारायण राव जी हैं। हमारे ज्योतिष गुरू श्री के.एन. राव जी का आशीर्वाद ही हमारी लेखनी का आधार एवं हमारी प्रेरणा बना है। ईश्वर से प्रार्थना है कि इनका आशीर्वाद और मार्ग दर्शन सदैव प्राप्त होता रहे। हम अपना सम्पूर्ण प्रयास अपने ज्योतिष गुरू श्री के.एन. राव जी के चरण कमलों में समर्पित करते हैं।

प्रियम्बदा अग्रवाल
आशुतोष शर्मा

प्रियम्बदा अग्रवाल : समाजशास्त्र में एम.ए. करने के उपरान्त करीब 10 वर्ष तक आई.टी.आई. दिल्ली के विभिन्न शाखाओं में अध्यापन कर कार्य करती रहीं। तत्पश्चात् इन्होंने भारतीय विद्या भवन से ज्योतिष आचार्य की डिग्री प्राप्त की। इन्होंने अब तक ज्योतिष पर कई महत्त्वपूर्ण शोध किये हैं जो की सराहनीय हैं और इनके लेख जर्नल ऑफ एस्ट्रोलोजी में प्रकाशित होते रहे हैं। ये आजकल भारतीय विद्या भवन में ज्योतिष की प्राध्यापिका हैं।

आशुतोष शर्मा : भारतीय विद्या भवन से ज्योतिष आचार्य एवं स्वर्ण पदक प्राप्त है एवं शोधकर्त्ता है वास्तु शास्त्र में पोस्ट ग्रेजुएट है, वैज्ञानिक वास्तु शास्त्री है, वैज्ञानिक रंग विशेषज्ञ है, वैज्ञानिक वास्तु यन्त्र एवं लैकर विशेषज्ञ है, अंक विशेषज्ञ है, पौरिहित्य अलंकार से विभूषित है, आकाशवाणी में वैदिक शास्त्र के संवादकर्त्ता है, परम्परागत ज्योतिषी है और इनके लेख जर्नल ऑफ एस्ट्रोलोजी में प्रकाशित होते रहे हैं।

प्राक्कथन

आज के ज़माने में अधिकांश लोग ज्योतिष की शिक्षा प्रौढ़ या वृद्धावस्था में ही शुरू करते हैं। तब तक वे एक दूसरा कैरियर बना चुके होते हैं। साठ-सत्तर के दशक से पहले के समय में ज्योतिषी के पुत्र ही अधिकतर ज्योतिषी बनते थे।

उदाहरण के लिये डॉ. रमन ने बृहत-जातक को कंठस्थ कर लिया था। हरदेव शर्मा शास्त्री जी को भी बहुत से ग्रन्थों को कंठस्थ करना पड़ा था। कलकत्ता में ऐसे ही एक पारम्परिक ज्योतिषी स्व. मशानेश्वर से जब मेरी ज्योतिष पर चर्चा होती थी तो वे बृहत-पराशर होरा शास्त्र में से कंठस्थ किये हुए उपयुक्त श्लोक प्रस्तुत करते थे। एक बार जब एक कुण्डली पर चर्चा हो रही थी तो उन्होंने तुरंत कहा कि आत्मकारक और पुत्रकारक की परस्पर दृष्टियों के कारण इस व्यक्ति में प्रतिभा है। किन्तु ऐसे ज्योतिषी अब मिलना मुश्किल हैं, क्योंकि ज्योतिष की शिक्षा बाल्यकाल से नहीं शुरू होती है और शिक्षा प्रणाली भी इतनी बदल चुकी है कि अब विद्यार्थियों को कंठस्थ के लिये बाध्य भी नहीं किया जाता।

आजकल के ज्योतिषी अकसर ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों को भूल जाते हैं, इसलिए उनको एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता है जहाँ पर ये सिद्धान्त एक स्थान पर संकलित हो जैसे-सौर वर्ष, चन्द्र वर्ष, बृहस्पति वर्ष इत्यादि। आयन, सूर्य की राशि का भ्रमण, मासों के वैदिक और अंग्रेजी नाम, तिथियों की वृद्धि और क्षय, वार, तिथि, नक्षत्र, राशियों का स्वभाव दिवाबली-रात्रिबली राशियाँ इत्यादि। ऐसे हमेशा उपयोग में आने वाले ज्योतिष के ज्ञान की आवश्यकता हमेशा फलित में पड़ती है। इस अभाव की पूर्ति प्रियम्वदा अग्रवाल और आशुतोष शर्मा की इस पुस्तक में काफी संतोषजनक

रूप से हुआ है। उदाहरण के लिये दशा-छिद्र और छिद्र-ग्रह का भेद ही लोगों को याद नहीं रहता। नक्षत्रों की दिशा और आकृति जो फलित ज्योतिष में महत्त्वपूर्ण है। उसके साथ कुछ योग होते हैं जो सूर्य और चन्द्रमा से बनते हैं और भंग भी होते हैं, परन्तु कब बनते हैं और कब भंग होते है इसको स्मरण रखना कठिन है।

इस प्रकार अनेक उपयोगी बातें एक साथ इस पुस्तक में प्रस्तुत हैं। ज्योतिष की शिक्षा प्रारम्भ करने वाले विद्यार्थी के लिए ही नहीं बल्कि अनुभवी और वृद्ध ज्योतिषी, सभी के लिये यह पुस्तक उपयोगी है।

के.एन.राव

भीष्म कृत श्रीकृष्ण स्तुति

इति मतिरुपकल्पिता वितृष्णा भगवति सात्वत पुङ्गवे विभूम्नि।
स्वसुखमुपगते क्वचिद्विहर्तुं प्रकृतिमुपेयुषि यद्भवप्रवाहः॥1॥
त्रिभुवनकमनं तमालवर्णं रविकरगौरवराम्बरं दधाने।
वपुरलककुलावृताननाब्जं विजयसखे रतिरस्तु मेऽनवद्या॥2॥
युधि तुरगरजोविधूम्रविष्वक्कचलुलितश्रमवार्यलंकृतास्ये।
मम निशितशरैर्विभिद्यमानत्वचि विलसत्कवचेऽस्तु कृष्ण आत्मा॥3॥
सपदि सखिवचो निशम्य मध्ये निजपरयोर्बलयो रथं निवेश्य।
स्थितवति परसैनिकायुरक्ष्णा हतवति पार्थ सखे रतिर्ममास्तु॥4॥
व्यवहित पृथनामुखं निरीक्ष्य स्वजनवधाद्विमुखस्य दोषबुद्ध्या।
कुमतिमहरदात्मविद्यया यश्चरणरतिः परमस्य तस्य मेऽस्तु॥5॥
स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञा मृतमधिकर्तुमवप्लुतो रथस्थः।
धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलत्गुः हरिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीयः॥6॥
शितविशिखहतोशीर्णदंशः क्षतजपरिप्लुत आततायिनो मे।
प्रसभमभिससार मद्वधार्थं स भवतु मे भगवान् गतिर्मुकुन्दः॥7॥
विजयरथकुटुम्ब आत्ततोत्रे धृतहयरश्मिनि तच्छ्रियेक्षणीये।
भगवति रतिरस्तु मे मुमूर्षोः यमिह निरीक्ष्य हताः गताः सरूपम्॥8॥
ललित गति विलास वल्गुहास प्रणय निरीक्षण कल्पितोरुमानाः।
कृतमनुकृतवत्य उन्मदान्धाः प्रकृतिमगन् किल यस्य गोपवध्वः॥9॥
मुनिगणनृपवर्यसंकुलेऽन्तः सदसि युधिष्ठिरराजसूय एषाम्।
अर्हणमुपपेद ईक्षणीयो मम दृशि गोचर एष आविरात्मा॥10॥
तमिममहमजं शरीरभाजां हृदिहृदि धिष्टितमात्मकल्पितानाम्।
प्रतिदृशमिव नैकधाऽर्कमेकं समधिगतोऽस्मि विधूतभेदमोहः॥11॥

॥इति श्रीमद्भागवत महापुराण भीष्म स्तुति सम्पूर्णम्॥

ज्योतिष वेद का नेत्र है तथा फलित ज्योतिष उस नेत्र की ज्योति है। इस अध्ययन ज्ञान को एवं इस ज्योति को जानने वाले को ज्योतिषी कहा जाता है। इसीलिये ज्योतिषी को दैवज्ञ भी कहा जाता है।

वेदों के मुख्य रूप से छः प्रमुख अंग माने गये हैं।

1. शिक्षा
2. छन्द
3. व्याकरण
4. निरुक्त
5. कल्प
6. ज्योतिष

1. **शिक्षाः**—वेदों के उच्चारण की सही शिक्षा। इसे वेदों की **नासिका** कहा जाता है क्योंकि जिस प्रकार नासिका के द्वारा ली जाने वाली श्वॉस के द्वारा ही कोई व्यक्ति जीवित रह सकता है उसी प्रकार शिक्षा को प्राप्त किये बिना कोई व्यक्ति न तो जीवन यापन कर सकता है और न ही जीवित रह सकता है।

2. **छन्दः**—छन्द के अंतर्गत वेदों की जाति एवं भेदों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। इन्हें वेदों के **पैर** कहा जाता है क्योंकि जिस प्रकार कोई व्यक्ति पैरों के न होने पर कहीं भी आना-जाना नहीं कर सकता है और कार्य नहीं कर सकता इसी प्रकार छन्द के बिना वेदों को व्यवस्थित नहीं किया जा सकता।

3. **व्याकरणः**—वेदों के अर्थ और प्रयोग में संलग्न किये जाने वाले शब्दों को विभिन्न अलंकार एवं सभी व्याकरण के अंतर्गत आने वाली क्रियाओं के द्वारा नियमानुसार व्यवस्थित करना ही व्याकरण कहलाता है।

इसे वेदों का **मुख** कहा जाता है क्योंकि जिस प्रकार कोई व्यक्ति मुख के द्वारा अपने अधिकांश कार्यों की पूर्ति बोलकर करता है उसी प्रकार व्याकरण विभिन्न शब्दों को तैयार करके कार्य करने के लिये प्रस्तुत करता है।

4. **निरुक्तः**—वेदों के शब्द कोश को निरुक्त कहा जाता है। इन्हें वेदों के **कान** (कर्ण) कहा जाता है क्योंकि जिस प्रकार कोई व्यक्ति कानों के बिना सुन नहीं सकता और कार्य करने में समर्थ नहीं हो पाता इसी प्रकार इन शब्दों के कोश के अभाव में वेदों का सही और उचित प्रस्तुतीकरण संभव नहीं है। इसी के द्वारा वेदों के अस्तित्व को बनाया गया है।

5. **कल्पः**—यज (यज्ञ) करने की विधि को कल्प कहा जाता है। इसे सामान्य भाषा में हवन कहा जाता है। इसके द्वारा वेदों का मौखिक प्रस्तुतीकरण (Practical) संभव होता है। इसे वेदों के **हाथ** कहा जाता है क्योंकि कोई व्यक्ति क्रियात्मक कार्यों को तब तक पूर्ण करने में असमर्थ रहता है जब तक कि उसके हाथ न हो।

6. **ज्योतिषः**—ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति, दिशा, गति तथा परस्पर ग्रहों के संबंधों के अध्ययन द्वारा किसी के (व्यक्तिगत या सामाजिक सभी प्रकार) संबंध या उसके स्वभाव से अवगत होना और स्थिति का पूर्वानुमान लगाना ही ज्योतिष है, इन्हें वेदों की **आँख** कहा जाता है। क्योंकि ज्योतिष के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की स्थिति अनुसार तर्क प्रस्तुत करते हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार कोई व्यक्ति आँखों के द्वारा सामने के दृश्यों को देख व समझ सकता है।

ज्योतिष के आधार एवं शाखाएँ

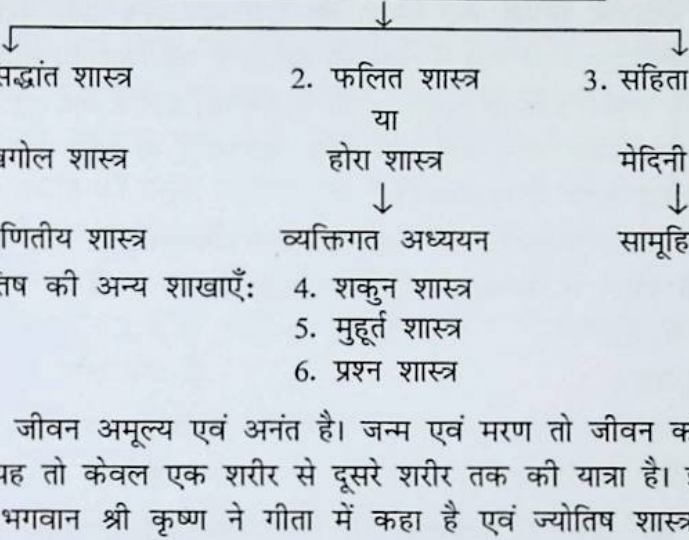

जीवन अमूल्य एवं अनंत है। जन्म एवं मरण तो जीवन की अवस्थाएँ हैं, यह तो केवल एक शरीर से दूसरे शरीर तक की यात्रा है। इसी सिद्धांत को भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है एवं ज्योतिष शास्त्र के प्रणेता भृगुऋषि ने पुनर्जन्म के सिद्धांत का प्रतिपादन वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत किया है। महर्षि भृगु ने पुनर्जन्म के बारे में कहा है कि "भाग्यान्ते पुनः भोग्यर्थे आगतो वसुधातले"। अर्थात् शेष बचे हुए कर्मों एवं उनके फलों को भोगने के लिये यह जीवात्मा पृथ्वी पर पुनः जन्म लेती है। शेष कर्मों एवं भविष्य में किये जाने वाले कर्मों के सम्बन्ध में अगर कोई शास्त्र जानकारी दे सकता है तो वह ज्योतिष शास्त्र ही है।

ज्योतिष शास्त्र का मौलिक सिद्धांत यह है कि कोई भी वस्तु, चाहे स्थावर हो या जंगम, इस विस्तृत ब्रह्मांड में, जहाँ निज शक्ति के अनुसार दूसरे पदार्थों पर अपना प्रभाव डाल रही है वहीं वह स्वयं भी अन्य वस्तुओं से प्रभावित होती है। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु पर ब्रह्मांड का प्रभाव पाया जाता है, इसीलिये "यत पिण्डे तत् ब्रह्मांडे" का सिद्धांत ज्योतिष शास्त्र में स्वीकार किया जाता है।

प्रकृति में जिस प्रकार कोई व्यक्ति जन्म लेता है उस समय के गुण-दोष का प्रभाव उस व्यक्ति के व्यक्तित्व संबंधी गुण-दोष के रूप में उभरने लगता है एवं जीवन पर्यन्त उस जन्मकालीन ब्रह्मांडीय अवस्था के प्रभाव को वह भोगता रहता है। वह ब्रह्मांडीय अवस्था किसी व्यक्ति के जीवन में एक बीज की तरह होती हैं जो अपने गुण-दोष द्वारा उस व्यक्ति के जीवन को प्रभावित

करती है।

परन्तु ब्रह्मांडीय स्थिति की सत्यता को पूर्ण मान लेना सही नहीं है, इसको पूर्ण सत्य मान लिये जाने से भ्रांति हो सकती है एवं जिन परिणामों की संभावनाएँ यह ब्रह्मांडीय स्थिति प्रस्तुत करती है संभवत: प्रत्येक बार वह सत्य नहीं होती अर्थात इसके मध्य कोई अन्य शक्ति अवश्य है या अन्य संभावनाऐं जो इसे प्रभावित करने में सहायक है।

ज्योतिष शास्त्र जीवन क्रम में अनूकुलता एवं प्रतिकूलता के चार कारण मानता है जो जीवन के संचालन में प्रभाव डालते हैं।

1. वंशानुक्रम
2. वातावरण
3. कर्म
4. काल

1. किसी भी व्यक्ति पर सर्वप्रथम एवं इन परिस्थितियों में सबसे प्रथम प्रभाव वंशानुक्रम का पड़ता है। कोई व्यक्ति जिस कुटुम्ब, परिवार, जाति, अथवा गोत्र में जन्म लेता है उस परिवार अथवा, कुटुम्ब के नैसर्गिक गुण-दोष उसके जीवन को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार पिता एवं माता के कुछ नैसर्गिक गुण-दोष सभी संतानों में विद्यमान हो उठते हैं।

2. वातावरण किसी भी जीवन के विकास की नींव होता है, इसी वातावरण के अनुरूप जीव की सोच, क्रियाकलाप करने की क्षमता, विवेक, मानसिक-अवस्था, रहन-सहन और व्यवहार आदि निर्धारित होते हैं। वातावरण का प्रभाव वंशानुक्रम से अधिक गहरा होता है क्योंकि इसी वातावरण के द्वारा व्यक्ति उन अवस्थाओं एवं संभावनाओं को भी प्राप्त कर लेता है जो उसमें जन्मजात नहीं होतीं। यह वातावरण अपने को परिवर्तित करने के साथ मानव-जीवन एवं किसी भी जीव को प्रभावित करे बिना नहीं रहता। जैसा जीव के आस-पास का माहौल होगा वैसा ही जीव का व्यवहार होगा एवं जब वातावरण में परिवर्तन होगा तो उसी के अनुरूप जीव का व्यवहार भी परिवर्तित हो जाएगा।

3. कर्म से अभिप्राय जीव द्वारा किये जाने वाले क्रियाकलापों से है यह केवल शारीरिक ही नहीं अपितु मानसिक रूप से भी होते हैं। अत:

व्यक्ति चाहे शारीरिक रूप से कार्य करे अथवा मानसिक रूप से कार्य करे दोनों ही कर्म समझे जाएंगे। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि कर्म किया जाए परंतु उसके फल के बारे में न सोचा जाय एवं न ही कोई इच्छा की जाय अन्यथा अहम् भाव उत्पन्न हो जाता है जो कर्म को कर्मफल तक लेकर जाता है और बंधन में बांधता है।

प्रकृति की प्रमुख विशेषता यह है कि वह अपने को दोबारा प्रस्तुत करती है अर्थात दोहराती है, जब कोई व्यक्ति उसके अनुरूप सही आचरण करता है तो उसे उसके फलस्वरूप अच्छे कर्मों के फलों की प्राप्ति भी अच्छे रूप में ही होती है एवं नीति विरुद्ध आचरण के फल भी दुखद ही प्राप्त होते हैं।

4. काल इस जगत की सर्वोपरि शक्ति हैं जो निरंतर अपने प्रवाह में चलती रहती है। यह परमात्मा के अलावा किसी के बस में नहीं है। विभिन्न काल का प्रभाव उस जगत की विभिन्न पीढ़ियों पर पड़ता ही रहा है। चाहे वह इतिहास की कोई गाथा हो, आज का वर्तमान हो या भविष्य की सोच हो, इस काल को ज्ञात करने का एक मात्र माध्यम ज्योतिष शास्त्र है। यही शास्त्र काल के प्रमुख अवयवों का निर्धारण करके विभिन्न समयों में होने वाले क्रियाकलापों की जानकारी देने में सक्षम है।

इस काल के दो भाग मुख्य हैं:–

1. अखण्ड काल
2. खण्ड काल

1. **अखण्ड काल:**–इस काल का न तो आदि है न ही अंत। इसलिये इस समष्टिगत काल को अखण्ड काल कहा जाता है। यही अखण्ड काल सृष्टि के निर्माण, एवं प्रलय का कारण है।

2. **खण्ड काल:**–इस खण्ड काल को पहचानने एवं उसका प्रयोग करने हेतु अखण्ड काल को अनेक खण्डों में विभाजित किया जाता है, जो किसी विशेष बिंदु एवं पहचान को लिये होता है उसे खण्ड काल कहा जाता है। यही काल व्यवहारिक पक्ष में प्रयोग किया जाता है। अत: ज्योतिष शास्त्र को "कालाश्रितं ज्ञानम्" कहा जाता है।

इस काल के ज्योतिष शास्त्र में ग्यारह (एकादश) अवयव बताए गये हैं।

1. वर्ष
2. अयन
3. ऋतु
4. मास
5. पक्ष
6. तिथि
7. वार
8. नक्षत्र
9. योग
10. करण
11. लग्न

1. वर्ष

काल की गणना का मुख्य एवं सर्वप्रथम आधार वर्ष है। इसका प्रयोग मुण्डन, विद्यारंभ, उपनयन, विवाह इत्यादि कार्यों में किया जाता है। मुहूर्त एवं ज्योतिष शास्त्र में तीन प्रकार के वर्षों का प्रयोग किया जाता है।

(क) सौर वर्ष
(ख) चन्द्र वर्ष
(ग) ब्रह्मस्पत्य वर्ष

(क) सौर वर्ष

सूर्य के मेष राशि में प्रवेश से मीन राशि के अंत तक का समय सौर वर्ष कहलाता है। जब भी निरायण सूर्य चित्रा नक्षत्र के बिल्कुल विपरीत में होता है तो उसे मेष राशि का प्रथम बिंदु माना जाता है एवं पुनः जब उसी बिंदु पर वापिस आता है तब तक का समय एक सौर वर्ष कहलाता है। सामान्य तौर पर अधिकाशतः सूर्य मेष संक्रांति 14 अप्रैल को होती है। जब कभी सूर्य किसी राशि को पूर्ण करके अगली राशि में प्रवेश करता है तो उसे उस राशि की संक्रांति कहा जाता है।

सूर्य की दैनिक गति लगभग 1° प्रति दिन है। इस प्रकार सूर्य 360° का भचक्र लगभग 365 दिन 6 घंटे 9 मिनट में पूर्ण करता है।

(ख) चन्द्र वर्ष

चन्द्रवर्ष का प्रारंभ चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को होता है। एक चन्द्र मास की अवधि शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से अमावस्या तक 30 तिथियों की होती है जिसकी अवधि लगभग 29.53 दिन होती है। इस प्रकार कुल 12 चन्द्रमासों का एक चन्द्र वर्ष होता है, जिसकी कुल अवधि 29.53×12= 354. 36 दिन की होती है।

चन्द्रमास के नामकरण सायन के अनुसार उस मास में पूर्णिमा को पड़ने वाले नक्षत्र के अनुसार रखे गये हैं। परन्तु आज सायन एवं निरायण में भेद होने के कारण यह नक्षत्र पूर्णिमा के आगे पीछे हो गये हैं।

1. प्रथम मास → चैत्र मास → चित्रा नक्षत्र
2. द्वितिय मास → वैशाख मास → विशाखा नक्षत्र
3. तृतीय मास → ज्येष्ठ मास → ज्येष्ठा नक्षत्र
4. चतुर्थ मास → आषाढ़ मास → पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र
5. पंचम मास → श्रावण मास → श्रवण नक्षत्र
6. षष्टम मास → भाद्रपद मास → पूर्व भाद्रपद नक्षत्र
7. सप्तम मास → अश्विन मास → अश्विनी नक्षत्र
8. अष्टम मास → कार्तिक मास → कृतिका नक्षत्र
9. नवम मास → मार्गशीर्ष मास → मृगशिरा नक्षत्र
10. दशम मास → पौष मास → पुष्य नक्षत्र
11. एकादश मास→ माघ मास → मघा नक्षत्र
12. द्वादश मास → फाल्गुन मास → फाल्गुनी नक्षत्र

(ग) ब्रह्मस्पत्य वर्ष

ब्रह्मस्पत्य वर्ष को संवत्सर भी कहा जाता है। जितने समय में बृहस्पति अपनी मध्यम गति से एक राशि का भोग करता है उतने समय को संवत्सर या ब्रह्मस्पत्य वर्ष कहा जाता है। इसे जोवियन वर्ष (Jovian year) भी कहते हैं। संवत्सर 60 हैं जो अपनी पुनरावृत्ति करते रहते हैं। अतः भचक्र के बृहस्पति जब (12 राशि ×5 भ्रमण)=60 संवत्सर 5 बार भ्रमण करता है तब तक यह 60 संवत्सर अपने नामानुसार जीवों पर अपना प्रभाव डालते हैं तत्पश्चात पुनः यह अपना भ्रमण 60 के बाद 1 से शुरू करते हैं।

60 संवत्सर निम्न है:

1. प्रभव स्वामी ब्रह्मा
2. विभव स्वामी विष्णु
3. शुक्ल स्वामी शिव
4. प्रमोद स्वामी सूर्य
5. प्रजापति स्वामी चंद्रमा
6. अंगिरा स्वामी बुध
7. श्री मुख स्वामी बुध
8. भाव स्वामी गुरु
9. युवा स्वामी शुक्र
10. धाता स्वामी शनि
11. ईश्वर स्वामी राहू
12. बहुधान्य स्वामी केतु
13. प्रमार्थी स्वामी रवि
14. विक्रम स्वामी चंद्रमा
15. वृष स्वामी मंगल
16. चित्रभानु स्वामी बुध
17. सुभानु स्वामी गुरु
18. तारण स्वामी शुक्र
19. पार्थिव स्वामी शनि
20. व्यय स्वामी राहु
21. सर्वजीन स्वामी ब्रह्मा
22. सर्वधारी स्वामी विष्णु
23. विरोधी स्वामी शिव
24. विकृत स्वामी सूर्य
25. खर स्वामी चंद्रमा
26. नंदन स्वामी मंगल
27. विजय स्वामी बुध
28. जय स्वामी गुरु
29. मन्मथ स्वामी शुक्र
30. दुर्मुख स्वामी शनि
31. हेमलम्ब स्वामी राहु
32. विलम्ब स्वामी सूर्य
33. विकारी स्वामी चंद्रमा
34. शर्बरी स्वामी भौम
35. प्लव स्वामी बुध
36. शुभकृत स्वामी गुरु
37. शोभन स्वामी शुक्र
38. क्रोध स्वामी शनि
39. विश्वावसु स्वामी राहु
40. पराभव स्वामी केतु
41. प्लवंग स्वामी ब्रह्म
42. कीलक स्वामी विष्णु
43. सौभ्य स्वामी शिव
44. साधारण स्वामी रवि
45. विरोध स्वामी चंद्रमा
46. परिधावी स्वामी मंगल
47. प्रमादी स्वामी बुध
48. आनन्द स्वामी गुरु
49. राक्षस स्वामी शुक्र
50. नल स्वामी शनि
51. पिंगल स्वामी राहु
52. कालयुक्त स्वामी केतु
53. सिद्धार्थ स्वामी सूर्य
54. रौद्र स्वामी चंद्रमा
55. दुर्भति स्वामी मंगल
56. दुंदुभि स्वामी बुध
57. रुधिरोद्गारी स्वामी गुरु
58. रक्ताक्षी स्वामी शुक्र
59. क्रोध स्वामी शनि
60. क्षय स्वामी राहु

वर्ष की गणना हमारे यहाँ तीन प्रकार से की जाती है।

1. ईस्वी सन्
2. विक्रमी संवत्
3. शक् संवत

1. ईस्वी सन् आज के समय में प्रयोग किये जाने वाले अंग्रेजी वर्ष का ही नाम है जिसे सन् के नाम से बुलाया जाता है ज़ैसे सन् 2012
2. विक्रमी संवत् कलियुग के लगभग 3000 वर्ष व्यतीत होने के बाद उज्जैन में विक्रमादित्य नाम के प्रतापी राजा हुए उन्होंने विदेशी शकों को परास्त कर अपनी विजय के उपलक्ष्य में विक्रमी संवत् चलाया था। यह संवत् क्राइस्ट के जन्म के 57 वर्ष पहले चलाया गया, इसीलिये ईस्वी सन में 57 जोड़ने पर सन् 2012+57= 2069 विक्रमी संवत् आता है।
3. शक संवत् विक्रमादित्य के 135 वर्ष बाद एवं क्राइस्ट के 78 वर्ष बाद भारत में शालिवाहन नामक राजा हुए उन्होंने शक संवत की स्थापना की, इसे साधारण भाषा में शाक या शाके कहा जाता है भारत सरकार ने इसी शक संवत् को अपने राष्ट्रीय तिथि पत्रक में मान्यता दी है।

इस प्रकार ईस्वी सन में से 78 घटाने से एवं विक्रमी संवत् में से 135 घटाने से शक् संवत का पता लगाया जा सकता है।

सन् 2012 - 78 $\Rightarrow$ 1934 शक् संवत्

विक्रमी संवत् 2069-135 $\Rightarrow$ 1934 शक् संवत्

इन तीनों में विक्रमी संवत् चंद्र वर्ष पर तथा शक संवत, ईस्वी सौर वर्ष पर आधारित है।

2. अयन

एक सौर वर्ष में दो अयन होते हैं।

क. उत्तरायण

ख. दक्षिणायन

जब भी सूर्य भचक्र में भ्रमण करते हुए कर्क राशि में प्रवेश करता है (कर्क संक्रांति से) तब दक्षिणायन शुरू होता है एवं धनु राशि की समाप्ति तक दक्षिणायन बना रहता है। धनु राशि की समाप्ति से जैसे ही मकर राशि में (मकर संक्रांति) प्रवेश करता है तो उसे उत्तरायण माना जाता है एवं मिथुन राशि की समाप्ति तक वह उत्तरायण ही रहता है। इस प्रकार सूर्य के विभिन्न

6 राशियों में भचक्र के भ्रमण को उत्तरायण एवं दक्षिणायन कहा गया है। दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि एवं उत्तरायण को देवताओं का दिन कहा जाता है।

मुख्य रूप से आषाढ़ मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को देवशयनी एकादशी के नाम से जाना जाता है जब भगवान विष्णु विश्राम करने चले जाते हैं, जो समय कार्तिक मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा का हरिबोधिनी एकादशी तक चलता है इस शयन समय में हिन्दू समाज बहुत से शुभ कार्य नहीं करते हैं जैसे विवाह संस्कार इत्यादि। हरिबोधिनी एकादशी को देवउठावनी एकादशी भी कहते हैं जिस से सभी शुभ कार्य शुरू किये जाते हैं।

3. ऋतु

प्रत्येक सौर वर्ष में कुल छः ऋतुएँ होती है। इन ऋतुओं का निर्धारण सायन सूर्य के विभिन्न राशियों में भ्रमण पर निर्भर होता है। प्रत्येक ऋतु में 2 मास होते हैं।

सायन सूर्य का राशि भ्रमण	ऋतु का नाम
1. मीन एवं मेष राशि	बसंत ऋतु (Spring)
2. वृष एवं मिथुन राशि	ग्रीष्म ऋतु (Summer)
3. कर्क एवं सिंह राशि	वर्षा ऋतु (Rainy)
4. कन्या एवं तुला राशि	शरद ऋतु (Autumn)
5. वृश्चिक एवं धनु राशि	हेमन्त ऋतु (Winter)
6. मकर एवं कुंभ राशि	शिशिर ऋतु (Winter)

4. मास

हिन्दू ज्योतिष में मुख्य रूप से दो प्रकार के मास का प्रयोग किया जाता है।

1. सौर मास
2. चंद्र मास

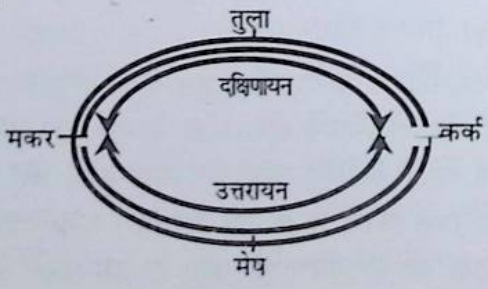

1. सूर्य के किसी राशि में रहने वाली अवधि को सौर मास कहा जाता है। अत: एक सूर्य संक्रांति से अगली सूर्य संक्रांति का समय सौर मास कहा जाता है। इनके नाम भी राशि विशेष स्थिति के अनुसार होते हैं।

1. मीन राशि में स्थित सूर्य–चैत्र मास
2. मेष राशि में स्थित सूर्य–वैशाख मास
3. वृषभ राशि में स्थित सूर्य–ज्येष्ठ मास
4. मिथुन राशि में स्थित सूर्य–आषाढ़ मास
5. कर्क राशि में स्थित सूर्य–श्रावण मास
6. सिंह राशि में स्थित सूर्य–भाद्रपद मास
7. कन्या राशि में स्थित सूर्य–अश्विन मास
8. तुला राशि में स्थित सूर्य–कार्तिक मास
9. वृश्चिक राशि में स्थित सूर्य–मार्गशीर्ष मास
10. धनु राशि में स्थित सूर्य–पौष मास
11. मकर राशि में स्थित सूर्य–माघ मास
12. कुंभ राशि में स्थित सूर्य–फाल्गुन मास

चंद्रमास (Lunar Month) –आज के समय में अधिकतम उपयोग में आने वाला हिन्दू मास चंद्र मास है। यह मास 30 हिन्दू तिथियों से मिलकर बनता है एवं सूर्य से विभिन्न कोणीय दूरी के आधार पर तिथियों का वर्गीकरण किया जाता है।

चंद्र मास का प्रारंभ प्रत्येक मास की प्रतिपदा को होता है। यह दो प्रकार से माना जाता है।

1. अमान्त चंद्र मास
2. पूर्णिमान्त चंद्र मास

चंद्रमास के अंतर्गत शुक्ल पक्ष की 14 तिथियाँ, तत्पश्चात पूर्णिमा उसके उपरान्त कृष्णपक्ष की 14 तिथियाँ तत्पश्चात् अमावस्या एवं पुन: शुक्ल पक्ष क्रमबद्ध रूप में चलता है। यह चंद्र मास चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से शुरू होता है।

अमान्त चंद्र मास से अभिप्राय ऐसे चंद्र मास से है जो किसी भी मास में शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से प्रारंभ होकर 30 तिथियाँ पूर्ण करते हुए अमावस्या तक मास पूर्ण करे तत्पश्चात् नव मास प्रारंभ होगा।

पूर्णिमांत चंद्रमास से अभिप्राय ऐसे चंद्रमास से है जो कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से आरंभ होकर मास की 30 तिथियाँ पूर्ण करते हुए पूर्णिमा को पूरा होता है एवं पुनः कृष्णपक्ष प्रतिपदा से नव-मास की पुनरावृत्ति करता है।

इस प्रकार एक चंद्र मास की अवधि 29 दिन 44 मिनट 2.9 सैंकेड की होती है। इनका नामकरण सायन के अनुसार 0° अयनांश के अनुसार मास में पड़ने वाली पूर्णिमा के दिन रहने वाले नक्षत्र के आधार पर रखा गया है। इनके प्राचीन वैदिक नाम भी प्रचलित हैं।

मास का नाम	पूर्णिमा को पड़ने वाला नक्षत्र	वैदिक नाम
चैत्र मास	चित्रा नक्षत्र	मधु
वैशाख मास	विशाखा नक्षत्र	माधव
ज्येष्ठ मास	ज्येष्ठा नक्षत्र	शुक्र
आषाढ़ मास	पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र	शुचि
श्रावण मास	श्रवण नक्षत्र	नभ
भाद्रपद मास	पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र	नभस
अश्विन मास	अश्विनी नक्षत्र	ईश
कार्तिक मास	कृत्तिका नक्षत्र	उर्जा
मार्गशीर्ष मास	मृगशिरा नक्षत्र	सेहा
पौष मास	पुष्य नक्षत्र	साहस्य
माघ मास	मघा नक्षत्र	तप
फाल्गुन मास	पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र	तपस्या

अधिक मास

चंद्रमास 30 तिथियों से मिलकर बनता है जिसकी अवधि लगभग (29.33 दिन) 29 दिन 44 मिनट होती है। ऐसे 12 चंद्र मासों से मिलकर एक चंद्रवर्ष बनता है जिसकी अवधि 29.53×12 = 354.37 दिन होती है। एवं एक सौर वर्ष 365.25 दिन का होता है जिसके कारण प्रतिवर्ष 10 दिन लगभग चंद्रमास पीछे हो जाता है इस समय अंतराल की पूर्ति के लिये प्रत्येक तीन वर्ष में एक अधिक मास रखने का प्रावधान है जिससे खगोलीय गणना सुचारू रूप से चल सके।

सामान्य तौर पर एक अमावस्या से अगली अमावस्या तक एक सूर्य

संक्रांति अवश्य होती है। इसी मास को अधिक मास कहा जाता है। ऐसे मास में सबसे पहले उस मास का सामान्य कृष्ण पक्ष होगा उसके बाद अधिक शुक्ल पक्ष उसके बाद अधिक कृष्ण पक्ष ततपश्चात् सामान्य शुक्ल पक्ष उस मास में पड़ेगा। इस अधिक मास को मल मास या पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है।

अधिक मास जानने की सरल विधिः प्रत्येक वर्ष माघ मास की अमावस्या पर ध्यान केंद्रित करें यदि यह अमावस्या 14 जनवरी से 24 जनवरी के बीच पड़े तो आगामी वर्ष में अधिक मास अवश्य होगा।

किस मास में अधिक मास हो सकता हैः यहाँ अंग्रेजी तिथियों के अनुसार संभावित चंद्रमास के नाम बताए गये हैं, जिसमें अधिक मास हो सकता है। यह अंग्रेजी तिथि माघ मास की अमावस्या के दिन की है जो अनुमानित है।

जनवरी 14	फाल्गुन मास
जनवरी 15–16	वैशाख मास
जनवरी 16–19	ज्येष्ठ मास
जनवरी 18–20	आषाढ़ मास
जनवरी 19–22	सावन मास
जनवरी 22–24	भाद्रपद मास
जनवरी 23–24	अश्विन मास

क्षय मास

जब एक चंद्रमास में (एक अमावस्या से अगली अमावस्या के बीच) दो सूर्य संक्रांति होती है तो यह क्षय मास कहलाता है। सामान्य रूप से क्षय मास बहुत कम होता है।

पक्ष विचार

एक चंद्र मास में दो पक्ष होते हैं।

1. शुक्ल पक्ष
2. कृष्ण पक्ष

1. **शुक्ल पक्षः** अमावस्या के दिन चंद्रमा पूर्ण रूप से काला होता है। तत्पश्चात् चंद्रमा अपनी दैनिक गति से बढ़ना शुरू करता है एवं पूर्णिमा को

15 तिथि पश्चात् अपने पूर्ण प्रकाशित रूप में आ जाता है, इस पक्ष को ही जो अमावस्या की समाप्ति एवं प्रतिपदा की प्रारंभिक अवस्था से शुरू होता है और पूर्णिमा तक का समय शुक्ल पक्ष कहलाता है।

2. **कृष्ण पक्ष:** पूर्णिमा की समाप्ति के बाद पुन: चंद्रमा की अवस्था घटने लगती है और अमावस्या को चंद्रमा पूर्ण रूप से काला (क्षीण अवस्था में) होता है, इसी 15 तिथि के पक्ष को कृष्ण पक्ष कहा जाता है।

पक्ष का विचार हिन्दू शास्त्रों में चंद्रमा की शक्ति का पता लगाने के लिये किया जाता है। अमावस्या का चंद्रमा निर्बली एवं पूर्णिमा का चंद्रमा पूर्णबली माना जाता है। इस चंद्रमा की शक्ति के मूल्यांकन के तीन प्रमुख प्रकार हैं जो चंद्रमा की शक्ति का मूल्यांकन करते हैं।

प्रथम मत: इस मत के अनुसार शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से पूर्णिमा तक चंद्रमा को बली माना जाता है एवं कृष्णपक्ष प्रतिपदा से अमावस्या तक चंद्रमा को निर्बल माना जाता है।

द्वितीय मत: इस मत के अनुसार शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक चंद्रमा को बली माना जाता है एवं कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक अशुभ एवं निर्बली चंद्र माना जाता है।

तृतीय मत: इस मत के अनुसार 30 तिथियों को तीन भागों में विभाजित किया गया है:

1. शुक्लपक्ष दशमी से कृष्ण पक्ष पंचमी तक चंद्रमा (बली)
2. कृष्ण पक्ष दशमी से शुक्ल पक्ष पंचमी तक चंद्रमा (क्षीण)
3. शुक्ल पक्ष षष्ठी से दशमी तक एवं कृष्ण पक्ष षष्ठी से दशमी तक सामान्य बली

आज के समय में अधिकांश प्रयोग तृतीय मत का ही किया जाता है।

तिथि विचार

सूर्य एवं चंद्रमा के मध्य रहने वाली विभिन्न कोणीय दूरी का नाम ही तिथि है। यह तिथियाँ चंद्रमास के दोनों पक्षों को मिलाकर 30 होती है। जिसमें 15 तिथियाँ शुक्ल पक्ष में होती है एवं 15 तिथियाँ कृष्ण पक्ष में होती है। जिस समय सूर्य एवं चंद्रमा का भोगांश एक समान होता है वह बिंदु अमावस्या का अंतिम बिंदु होता है, जैसे ही चंद्रमा का भोगांश सूर्य से अधिक होता है तो शुक्ल पक्ष प्रतिपदा का आरंभ हो जाता है। सूर्य की औसत दैनिक गति 1° लगभग है एवं चंद्रमा की औसत दैनिक गति लगभग 13° है अत: दोनों के बीच एक दिन में लगभग 12° का अंतर रहता है एवं कुल चंद्रमा पृथ्वी का घूर्णन करते हुए 360° के भचक्र में 30 तिथियों का निर्माण करता है अत: 360÷12°=30 तिथि

अत: एक तिथि का मान 12° होता है।

$$\text{तिथि} = \frac{\text{चंद्रमा का भोगांश} - \text{सूर्य का भोगांश}}{12^\circ}$$

इस प्रकार हमें 0 से लेकर 29 से 30 तक के अंक प्राप्त होंगे, वही तिथि होगी। 15 से अभिप्राय पूर्णिमा है, 19.12 से अभिप्राय कृष्ण पक्ष की पंचमी चल रही है एवं 29.53 से अभिप्राय अमावस्या चल रही है।

सूर्य तथा चंद्र के भोगांशों में अंतर द्वारा तिथि निर्माण

शुक्लपक्ष	तिथि	स्वामी
0°-12°	प्रतिपदा	अग्नि
12°-24°	द्वितिया	ब्रह्मा
24°-36°	तृतीया	गौरी
36°-48°	चतुर्थी	गणेश
48°-60°	पंचमी	नाग
60°-72°	षष्ठी	कार्त्तिकेय
72°-84°	सप्तमी	सूर्य
84°-96°	अष्टमी	शिव
96°-108°	नवमी	दुर्गा
108°-120°	दशमी	यम

कृष्णपक्ष	तिथि	स्वामी
180°-192°	प्रतिपदा	अग्नि
192°-204°	द्वितिया	ब्रह्मा
204°-216°	तृतीया	गौरी
216°-228°	चतुर्थी	गणेश
228°-240°	पंचमी	नाग
240°-252°	षष्ठी	कार्त्तिकेय
252°-264°	सप्तमी	सूर्य
264°-276°	अष्टमी	शिव
276°-288°	नवमी	दुर्गा
288°-300°	दशमी	यम

शुक्लपक्ष	तिथि	स्वामी
120°-132°	एकादशी	विश्वदेव
132°-144°	द्वादशी	विष्णु
144°-156°	त्रयोदशी	कामदेव
156°-168°	चतुर्दशी	शिव
168°-180°	पूर्णिमा	चंद्रमा

कृष्णपक्ष	तिथि	स्वामी
300°-312°	एकदशी	विश्वदेव
312°-324°	द्वादशी	विष्णु
324°-336°	त्रयोदशी	कामदेव
336°-348°	चतुर्दशी	शिव
348°-360°	अमावस्या	पितृदेव

इन सभी तिथियों का पाँच भागों में वर्गीकरण किया गया है जो अपनी विशेषताओं से युक्त हैं।

नंदा तिथि	1,6,11	(प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी)
भद्रा तिथि	2,7,12	(द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी)
जया तिथि	3,8,13	(तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी)
रिक्ता तिथि	4,9,14	(चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी)
पूर्णा तिथि	15, 10, 15, 30	(पंचमी, दशमी, पूर्णिमा या अमावस्या)

हिन्दू शास्त्रों में सामान्य रूप से किसी भी दिन वही तिथि मानी जाती है जो किसी दिन सूर्योदय के समय होती है, सूर्योदय के समय उदित तिथि को पूरे दिन के लिये तिथि माना जाता है चाहे वह तिथि सूर्योदय के 5 मिनट बाद ही क्यों न समाप्त हो रही हो, यह वैष्णव मत है।

शाक्त अर्थात् शक्ति के साधक इस सूर्योदय कालीन तिथि को न मानकर उस तिथि को कार्य में लेते है जो उस समय विशेष में हो न कि सूर्योदयकालीन तिथि। सामान्य तौर पर पितृ पूजा इत्यादि कार्यों में इसी तिथि का प्रयोग किया जाता है।

तिथि क्षय

जब कोई तिथि एक सूर्योदय के बाद उदय हो एवं अगले सूर्योदय से पहले समाप्त हो जाय तो उस अवस्था में वह तिथि सूर्योदय के समय नहीं रह पाती उस अवस्था को तिथि क्षय कहा जाता है, इस समय को सभी शुभ कार्यों के लिये त्यागना चाहिये।

तिथि वृद्धि

जब कोई तिथि एक सूर्योदय से पहले उदय होकर अगले सूर्योदय के बाद समाप्त हो तो वह तिथि दो सूर्योदय देख लेती है, इस अवस्था को तिथि वृद्धि कहा जाता है।

विभिन्न होरा के स्वामी

होरा संख्या	रविवार (सूर्यवार)	सोमवार (चंद्रवार)	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
1.	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	वृहस्पति	शुक्र	शनि
2.	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
3.	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल
4.	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य
5.	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र
6.	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध
7.	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा
8.	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
9.	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
10.	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल
11.	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य
12.	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र
13.	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध
14.	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा
15.	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	वृहस्पति	शुक्र	शनि
16.	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
17.	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल
18.	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य
19.	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र
20.	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध
21.	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा
22.	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
23.	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
24.	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्रमा	मंगल

वार एवं होरा चक्र

किसी भी वार के स्वामी से अभिप्राय उस वार के सूर्योदय के समय प्रथम होरा के स्वामी से है। एक दिन में 24 होरा होती हैं जिसमें से 12 होरा के स्वामी दिनमान के 12 भागों के स्वामी होते हैं एवं आगे के 12 होरा के स्वामी रात्रिमान के 12 भागों के स्वामी होते हैं। इस प्रकार दिन की होरा का समय काल दिनमान को 12 से भाग करके प्राप्त होता है तथा रात्रि के होरा समय काल रात्रिमान को 12 से भाग करके प्राप्त होता है।

इन होरा के स्वामी की गणना सूर्य से आरंभ होती है, एवं आगे की गणना विभिन्न ग्रहों की पृथ्वी से दूरी के आधार पर होती है।

पृथ्वी←चंद्रमा←बुध←शुक्र सूर्य←मंगल←बृहस्पति←शनि

होरा संख्या	1,8,15,22	प्रथम होरा का स्वामी
होरा संख्या	2,9,16,23	द्वितीय होरा का स्वामी
होरा संख्या	3,10,17,24	तृतीय होरा का स्वामी
होरा संख्या	4,11,18	चतुर्थ होरा का स्वामी
होरा संख्या	5,12,19	पंचम होरा का स्वामी
होरा संख्या	6,13,20	षष्टम होरा का स्वामी
होरा संख्या	7,14,21	सप्तम होरा का स्वामी

नक्षत्र

ज्योतिष शास्त्र में सभी विद्वानों ने भचक्र की सूक्ष्म से सूक्ष्म इकाई तक पहुँचने एवं उसे समझने का प्रयास किया है, इस क्रम में उन्होंने इस भचक्र को पहले 12 भागों में बाँटा जिसे 12 राशियों में परिवर्तित किया। पुनः उन्होंने इसे 27 भागों में बांटा जिसे नक्षत्र का नाम दिया गया। इस प्रकार विभिन्न 12 राशियों में 27 नक्षत्रों का वर्गीकरण एवं विभाजन किया गया। तत्पश्चात् इस नक्षत्र की सूक्ष्म इकाई तक पहुँचने के लिये पुनः प्रत्येक नक्षत्र को चार-चार भागों में बाँटा जिसे नक्षत्र पद का नाम दिया गया है।

भचक्र का मान =360°

नक्षत्रों की संख्या=27

एक नक्षत्र का मान= 360÷27=13°20

एक नक्षत्र पद का मान=3°-20' × 4 पद=13°20' एक नक्षत्र

नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	स्वामी
अश्विनी	मघा	मूल	केतु
भरणी	पूर्वाफाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा	शुक्र
कृत्तिका	उत्तराफाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा	सूर्य
रोहिणी	हस्त	श्रवण	चंद्र
मृगशिरा	चित्रा	धनिष्ठा	मंगल
आर्द्रा	स्वाति	शतभिषा	राहु
पुनर्वसु	विशाखा	पूर्वाभाद्रपद	बृहस्पति
पुष्य	अनुराधा	उत्तराभाद्रपद	शनि
आश्लेषा	ज्येष्ठा	रेवती	बुध

नक्षत्र का विभिन्न 12 राशियों में वर्गीकरण		
	राशि	नक्षत्र
1.	मेष (0^{s}) (0°-30°) स्वामी मंगल	अश्विनी-4 पद-(0°-13°20′)-स्वामी केतु भरणी-4 पद-(13°20′-26°40′)-स्वामी शुक्र कृत्तिका-1 पद-(26°40′-30°)-स्वामी सूर्य
2.	वृषभ (1^{s})(30°-60°)-स्वामी शुक्र	कृत्तिका-3 पद-(0°-10°)-स्वामी सूर्य रोहिणी-4 पद-(10°-23°20′)-स्वामी चंद्र मृगशिरा-2 पद- (23°20′-30°)-स्वामी मंगल
3.	मिथुन (2^{s}) (60°-90°)-स्वामी बुध	मृगशिरा-2 पद-(0°-6°40′)-स्वामी मंगल आर्द्रा-4 पद- (6°40′-20°)-स्वामी राहु पुनर्वसु-3 पद- (20°-30°)-स्वामी बृहस्पति
4.	कर्क (3^{s}) (90°-120°)-स्वामी चंद्रमा	पुनर्वसु-1 पद- (0°-3°20′)-स्वामी बृहस्पति पुष्य-4 पद-(3°20′-16°40′)-स्वामी शनि आश्लेषा-4 पद-(16°40′-30°)-स्वामी बुध
5.	सिंह (4^{s})-(120°-150°)-स्वामी सूर्य	मघा-4 पद-(0°-13°20′)-स्वामी केतु पू०फाल्गुनी-4 पद-(13°20′-26°-40′)-स्वामी शुक्र उ०फाल्गुनी-1 पद-(26°40′-30°)-स्वामी सूर्य
6.	कन्या (5^{s}) (150°-180°)-स्वामी बुध	उत्तराफाल्गुनी-3 पद-(0°-10°)-स्वामी सूर्य हस्त-4 पद-(10°-23°20′)-स्वामी चंद्र चित्रा-2 पद-(23°20′-30°)-स्वामी मंगल
7.	तुला (6^{s}) (180°-210°)-स्वामी शुक्र	चित्रा-2 पद-(0° - 6°40′)-स्वामी मंगल स्वाति-4 पद-(6°40′-20°)-स्वामी राहु

8.	वृश्चिक (7ˢ)(210°-240°)-स्वामी मंगल	विशाखा-3 पद-(20°-30°)-स्वामी बृहस्पति विशाखा-1 पद-(0°-3°20′)-स्वामी बृहस्पति अनुराधा-4 पद-(3°20′-16°40′)-स्वामी शनि ज्येष्ठा-4 पद-(16°40′-30°)-स्वामी बुध
9.	धनु (8ˢ)-(240°-270°)-स्वामी बृहस्पति	मूल-4 पद-(0°-13°20′)-स्वामी केतु पूर्वाषाढ़ा-4 पद-(13°20′-26°40′)-स्वामी शुक्र उत्तराषाढ़ा-1 पद-(26°40′-30°)-स्वामी सूर्य
10.	मकर (9ˢ)-(270°-300°)-स्वामी शनि	उत्तराषाढ़ा-3 पद-(0°-10°)-स्वामी सूर्य श्रवण-4 पद-(10°-23°20′)-स्वामी चंद्र घनिष्ठा-2 पद-(23°20′-30°)-स्वामी मंगल
11.	कुंभ (10ˢ)-(300°-330°)-स्वामी शनि	घनिष्ठा-2 पद-(0°-6°40′)-स्वामी मंगल शतभिषा-4 पद-(6°40′-20′)-स्वामी राहु पूर्वाभाद्रपद-3 पद-(20°-30°)-स्वामी बृहस्पति
12.	मीन (11ˢ)-(330°-360°)-स्वामी बृहस्पति	पूर्वाभाद्रपद-1 पद-(0°-3°20′)-स्वामी बृहस्पति उत्तरामाद्रपद-4 पद-(3°20′-16°40′)-स्वामी शनि रेवती-4 पद-(16°40′-30°)-स्वामी बुध

अभिजीत नक्षत्रः

विद्वानों ने एक 28वें नक्षत्र की भी बात कही है जो अत्यधिक शुभ माना गया है। यह अभिजीत नक्षत्र उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का चतुर्थ पद एवं श्रवण नक्षत्र की प्रथम 4 घटी से मिलकर बना है। अतः यह मकर राशि में 6°40′ से 10°53′20″ तक होता है।

करण

तिथि के आधे भाग को करण कहा जाता है। इस प्रकार प्रत्येक तिथि में दो करण होते हैं एवं प्रत्येक चंद्र मास में 60 करण होते हैं। वास्तव में करण 11 होते हैं। इनके अन्तर्गत 4 स्थिर करण एवं 7 चर करण होते हैं।

चर करण

1. बव
2. बालव
3. कौलव
4. तैतिल
5. गर
6. वणिज
7. विष्टि

स्थिर करण

1. शकुनि (कृष्णपक्ष चतुर्दशी का दूसरा करण)
2. चतुष्पद (अमावस्या का प्रथम करण)
3. नाग (अमावस्या का द्वितिया करण)
4. किंस्तुघ्न (शुक्लपक्ष प्रतिपदा का प्रथम करण)

सूत्रः- $\frac{\text{चंद्र का भोगांश} - \text{सूर्य का भोगांश}}{6^{\circ}}$

करण तालिका

	शुक्लपक्ष तिथि	प्रथम करण	द्वितिय करण
1.	प्रतिपदा	किंतुघ्न	बव
2.	द्वितिया	बालव	कौलव
3.	तृतीया	तैतिल	गर
4.	चतुर्थी	वणिज	विष्टि

5.	पंचमी	बव	वालव
6.	षष्टी	कौलव	तैतिल
7.	सप्तमी	गर	वणिज
8.	अष्टमी	विष्टि	बव
9.	नवमी	बालव	कौलव
10.	दशमी	तैतिल	गर
11.	एकादशी	वणिज	विष्टि
12.	द्वादशी	बव	वालव
13.	त्रयोदशी	कौलव	तैतिल
14.	चतुर्दशी	गर	वाणिज
15.	पूर्णिमा	विष्टि	बव
कृष्णपक्ष तिथि		**प्रथम करण**	**द्वितीय करण**
16.	प्रतिपदा	बालव	कौलव
17.	द्वितिया	तैतिल	गर
18.	तृतीया	वणिज	विष्टि
19.	चतुर्थी	बव	बालव
20.	पंचमी	कौलव	तैतिल
21.	षष्ठी	गर	वणिज
22.	सप्तमी	विष्टि	बव
23.	अष्टमी	बालव	कौलव
24.	नवमी	तैतिल	गर
25.	दशमी	वणिज	विष्टि
26.	एकादशी	बव	बालव
27.	द्वादशी	कौलव	तैतिल
28.	त्रयोदशी	गर	वणिज
29.	चतुर्दशी	विष्टि	शकुनि
30.	अमावस्या	चतुष्पद	नाग

योग

योग का निर्माण सूर्य एवं चंद्रमा का एक दूसरे से स्थिति के अनुसार होता है। यह 27 प्रकार के होते हैं।

सूत्रः- $\frac{\text{चंद्र का भोगांश} + \text{सूर्य का भोगांश}}{13°20, (800)}$

1. विष्कुम्भ	10. गण्ड	19. परिघ
2. प्रीति	11. वृद्धि	20. शिव
3. आयुष्मान	12. ध्रुव	21. सिद्ध
4. सौभाग्य	13. व्याघात	22. साध्य
5. शोभन	14. हर्षण	23. शुभ
6. अतिगड	15. वज्र	24. शुक्ल
7. सुकर्मा	16. सिद्धि	25. ब्रह्म
8. धृति	17. व्यतिपात	26. ऐन्द्र
9. शूल	18. वरीयान	27. वैद्यृति

इसमें विष्कुम्भ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वज्र व्यतिपात, परिघ, वैधृति योग अशुभ माने जाते हैं।

लग्न

किसी तिथि विशेष, स्थान विशेष एवं समय विशेष पर उस स्थान के पूर्व क्षितिज पर उदय होने वाली राशि को उस समय की लग्न राशि कहते हैं। किसी भी समय पर क्रांतिवृत्त (राशिचक्र) का जो बिंदु पूर्व क्षितिज का स्पर्श करता है, उस समय उस राशि अंश आदि को लग्न कहते हैं एवं एक दिन (अहोरात्र) में 12 लग्नों की आवृत्ति होती है।

"यत्र लग्न मपमण्डलं कुजे तदुगृहाधमिह लग्नमुच्यते"-सिद्धांत शिरोमणि

ज्योतिष शास्त्र में लग्न से आत्मा, मन, शरीर इत्यादि मूलभूत अवस्थाओं को देखने का प्रावधान है जो किसी भी धातु, मूल, जीव इत्यादि की वास्तविक अवस्था एवं भविष्य कथन कहने में सहायक सिद्ध होता है।

किसी भी जीव की निर्माण प्रक्रिया एक जटिल संरचना है। पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, पांच कर्मेन्द्रियाँ, पांच प्राण तथा मन एवं बुद्धि इन 17 तत्वों से मिलकर किसी जीव के सूक्ष्म शरीर का निर्माण होता है एवं इस अवस्था का पता लग्न से ही लगाया जा सकता है क्योंकि किसी भी धातु-मूल-जीव के जीवन में लग्न ही समस्त 12 भावों, 12 राशियों एवं विभिन्न कारकों की अवस्था निश्चित करके वात-पित्त-कफ प्रवृत्ति, राजसिक, सात्विक एवं तामसिक प्रवृत्ति, भौतिक, अवस्था, मानसिक अवस्था का निर्धारण करने में सहायक है।

इस प्रकार लग्न ही सम्पूर्ण शरीर की अवस्था, संचालन, व्यवस्थितिकरण करने में सहायक सिद्ध होता है। जिस प्रकार शरीर की दसों इन्द्रियाँ मन के आधीन है एवं उसके अनुसार ही अपना निहित कार्य करती हैं, उसी प्रकार काल के दसों अवयव लग्न के अनुसार ही अपना शुभ-अशुभ फल देते हैं।

किसी स्थिर बिंदु के चारों ओर उपस्थित ब्रह्मांणीय वृत्त को भचक्र कहा जाता है। इस भचक्र में विभिन्न तारों के समूह एंव 12 राशियाँ विराजमान हैं।

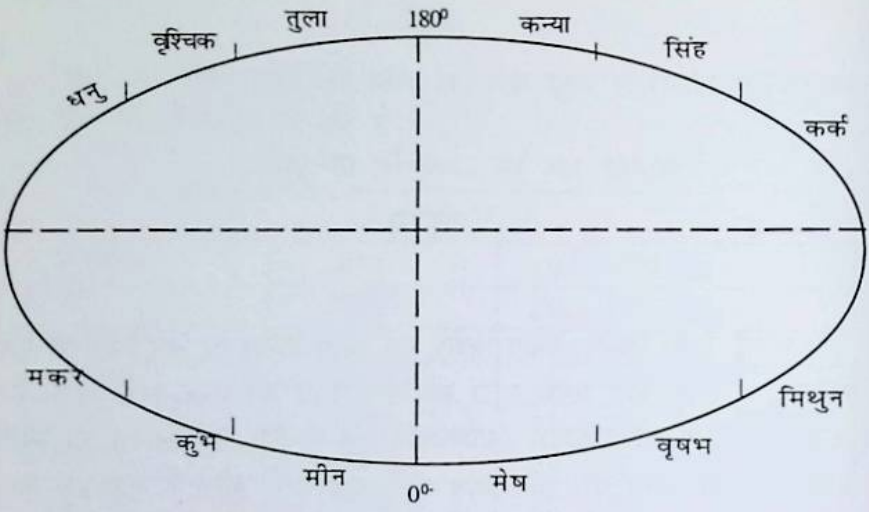

भचक्र

इस भचक्र का 0°बिंदु, मेष के प्रथम बिंदु को माना गया है। यह 0° तब माना जाता है जब यह चित्रा नक्षत्र के ठीक विपरित दिशा में हो, वही मेष का प्रथम बिंदु है। इस प्रकार प्रत्येक राशि का मान 30° है और 12 राशियों का सम्पूर्ण भचक्र ब्रह्मांण्ड में उपस्थित है।

भचक्र में मकर राशि से मिथुन राशि तक सूर्य का भ्रमण उत्तरायण समय माना जाता है, एवं कर्क से धनु राशि तक सूर्य संचार के समय को दक्षिणायन माना जाता है। विभिन्न राशियों का भोग्य काल अलग-अलग है परंतु मकर से मिथुन पर्यन्त राशियों को (लघु) राशियाँ एवं कर्क से धनु पर्यन्त राशियों को दीर्घ राशियाँ कहा जाता है।

प्रत्येक दिन भचक्र को बारह राशियाँ 24 (चौबीस) घटें में पूर्ण करती है। इस प्रकार प्रत्येक राशि का औसतन मान लगभग दो (2) घंटे का होता है परन्तु विभिन्न राशियों का भोग्य काल, अलग-अलग होता है इसी कारण कुछ राशियाँ दीर्घ एवं कुछ लघु राशियाँ कहलाती है। इन राशियों का भोग्य काल समय एवं स्थान के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। सामान्यत: विभिन्न राशियों का भोग्य काल निम्नलिखित है।

राशि	भोग्य काल
मेष	1 घंटा 20 मिनट

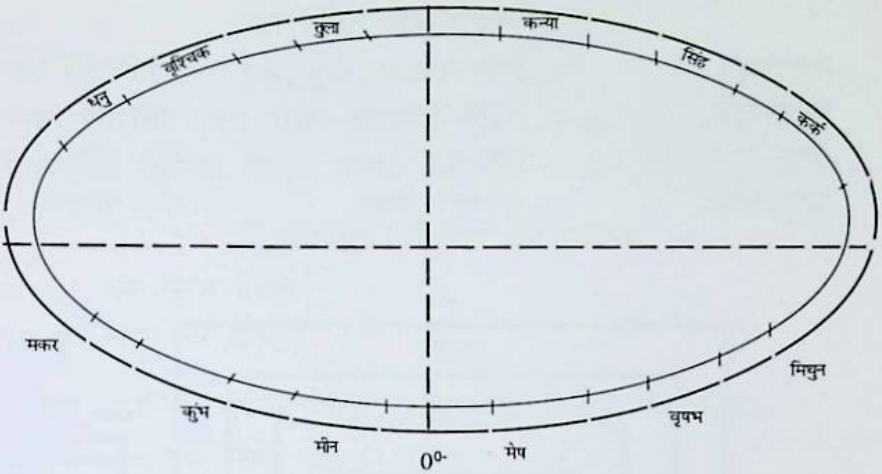

वृषभ	1 घंटा 36 मिनट
मिथुन	1 घंटा 50 मिनट
कर्क	2 घंटा 19 मिनट
सिंह	2 घंटा 34 मिनट
कन्या	2 घंटा 21 मिनट
तुला	2 घंटा 21 मिनट
वृश्चिक	2 घंटा 34 मिनट
धनु	2 घंटा 19 मिनट
मकर	1 घंटा 50 मिनट
कुम्भ	1 घंटा 36 मिनट
मीन	1 घंटा 20 मिनट

निम्नलिखित राशियों का भोग्य काल लगभग समान होता है।

मेष एवं मीन	1 घंटा 20 मिनट
वृषभ एवं कुम्भ	1 घंटा 36 मिनट
मिथुन एवं मकर	1 घंटा 50 मिनट
कर्क एवं धनु	2 घंटा 19 मिनट
सिंह एवं वृश्चिक	2 घंटा 34 मिनट
कन्या एवं तुला	2 घंटा 21 मिनट

राशियों के स्वामी

मेष-मंगल	सिंह-सूर्य	धनु-बृहस्पति
वृषभ-शुक्र	कन्या-बुध	मकर-शनि
मिथुन-बुध	तुला-शुक्र	कुंभ-शनि
कर्क-चंद्रमा	वृश्चिक-मंगल	मीन-बृहस्पति

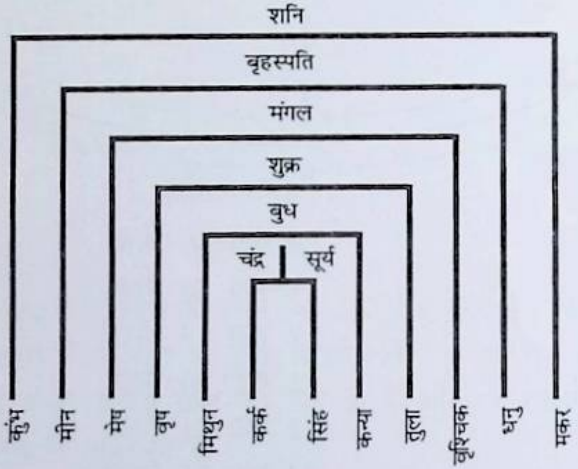

ग्रहों की दिशाओं का स्वामित्व

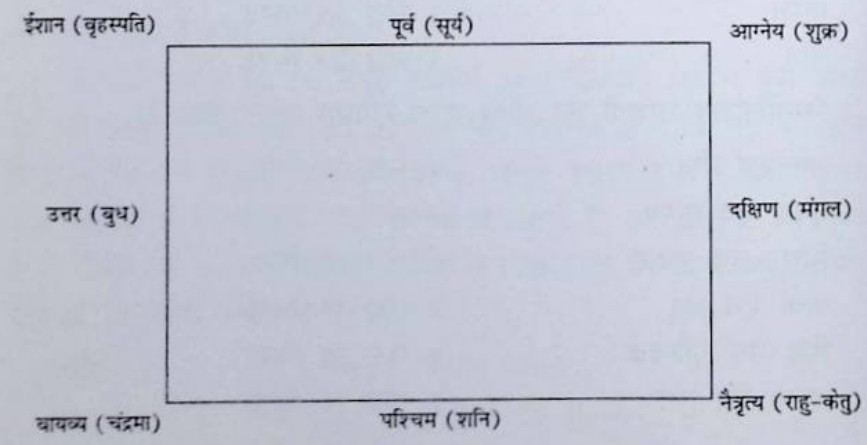

चर स्थिर, द्विस्वभाव राशियाँ

चर राशियाँ: मेष, कर्क, तुला, मकर (1,4,7,10)
स्थिर राशियाँ: वृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुंभ (2,5,8,11)
द्विस्वभाव राशियाँ: मिथुन, कन्या, धनु, मीन (3,6,9,12)

द्विस्वभाव राशियों का प्रभाव

0^{0}-15^{0} तक स्थिर प्रभाव
15^{0}-30^{0} तक चर प्रभाव

अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल राशियों का वर्गीकरण

अग्नि तत्त्व: मेष, सिंह, धनु (1,5,9)
पृथ्वी तत्त्व: वृषभ, कन्या, मकर (2,6,10)
वायु तत्त्व: मिथुन, तुला, कुंभ (3,7,11)
जल तत्त्व: कर्क, वृश्चिक, मीन (4,8,12)

शीर्षोदय, पृष्ठोदय एवं उभयोदय राशियों में वर्गीकरण

शीर्षोदय राशियाँ: मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ (3,5, 6,7,8,11)
पृष्ठोदय राशियाँ तत्त्व: मेष, वृषभ, कर्क, धनु, मकर (1,2,4,9,10)
उभयोदय राशियाँ: मीन (12)

सम एवं विषम राशियाँ

सम राशियाँ: वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन (2,4,6, 8,10,12)
विषम राशियाँ: मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ (1,3,5,7,9,11)

दिवाबली एवं रात्रिबली राशियाँ

दिवाबली राशियाँ सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ, मीन (5,6,7,8,11,12)
रात्रिबली राशियाँ मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, धनु मकर (1,2,3,4,9, और 10)

वात, पित्त, कफ प्रवृत्ति संबंधी वर्गीकरण

पित्त प्रभावी राशियाँ मेष, सिंह, धनु
त्रिदोष प्रभावी राशियाँ वृषभ, कन्या, मकर

वात प्रभावी राशियाँ: मिथुन, तुला, कुंभ
कफ प्रभावी राशियाँ: कर्क, वृश्चिक, मीन

वर्ण संबंधी राशि राशियाँ

क्षत्रिय राशियाँ मेष, सिंह, धनु
वैश्य राशियाँ वृषभ, कन्या, मकर
शूद्र राशियाँ मिथुन, तुला, कुंभ
ब्राह्मण राशियाँ कर्क, वृश्चिक, मीन

क्रूर एवं सौम्य राशियाँ

क्रूर राशियाँ: मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ
सौम्य राशियाँ: वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन

राशियों की दिशाएँ

पूर्व दिशा: मेष, सिंह, धनु
दक्षिण दिशा: वृषभ, कन्या, मकर
पश्चिम दिशा: मिथुन, तुला, कुंभ
उत्तर दिशा: कर्क, वृश्चिक, मीन

धातु, मूल एवं जीव राशियाँ

धातु राशियाँ: मेष, कर्क, तुला, मकर
मूल राशियाँ: वृषभ, सिंह, वृश्चिक कुंभ
जीव राशियाँ: मिथुन, कन्या, धनु, मीन

राशियों की आकृति

1. मेष मेडा (भेड़)
2. वृषभ-बैल
3. मिथुन-जुडवाँ युवा
4. कर्क-केकड़ा
5. सिंह-शेर
6. कन्या-कुंवारी कन्या
7. तुला-तराजू
8. वृश्चिक-बिच्छू
9. धनु-धनुष लिये मनुष्य+घोडे का शरीर

(0°-15°) (15°-30°)

10. मकर–हाथीका शरीर मनुष्य+मगरमच्छ
(0°-15°) (15°-30°)
11. कुंभ–घड़ा
12. मीन–एक दूसरे के विपरीत दो मछलियाँ

मनुष्य, जलचर, चतुष्पाद, कीट राशियाँ में वर्गीकरण

मनुष्य राशियाँ: मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध (0°-15°), कुंभ
चतुष्पाद राशियाँ: मेष, वृषभ, सिंह, धनु का उत्तरार्ध, मकर का पूर्वार्ध
कीट राशियाँ:–वृश्चिक
जलचर राशियाँ: कर्क, मकर का उत्तरार्ध, मीन

शुभ एवं अशुभ स्वामित्व वाली राशियाँ

शुभ स्वामित्व: वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन
अशुभ स्वामित्व: मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुंभ

चमकीली एवं मलिन राशियाँ

चमकीला: मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, कुंभ, मीन
मलिन: मेष, वृषभ, सिंह, कन्या, धनु, मकर

सात्विक, राजसिक एवं तामसिक राशियाँ

सात्विक राशियाँ : कर्क, सिंह, धनु, मीन
राजसिक राशियाँ वृषभ, तुला, मिथुन, कन्या
तामसिक राशियाँ: मेष, वृश्चिक, मकर, कुंभ

राशियों की विभिन्न प्रकृति

निरंकुश एवं सत्तावादी मेष, वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला (1,2,3,6,7)
दार्शनिक और लोकोपकारी: कर्क, सिंह, धनु, मीन (4,5,9,12)
निश्चयात्मक और ओजस्वी: वृश्चिक (8)
आलसी और अकर्मण्य: मकर, कुंभ (10,11)

राशियों के रंग

मेष–लाल
वृषभ–सफेद

मिथुन-हरा
कर्क-गुलाबी
सिंह-श्वेताभ (सुनहरा)
कन्या-रंग-बिरंगा
तुला-काला
वृश्चिक-केसरी
धनु-सुनहरा
मकर-विविध रंग
कुंभ-भूरा
मीन-सफेद

राशियों की दृष्टियाँ

ऊर्ध्वमुखी राशियाँ: सूर्य से पीछे छोड़ी गई राशियों एवं उसके त्रिकोण
अधोमुखी राशियाँ: सूर्य द्वारा ग्रहीत राशियाँ एवं उसके त्रिकोण
तिर्यकमुखी राशियाँ: सूर्य से अगली (आगे की) राशि एवं उसके त्रिकोण
अग्रमुखी राशियाँ: सूर्य से तीसरी राशि एवं उसके त्रिकोण

राशियों के अंग्रेजी नाम एवं फारसी नाम

1.	मेष-Aries	हामल
2.	वृष-Taurus	सूर
3.	मिथुन-Gemini	जोक्षा
4.	कर्क-Cancer	सर्तान
5.	सिंह-Leo	असद्
6.	कन्या-Virgo	सुबला
7.	तुला-Libra	मीक्षान
8.	वृश्चिक-Scorpio	अक्रब
9.	धनु-Sagittarius	कौस
10.	मकर-Capricorn	जदी
11.	कुंभ-Aquarius	दलु
12.	मीन-Pisces	हूत

नक्षत्र एवं पद अनुसार जन्म नामकरण तालिका

1.	अश्विनी-चू, चे, चो, ला	15.	स्वाति-रू, रे, रो, ता
2.	भरणी-ली, लू, ले, लो	16.	विशाखा-ती, तू, ते, तो
3.	कृत्तिका-आ, इ, उ, ए	17.	अनुराधा-ना, नी, नू, ने
4.	रोहिणी-ओ, वा, वी, वू	18.	ज्येष्ठा-नो, या, यी, यू
5.	मृगशिरा-वे, वो, का की	19.	मूल-ये, यो, भा, भी
6.	आर्द्रा-कू, घ, ङ, छ	20.	पूर्वाषाढ़ा-भू, धा, फा, ढ़ा
7.	पुनर्वसु-के, को, हा, ही	21.	उत्तराषाढ़ा-भे, भो, जा जी
8.	पुष्य-हू, हे, हो डा	22.	अभिजीत-जू, जे, जो ख
9.	आश्लेषा-डी, डू, डे, डो	23.	श्रवण-खी, खू, खे, खो
10.	मघा-मा, मी, मू, मे	24.	धनिष्ठा-गा, गी, गू, गे
11.	पूर्वाफाल्गुनी-मो, टा, टी, टू	25.	शतभिषा-गो, सा, सी, सू
12.	उत्तराफाल्गुनी-टे, टो, पा, पी	26.	पूर्वाभाद्रपद-से, सो, दा, दी
13.	हस्त-पू, ष, ण, ठ	27.	उत्तराभाद्रपद-दू, थ, झ, ञ
14.	चित्रा-पे, पो, रा, री	28.	रेवती-दे, दो, चा, ची

राशियों के निवास स्थान

1. **मेषः**—घास के मैदान, नहर, झील, वन के बीच, रत्न एवं खनिज का स्थान, खानें, सर्प की बांबी और जंगल।
2. **वृषभः**—कृषि भूमि, गौशालाएँ, वन व्यापारिक स्थान, बड़े कस्बे, शहर, सुंदर स्थान और जलपूर्ण-खेत।
3. **मिथुनः**—कस्बे, शहर, बाग, जुआघर, पूजा स्थल, विलास-भवन, नृत्य-कक्ष, सोफा, पलंग, विश्राम-ग्रह और शयन-कक्ष।
4. **कर्कः**—जल, वन, पानी के निकटतम स्थान, तालाब, नदियों में निवास और जलपूर्ण दरारें।
5. **सिंहः**—पर्वत, गुफाएँ, वन, शिकारियों का स्थान, ऋषियों का स्थान और जंगल।
6. **कन्याः**—चारागाह, पानी के निकट, खाद्य-फसल, विलास-कक्ष, दुकान के निकट, मंदिर, अन्न वाली भूमि और पर्वत।
7. **तुलाः**—व्यापारिक स्थल, बाजारों का स्थान, मूल्यवान वस्तु, व्यापार की वस्तुएँ, दुकानें, वैश्य का घर और थियेटर।

8. **वृश्चिक:** छिद्र वाले स्थान, कोठरियाँ, बिल, चट्टानी क्षेत्र और जलीय स्थान के पास की गुफाएँ।
9. **धनु:** हाथियों एवं घोड़ों का स्थान, राजा का निवास-स्थान, युद्ध-क्षेत्र, किला, विश्रामालय और सैन्य छावनी अधिकारी का स्थान।
10. **मकर:** वन, नदियाँ, जलपूर्ण स्थान, कुम्हारों का स्थान, जनजातियों का समूह और जलपूर्ण जंगल।
11. **कुंभ:** पानी, जुआघर, कुम्हारों का स्थान और मिट्टी का स्थान।
12. **मीन:** गहरी गुफाएँ, पानी, मंदिर, तीर्थस्थल और नदी का स्थान।

राशि अनुसार शारीरिक अंग

1. **मेष:** सिर, दिमाग, क्रेनियम हड्डी (खोपड़ी की हड्डी)।
2. **वृषभ:** चेहरा, गला, ग्रास नली, कंठ नली, चेहरे की हड्डियाँ।
3. **मिथुन:** कंधे, गर्दन, हाथ, बांह, उपरी सीना, श्वास नली, गर्दन की हड्डियाँ, कंधे, हंसली (कॉलर बोन), हाथ एवं बाँह की हड्डियाँ।
4. **कर्क:** छाती, वक्षस्थल, फेफड़े, दिल, पसलियाँ, छाती की हड्डियाँ।
5. **सिंह:** उपरी उदर, दिल से नाभि तक का स्थान, छोटी आंत, रीढ़ की हड्डी, यकृत, जिगर पित्ताशय, प्लीहा (तिल्ली), अग्नाशय, दिल से रीढ़ तक पिछला हिस्सा, पेट।
6. **कन्या:** नाभि प्रदेश, निचला उदर, बड़ी आंत, निचली रीढ़ की हड्डी।
7. **तुला:** कटि प्रदेश, गर्भाशय, अंडाशय, अण्डकोश, कटि प्रदेश की हड्डी।
8. **वृश्चिक:** वाह्य जननांग, जननांग, गुदा प्रदेश।
9. **धनु:** कूल्हे, जांघें, धमनी तंत्र, कूल्हे एवं जांघों की हड्डियाँ।
10. **मकर:** घुटने, पट्ठे (रांग), जोड वाली हड्डियाँ, घुटने की टोपी और सभी जोड़।
11. **कुंभ:** टांगे टखना, रक्त संचार, पिण्डली, टखने की हड्डी
12. **मीन:** पैर, पंजे, लसिका तंत्र, पैर एवं पंजे की हड्डी

ग्रहों के साकेतिक चिह्न

1. सूर्य ☉
2. चंद्र ☾
3. मंगल ♂
4. बुध ☿

5. बृहस्पति ♃
6. शुक्र ♀
7. शनि ♄
8. राहु ☊
9. केतु ☋

राशियों के सांकेतिक चिह्न

1. मेष ♈
2. वृष ♉
3. मिथुन ♊
4. कर्क ♋
5. सिंह ♌
6. कन्या ♍
7. तुला ♎
8. वृश्चिक ♏
9. धनु ♐
10. मकर ♑
11. कुंभ ♒
12. मीन ♓

कलात्मक, तकनीकी, अर्धतकनीकी राशियाँ

कलात्मक राशियाँ कर्क, वृषभ, तुला
अर्धतकनीकी राशियाँ: धनु, मीन, मिथुन, कन्या
तकनीकी राशियाँ: सिंह, मेष, वृश्चिक, मकर, कुंभ

परस्पर केन्द्र राशियाँ

मेष, कर्क, तुला, मकर (1,4,7,10)

वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ (2,5,8,11)
मिथुन, कन्या, धनु, मीन (3,6,9,12)

परस्पर त्रिकोण राशियाँ

मेष, सिंह, धनु (1,5,9)
वृषभ, कन्या, मकर (2,6,10)
मिथुन, तुला, कुंभ (3,7,11)
कर्क, वृश्चिक, मीन (4,8,12)

ग्रहों के मंत्र एंव जप संख्या

1. सूर्य-7000 ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रौ सः सूर्याय नमः, ऊँ घृणिः सूर्याय नमः
2. चंद्रमा-11000 ऊँ श्राँ, श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः, ऊँ सों सौभाय नमः
3. मंगल-10,000 ऊँ क्राँ, क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः, ऊँ भौं भौमाय नमः
4. बुध-9000 ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः, ऊँ बुं बुधाय नमः
5. गुरु-19000 ऊँ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः, ऊँ बृं बृहस्पतये नमः
6. शुक्र-16000 ऊँ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः, ऊँ शुं शुक्राय नमः
7. शनि-23000 ऊँ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चरायः नमः, ऊँ शं शनैश्चराय नमः
8. राहु-18000 ऊँ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः, ऊँ रां राहवे नमः
9. केतु-17000 ऊ स्राँ स्रीं स्रौं सः केतवे नमः, ऊँ कें केतवे नमः

कलियुग में इस संख्या की चार गुणा जाप का प्रावधान है।

ग्रहों की वात-पित्त एवं कफ प्रकृति

1. सूर्य-पित्त प्रकृत्ति
2. चंद्रमा-कफ प्रकृत्ति
3. मंगल-पित्त प्रकृत्ति
4. बुध- वात, पित्त, कफ त्रिदोष
5. बृहस्पति-कफ प्रकृति
6. शुक्र-कफ एवं वात प्रकृति
7. शनि-वात प्रकृति, कफ प्रकृति
8. राहु-वात प्रकृति
9. केतु-वात एवं कफ प्रकृति

ग्रहों के वर्ण

1. सूर्य-क्षत्रिय
2. चंद्रमा-वैश्य
3. मंगल-क्षत्रिय
4. बुध-वैश्य
5. बृहस्पति-ब्राह्मण
6. शुक्र-ब्राह्मण
7. शनि-शूद्र
8. राहु-म्लेच्छ (विदेशी, विजातिय)

सात्विक, राजसिक एवं तामसिक ग्रह

1. सात्विक ग्रह-सूर्य, चंद्र, बृहस्पति
2. राजसिक ग्रह-बुध, शुक्र
3. तामसिक ग्रह-मंगल, शनि, राहु, केतु

कुंडली में बाधक ग्रह

1. मेष, कर्क, तुला, मकर (चर लग्न) में एकादश भाव का स्वामी बाधक ग्रह होता है।
2. वृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुंभ (स्थिर लग्न) में नवम भाव का स्वामी बाधक ग्रह होता है।
3. मिथुन, कन्या, धनु, मीन (द्विस्वभाव लग्न) में सप्तम भाव का स्वामी बाधक ग्रह होता है।

ग्रहों के लिंग

1. सूर्य-पुरुष
2. चंद्रमा- स्त्री
3. मंगल-पुरुष
4. बुध-नपुंसक
5. बृहस्पति-पुरुष
6. शुक्र-स्त्रीलिंग
7. शनि-नपुंसक
8. राहु-नपुंसक/स्त्री

ग्रहों के स्वाद

1. सूर्य-कड़वा
2. चंद्रमा-नमकीन
3. मंगल-तिक्त (तीखा)
4. बुध-खट्टा-मीठा
5. बृहस्पति-मीठा
6. शुक्र-खट्टा
7. शनि-कसैला
8. राहु-विषाक्त

ग्रहों के निवास स्थान

1. सूर्य -शिव, मंदिर, खुला स्थान।
2. चंद्रमा -पानी के स्थान, शहद या शराब के स्थान, जड़ी-बूटी का स्थान।
3. मंगल -अग्नि स्थान, युद्ध भूमि, चोर-मलेच्छों का स्थान।
4. बुध -पार्क, बाग, उपवन, विद्वानों का स्थान, आमोद-प्रमोद का स्थान।
5. बृहस्पति -खजाने एवं वित्त के स्थान, पीपल का वृक्ष, देव-ब्राह्मणों के रहने का स्थान।
6. शुक्र -शयन कक्ष, वेश्याओं का घर, नाचने का स्थान।
7. शनि -गन्दी जगह, अपवित्र स्थान, देवता-विशेष का मंदिर।
8. राहु/केतु - ऐसे स्थान जहाँ कोई जाता न हो, बंद कोठरियां, छेद वाले बंद कमरे, दीमकों का स्थान, जहाँ साँप रहते हों।

मृत्यु भाग तालिका

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लग्न	1	9	22	22	25	2	4	23	18	20	24	10
सूर्य	20	9	12	6	8	24	16	17	22	2	3	23
चंद्रमा	26	12	13	25	24	11	26	14	13	25	5	12
मंगल	19	28	25	23	29	28	14	21	2	15	11	6
बुध	15	14	13	12	8	18	20	10	21	22	7	5

बृहस्पति	19	29	12	27	6	4	13	10	17	11	15	28
शुक्र	28	15	11	17	10	13	4	6	27	12	29	19
शनि	10	4	7	9	12	16	3	18	28	14	13	15
राहु	14	13	12	11	24	23	22	21	10	20	18	8
केतु	8	18	20	10	21	22	23	24	11	12	13	14
मांदी	23	24	11	12	13	14	8	18	20	10	21	22

ग्रहों के शासकीय पद

1. सूर्य- राजा
2. चंद्रमा- रानी
3. मंगल- सेनापति
4. बुध- राजकुमार
5. बृहस्पति- प्रधानमंत्री
6. शुक्र- मंत्री
7. शनि- नौकर
8. राहु-केतु -सैनिक

ग्रहों के अन्न

1. सूर्य- गेहूं
2. चंद्रमा- चावल
3. मंगल- मसूर
4. बुध- हरा चना, मूंग
5. गुरु- चने की दाल
6. शुक्र- चना, श्याम मूंग, श्वेत चावल
7. शनि- काला अन्न, काले तिल
8. राहु- काला चना, उड़द
9. केतु- कुल्थी

ग्रहों के धातु, रत्न एवं उपरत्न

1. सूर्य- ताँबा, स्वर्ण, माणिक्य, लाडली
2. चंद्रमा- चाँदी, मोती, मून-स्टोन, काँसा
3. मंगल- ताँबा, मूंगा, लाल हकीक, पीतल, लाल पत्थर
4. बुध- स्वर्ण, पन्ना, करकेतन, सीप, सीसा
5. बृहस्पति- स्वर्ण, पुखराज, सुनहला
6. शुक्र- चाँदी, हीरा, तुरमली
7. शनि- लोहा, नीलम, लाजवर्त
8. राहु- लोहा, गोमेद, हाथी दांत, हड्डियां
9. केतु- चाँदी, लहसुनिया

तिथि गंडांत

पूर्ण तिथियों की (5,10,15,30) अंतिम एक घटी (24 मिनट) और नंदा तिथियों की प्रारंभिक एक घटी (24 मिनट) का समय तिथि गंडांत कहलाता है।

नक्षत्र गंडांत

आश्लेषा, ज्येष्ठा, एवं रेवती नक्षत्रों की अंतिम दो घटी (48 मिनट) एवं अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्रों की प्रारंभिक 2 घटी (48 मिनट) नक्षत्र गंडांत कहलाता है।

मतान्तर से प्रारंभिक एवं अतिम नक्षत्र के पद गंडांत में आते हैं।

राशि गंडांत

मेष, सिंह, धनु राशि की प्रारंभिक एक घटी (मतान्तर से 3°-20' का एक पद) प्रारंभिक एवं कर्क, वृश्चिक, मीन राशि की अंतिम एक घटी (24 मिनट) (मतान्तर से 3°-20' का एक अंतिम)

राशि गंडांत में आता है। मतांतर से दो राशियों के बीच अंतिम और आरम्भिक एक-एक पद (3°-20') का लग्न हो तो लग्न गंडांत मानते हैं।

दिन-रात्रि गंडांत

रात्रि समाप्त हो रही हो और दिन आरंभ हो रहा हो

दिन समाप्त हो रहा हो और रात्रि आरंभ हो रही हो

इसमें संधि समय के पहले 12 मिनट एंव बाद के 12 मिनट का समय

गंडांत का माना जाता है।

ग्रहों के प्रतिनिधि तत्व

1. सूर्य- अग्नि तत्व
2. चंद्रमा- जल तत्व
3. मंगल- अग्नि तत्व
4. बुध- पृथ्वी तत्व
5. बृहस्पति- आकाश तत्व
6. शुक्र- जल तत्व
7. शनि- वायु

ग्रहों से संबंधित देवता

1. सूर्य- शिव, सुब्रामण्यम, गणेश
2. चंद्रमा- दुर्गा, चामुण्डा, काली, पार्वती
3. मंगल- भैरव, हनुमान, सुब्रामण्यम, काली
4. बुध- विष्णु एवं उनके अवतार कृष्ण
5. बृहस्पति- विष्णु
6. शुक्र- लक्ष्मी, अन्नपूर्णा, यक्षिणी, इन्द्र की पत्नी शुचि
7. शनि- शिव, अय्याप्पा, ब्रह्मा
8. राहु नाग देव
9. केतु- गणेश

ग्रह एवं ऋतु

1. सूर्य- ग्रीष्म ऋतु
2. चंद्रमा- वर्षा ऋतु
3. मंगल- ग्रीष्म ऋतु
4. बुध- शरद ऋतु
5. बृहस्पति- हेमन्त ऋतु
6. शुक्र- वसंत ऋतु
7. शनि- शिशिर ऋतु

ग्रहों के विभिन्न अवतार

1. मत्स्य अवतार- केतु (अंश अवतार)
2. कूर्मावतार- शनि (अंश अवतार)
3. वराह अवतार- राहु (पूर्ण अवतार)
4. नृसिंह अवतार- मंगल (पूर्ण अवतार)
5. वामन अवतार- गुरु (अंश अवतार)
6. परशुराम अवतार- शुक्र (अंश अवतार)
7. रामावतार- सूर्य (पूर्णवतार)
8. कृष्णावतार- चंद्रमा (पूर्ण अवतार)
9. बुद्धावतार- बुध (अंश अवतार)

दशा छिद्र

विंशोत्तरी के अनुसार किसी भी महादशा की अंतिम अंतर्दशा एवं प्रारंभिक अंतर्दशा दशा छिद्र कहलाती है। इस प्रकार 1. सू-शु, 2. चं-सू 3. मं-चं, 4. राहु-मंग 5. बृ-रा, 6. श-वृ 7. बु-श 8. के-बु 9. शु-के 10. सू-सू 11. चं-च 12. मं-मं 13. रा-रा 14. बृ-बृ 15. श-श 16. बु-बु 17. के-के 18. शु-शु सभी दशाएं दशा छिद्र कहलाती है।

छिद्र ग्रह और छिद्र दशा

छिद्र ग्रह

1. अष्टम भाव का स्वामी
2. अष्टम भाव में स्थित ग्रह
3. ग्रह जिनकी अष्टम भाव में दृष्टि हो
4. खर द्रेष्काण का स्वामी (22वें द्रेष्काण का स्वामी)
5. अष्टम भाव के साथ संयुक्त ग्रह
6. चंद्रमा से 64वें नवांश का स्वामी
7. अष्टमेश का अतिशत्रु

इन सभी ग्रहों की दशा "छिद्र दशा" कहलाती है।

ग्रहों के रंग एवं वस्त्र

1. सूर्य- गहरा लाल केसरिया
2. चंद्रमा- सफेद
3. मंगल- लाल एवं जला हुआ
4. बुध- हरा
5. बृहस्पति- सुनहरा
6. शुक्र- नीला
7. शनि- काला, पुराना, फटा हुआ
8. राहु/केतु- चितकबरा, काला, जिसमें छेद है

ग्रहों की दृष्टि

1. सूर्य- ऊर्ध्व दृष्टि
2. चंद्रमा- सम एवं अग्र दृष्टि
3. मंगल- ऊर्ध्व दृष्टि
4. बुध- तिर्यक दृष्टि
5. बृहस्पति- सम दृष्टि, अग्र दृष्टि
6. शुक्र- तिर्यक दृष्टि
7. शनि- अधोमुखी दृष्टि
8. राहु- अधोमुखी दृष्टि

ग्रहों की दैनिक गति लगभग

1. सूर्य- 1° डिग्री प्रतिदिन
2. चंद्र- 13 से 15 डिग्री प्रतिदिन
3. मंगल- 30 से 45 मिनट प्रतिदिन
4. बुध- 65 से 100 मिनट प्रतिदिन
5. बृहस्पति- 5 से 15 मिनट प्रतिदिन
6. शुक्र- 62 से 82 मिनट प्रतिदिन
7. शनि- 2 मिनट प्रतिदिन
8. राहु-केतु- 3 मिनट प्रतिदिन

ग्रहों से संबंधित वृक्ष

1. सूर्य- मजबूत एवं लम्बे वृक्ष
2. चंद्रमा- वृक्ष जिसका पंक तरल है, पेड़ जिसमें द्रव्य निकलता है
3. मंगल- कांटेदार पेड़, झाड़ियाँ, कटीले वृक्ष
4. बुध- पेड़ जिसमें फल न आएं
5. बृहस्पति- खाने योग्य फलदार वृक्ष
6. शुक्र- फूल वाले पेड़, विसर्पी लता
7. शनि- अनुपयोगी वृक्ष, कंटीले वृक्ष
8. राहु-केतु- सूखे पेड़, झाड़ियाँ, सूखे वृक्षों के पुंज

ग्रहों की काल अवधि

1. सूर्य-एक अयन या छः मास
2. चंद्रमा-एक मुहूर्त (48 मिनट)
3. मंगल-दिन और रात (अहोरात्र)
4. बुध-एक ऋतु या दो मास
5. बृहस्पति-एक मास
6. शुक्र-एक पक्ष (15 दिन)
7. शनि-एक वर्ष
8. राहु- 8 मास
9. केतु-3 मास

ग्रहों के अंग्रेजी नाम एवं फारसी नाम

1.	सूर्य	Sun	आफताब
2.	चंद्रमा	Moon	माहताव
3.	मंगल	Mars	मिर्रीख
4.	बुध	Mercury	उतारूद
5.	बृहस्पति	Jupiter	मुश्तरी
6.	शुक्र	Venus	जुहरा
7.	शनि	Saturn	जुहल
8.	राहु	Dragon's Head	रास
9.	केतु	Dragon's Tail	जनव

ग्रहों के शारीरिक अंग

1. सूर्य- पेट, हड्डियाँ, दांई आँख, शरीर की बनावट, आरोग्य, हृदय, मेरुदण्ड।,
2. चंद्रमा- दिल, फेफड़े, दिमाग, बांई आँख, शरीर में द्रव्य, छाती, स्तन।
3. मंगल- रक्त, मज्जा, सिर, रक्त में कणिकाएँ, गुर्दे, गर्भाशय की वाह्य संरचना, पट्ठों की पुष्टता, अग्नि।
4. बुध- नाडी तंत्र, चमडी, नाक, रीढ़ की हड्डी, गला, दिमाग का अग्रज भाग, जीभ, चंचलता, केश, फुफ्फुस।
5. बृहस्पति- यकृत, पित्त की थैली, तिल्ली जांघें, शरीर की वसा, स्मरण शक्ति, उदर, धमनी, सिरा, कान।
6. शुक्र- चेहरा, आँखों की दृष्टि, शुक्र संबंधी द्रव, जननांग, उत्सर्जन तंत्र, आंसुओं की ग्रंथि, दाढ़ी, कपोल, स्वरध्वनि, ग्रंथियों का स्राव, नालिका-विहिन ग्रंथियाँ, चेहरे का तेज, इम्यून-System, दाँत।
7. शनि- टांग, सभी प्रकार के जोड़, कमजोरी, दांत, घुटना, श्लेष्मा, स्नायु तंत्र, प्लीहा।
8. राहु- पैर, श्वास प्रक्रिया।
9. केतु- पेट, पैर।

भाव अनुसार शारीरिक अंग

1. प्रथम भावः- सिर, दिमाग, सामान्य शरीर, बाल चमड़ी।
2. द्वितिय भावः- चेहरा, दांई आंख, कान, जीभ, मुंख, नाक, ग्रास नली, स्वर तंत्रिका।
3. तृतीय भावः- दाहिना कान, गर्दन, कंधे, वायु नली, हंसली, हाथ बांह।
4. चतुर्थ भावः- छाती, फेफड़े दिल।
5. पंचम भावः- ऊपरी उदर, पित्त की थैली, यकृत, पाचक नली, प्लीहा, छोटी आँत।
6. षष्टम भावः- बड़ी आँत, अपैन्डिक्स, गुर्दे।
7. सप्तम भावः- गर्भाशय, बच्चेदानी, अंडाशय, अण्डकोश, वृषण, प्रोस्टेट ग्रंथी एंव, मूत्र नली।

8. अष्टम भाव:- बाह्य जननांग, काम संबंधी मुख्य अंग, शुक्रसंबंधी नालिकाएँ, मल द्वार।
9. नवम भाव: कूल्हे, जांघे, धमनी तंत्र।
10. दशम भाव:- घुटने, घुटने की टोपी, घुटने एवं टोपी के बीच का भाग Popitalfossa
11. एकादश भाव:- टांगे, पिंडलियाँ, टखने और बायाँ कान
12. द्वादश भाव:- पैर, बाँयी आंख

नक्षत्रों की दिशा, तारा संख्या, फारसी नाम, स्वामी

	नक्षत्र	दिशा	तारा संख्या	फारसी नाम	स्वामी
1.	अश्विनी	पूर्व	3	शरती	अश्विनी कुमार
2.	भरणी	पूर्व	3	बर्तान	यम
3.	कृत्तिका	पूर्व	6	सुरैया	अग्नि
4.	रोहिणी	पूर्व	5	दवरा	ब्रह्मा
5.	मृगशिरा	पूर्व	3	हकुआ	चन्द्रमा
6.	आर्द्रा	दक्षिण-पूर्व	1	हनक्षा	रुद्र
7.	पुनर्वसु	दक्षिण-पूर्व	4	सिरा	अदिति
8.	पुष्य	दक्षिण पूर्व	3	नसरा	बृहस्पति
9.	आश्लेषा	दक्षिण	5	तुर्फा	सर्प
10.	मघा	दक्षिण	5	जवहा	पितृ
11.	पूर्वाफाल्गुनी	दक्षिण	2	झाहेरा	भग
12.	उत्तराफाल्गुनी	दक्षिण	2	सफा	अर्यमा
13.	हस्त	दक्षिण-पश्चिम	5	अवा	सूर्य
14.	चित्रा	दक्षिण-पश्चिम	1	सभाक	विश्वकर्मा
15.	स्वाति	पश्चिम	1	गफरा	वायु
16.	विशाखा	पश्चिम	4	झवा	इन्द्र+अग्नि

17.	अनुराधा	पश्चिम	4	अकली	मित्र
18.	ज्येष्ठा	पश्चिम	3	कल्ब	इन्द्र
19.	मूल	पश्चिम	11	सोला	राक्षस
20.	पूर्वाषाढ़ा	उत्तर पश्चिम	2	नआ	जल
21.	उत्तराषाढ़ा	उत्तर	2	वलदा	विश्वदेव
22.	अभिजीत	उत्तर	3	-	ब्रह्मा
23.	श्रवण	उत्तर	3	वला	विष्णु
24.	धनिष्ठा	उत्तर	4	सोऊद	वसु
25.	शतभिषा	उत्तर	100	अश्वा	वरुण
26.	पूर्वाभाद्रपद	उत्तर	2	मुकई	अजचरण
27.	उत्तराभाद्रपद	उत्तर	2	मुअख	अहिर्बुध्न्य
28.	रेवती	उत्तर	32	रिशा	पूषा

नक्षत्रों की आकृति, तत्त्व, शारीरिक अंग

नक्षत्र	आकृति	तत्त्व	शारीरिक अंग
1. अश्विनी	घोड़े का मुख	पृथ्वी	दोनों घुटने
2. भरणी	योनि	पृथ्वी	सिर
3. कृत्तिका	चाकू	पृथ्वी	कमर
4. रोहिणी	बैलगाड़ी	पृथ्वी	टांगें
5. मृगशिरा	हिरण का मुख	पृथ्वी	आंखें
6. आर्द्रा	मणि	जल	बाल
7. पुनर्वसु	घर	जल	अंगुलियां सभी
8. पुष्य	तीर	जल	मुख
9. आश्लेषा	पहिया	जल	नाखून
10. मघा	घर	जल	नाक
11. पूर्वाफाल्गुनी	मंच	जल	जननांग
12. उत्तराफाल्गुनी	चारपाई	जल	जननांग

13. हस्त	हाथ	तेज (अग्नि)	हाथ
14. चित्रा	मोती	अग्नि	माथा
15. स्वाति	मूंगा	अग्नि	दाँत
16. विशाखा	तोरण	अग्नि	दोनों भुजाएँ
17. अनुराधा	पिण्ड	अग्नि	दिल
18. ज्येष्ठा	कुण्डल	वायु	जीभ
19. मूल	मंच	वायु	पैर
20. पूर्वाषाढ़ा	हाथी दांत	वायु	जांघें
21. उत्तराषाढ़ा	मंच	वायु	जांघें
22. अभिजीत	त्रिकोण	–	–
23. श्रवण	वामन	वायु	कान
24. धनिष्ठा	मृदंग	आकाश	पीठ
25. शतभिषा	वृत्त	आकाश	गाल
26. पूर्वाभाद्रपद	मंच	आकाश	बगलें
27. उत्तराभाद्रपद	जुड़वा	आकाश	बंगले
28. रेवती	मृदंग	आकाश	कांख (हाथ के बीच)

ग्रहों का दृष्टि चक्र

	पूर्ण दृष्टि	त्रि-पाद दृष्टि	आधी दृष्टि	एकपाद-चौथाई
सूर्य	7, वीं	4, 8वीं	5,9	3,10
चंद्रमा	7, वीं	4,8	5,9	3,10
मंगल	4, 7, 8वीं	–	5,9	3,10
बुध	7वीं	4,8	5,9	3,10
वृहस्पति	5,7,9 वीं	4,8	–	3,10
शुक्र	7वीं	4,8	5,9	3, 10
शनि	3,7,10वीं	4,8	5,9	–

ग्रहों की दिग्बली एवं निर्बली अवस्था

	दिग्वली	निर्बली
सूर्य	दशम भाव	चतुर्थ भाव
चंद्रमा	चतुर्थ भाव	दशम भाव
मंगल	दशम भाव	चतुर्थ भाव
बुध	लग्न (प्रथम) भाव	सप्तम भाव
बृहस्पति	लग्न (प्रथम) भाव	सप्तम भाव
शुक्र	चतुर्थ भाव	दशम भाव
शनि	सप्तम भाव	लग्न भाव

ग्रहों के उच्च अंश

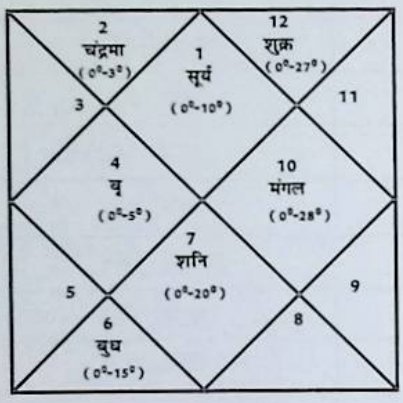

सूर्य	मेष राशि	(0°-10°)
चंद्रमा	वृष राशि	(0°-03°)
मंगल	मकर राशि	(0°-28°)
बुध	कन्या राशि	(0°-15°)
बृहस्पति	कर्क राशि	(0°-5°)
शुक्र	मीन राशि	(0°-27°)
शनि	तुला राशि	(0°-20°)
राहु	(वृष/मिथुन)	
केतु	(वृश्चिक/धनु)	

ग्रहों के नीच अंश

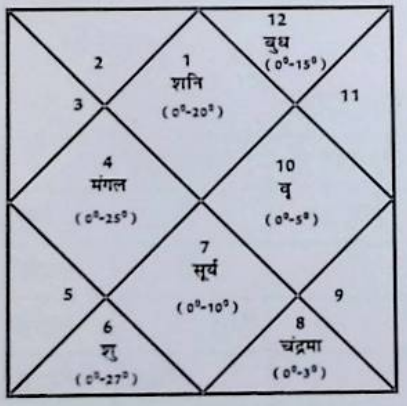

सूर्य	तुला राशि	(0°-10°)
चंद्रमा	वृश्चिक राशि	(0°-03°)
मंगल	कर्क राशि	(0°-28°)
बुध	मीन राशि	(0°-15°)
बृहस्पति	मकर राशि	(0°-05°)
शुक्र	कन्या राशि	(0°-27°)
शनि	मेष राशि	(0°-20°)
राहु	(वृश्चिक/धनु)	
केतु	(वृषभ/मिथुन)	

ग्रहों की मूल त्रिकोण राशि एवं अंश

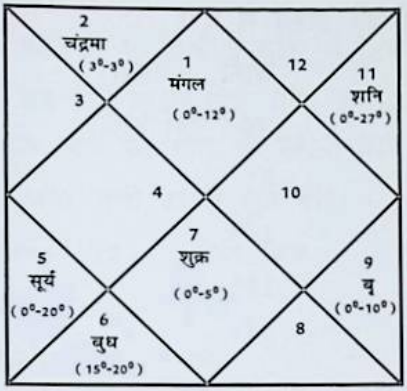

सूर्य	सिंह राशि	(0°-20°)
चंद्रमा	वृष राशि	(3°-30°)
मंगल	मेष राशि	(0°-12°)
बुध	कन्या राशि	(15°-20°)
बृहस्पति	धनु राशि	(0°-10°)
शुक्र	तुला राशि	(0°-5°)
शनि	कुंभ राशि	(0°-20°)
राहु	(मिथुन/वृषभ)	
केतु	(धनु/वृश्चिक)	

ग्रहों की स्वराशि एंव अंश

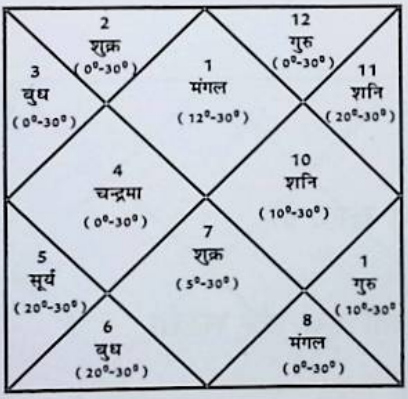

सूर्य	सिंह राशि	(20°-30°)
चंद्रमा	कर्क राशि	(0°-30°)
मंगल	मेष राशि	(12°-30°)
	वृश्चिक राशि	(0°-30°)
बुध	कन्या राशि	(20°-30°)
	मिथुन राशि	(0°-30°)
बृहस्पति	धनु राशि	(10°-30°)
	मीन राशि	(0°-30°)
शुक्र	तुला राशि	(5°-30°)
	वृषभ राशि	(0°-30°)
शनि	कुंभ राशि	(20°-30°)
	मकर राशि	(0°-30°)
राहु	कन्या राशि	
केतु	मीन राशि	

ग्रहों की अस्त अवस्था

सूर्य से विभिन्न ग्रहों की अंशों में दूरी

	मार्गी अवस्था	वक्री अवस्था
1. चंद्रमा	12°	वक्री नहीं होता
2. मंगल	17°	8°
3. बुध	14°	12°
4. बृहस्पति	11°	11°
5. शुक्र	10°	8°
6. शनि	15°-16°	15°-16°

कुंडली में विच्छेदकारी ग्रह

किसी भी कुंडली में जो ग्रह स्थान विच्छेद करने की क्षमता रखते हैं उन्हें विच्छेदकारी ग्रह कहते हैं।

1. सूर्य
2. शनि
3. राहु
4. कुंडली का द्वादशेश
5. मंगल भी कुछ प्रभाव विच्छेद का रखता है।

वेदों के अधिष्ठाता देवता एवं मंत्र संख्या

1. ऋग्वेद-बृहस्पति 10828 मंत्र
2. यजुर्वेद-शुक्र 1975 मंत्र
3. सामवेद-मंगल 1875 मंत्र (इसमें 75 मंत्र स्वतंत्र है)
4. अथर्ववेद-बुध 1375 मंत्र

ग्रहों की नैसर्गिक मित्रता

नियम:

1. ग्रह की मूलत्रिकोण राशि से त्रिकोण राशि के स्वामी मित्र होंगे।

2. ग्रह की मूलत्रिकोण राशि से द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, अष्टम, नवम और द्वादश भाव की राशि के स्वामी मित्र होगें।

3. अन्य सभी उसके शुत्र होंगे।

मित्र + मित्र = घनिष्ठ मित्र

मित्र + सम = मित्र

मित्र + शत्रु = सम

शत्रु + सम = शत्रु

शत्रु + शत्रु = अति शत्रु

सूर्य का नैसर्गिक मित्रता चार्ट

1. सूर्य की मूलत्रिकोण राशि लग्न चार्ट

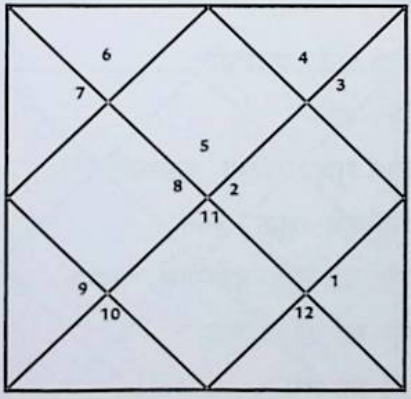

नियम:

1. मित्र बृहस्पति, मंगल
2. मित्र मंगल
3. मित्र बुध, मंगल, बृहस्पति, चंद्रमा
4. शत्रु शुक्र, शनि, बुध

* मित्र ग्रह बृहस्पति, मंगल, चंद्रमा
* सम ग्रह बुध
* शत्रु ग्रह शुक्र, शनि

चंद्र का नैसर्गिक मित्रता चार्ट

2. चंद्र का मूलत्रिकोण राशि लग्न चार्ट

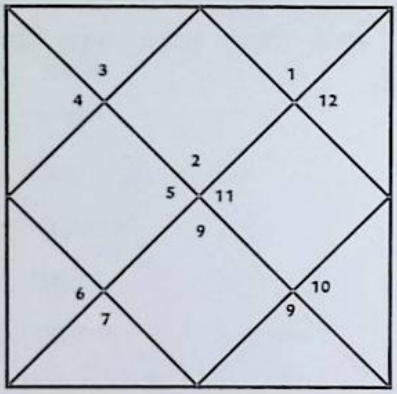

नियमः

1. मित्र बुध, शनि
2. मित्र शुक्र
3. मित्र बुध, सूर्य, बृहस्पति, मंगल
4. शत्रु शुक्र, मंगल, शनि, बृहस्पति

* मित्र ग्रह सूर्य, बुध

* सम ग्रह मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि

* शत्रु ग्रह कोई नहीं

मंगल का नैसर्गिक मित्रता चार्ट

3. मंगल का मूलत्रिकोण राशि लग्न चार्ट

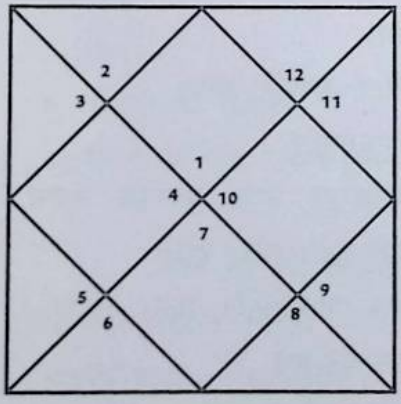

नियमः

1. मित्र सूर्य, बृहस्पति
2. मित्र शनि
3. मित्र शुक्र, चंद्रमा, बृहस्पति
4. शत्रु बुध, शुक्र, शनि

* मित्र ग्रह सूर्य, बृहस्पति, चंद्रमा

* सम ग्रह शनि, शुक्र

* शत्रु ग्रह बुध

बुध का नैसर्गिक मित्रता चार्ट

4. बुध का मूलत्रिकोण राशि लग्न चार्ट

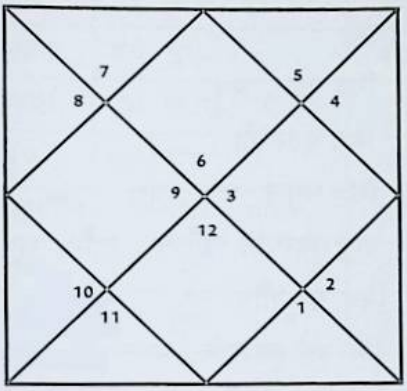

नियमः

1. मित्र शनि, शुक्र
2. मित्र
3. मित्र शुक्र, बृहस्पति, मंगल, सूर्य
4. शत्रु मंगल, शनि, बृहस्पति, चंद्रमा

* मित्र ग्रह शुक्र, सूर्य

* सम ग्रह शनि, बृहस्पति, मंगल

* शत्रु ग्रह चंद्रमा

बृहस्पति का नैसर्गिक मित्रता चार्ट

5. बृहस्पति की मूलत्रिकोण राशि लग्न चार्ट

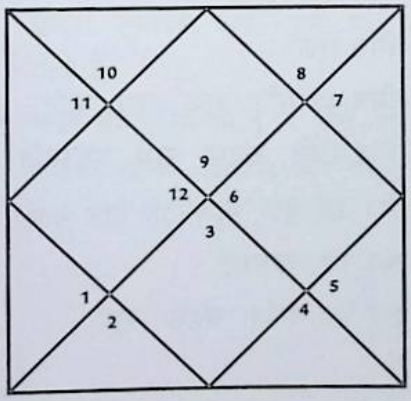

नियमः

1. मित्र मंगल, सूर्य
2. मित्र चंद्रमा
3. मित्र शनि, चंद्रमा, मंगल
4. शत्रु शनि, शुक्र, बुध, शुक्र, बुध

* मित्र ग्रह मंगल, चंद्रमा, सूर्य

* सम ग्रह शनि

* शत्रु ग्रह शुक्र, बुध

शुक्र का नैसर्गिक मित्रता चार्ट

6. शुक्र का मूलत्रिकोण राशि लग्न चार्ट

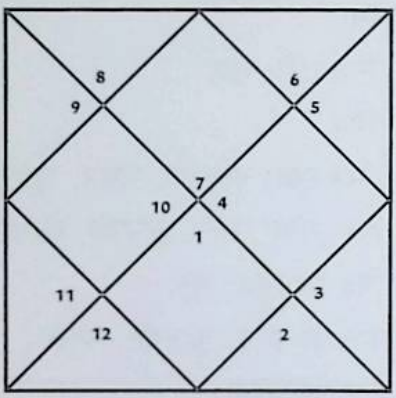

नियमः

1. मित्र शनि, बुध
2. मित्र बृहस्पति
3. मित्र मंगल, शुक्र, बुध
4. शत्रु बृहस्पति, मंगल, चंद्रमा, सूर्य

* मित्र ग्रह शनि, बुध
* सम ग्रह बृहस्पति, मंगल
* शत्रु ग्रह चंद्रमा, सूर्य

शनि का नैसर्गिक मित्रता चार्ट

7. शनि का मूलत्रिकोण राशि लग्न चार्ट

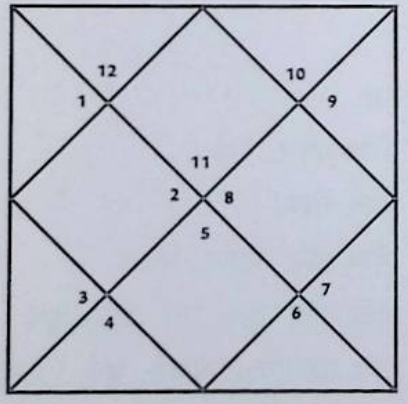

नियमः

1. मित्र बुध, शुक्र
2. मित्र शुक्र
3. मित्र बृहस्पति, शुक्र, बुध, शनि
4. शत्रु मंगल, चंद्रमा, सूर्य, बृहस्पति

* मित्र ग्रह बुध, शुक्र
* सम ग्रह बृहस्पति
* शत्रु ग्रह मंगल, चंद्रमा, सूर्य

ग्रहों का नैसर्गिक मित्रता चार्ट

	मित्र ग्रह	सम ग्रह	शत्रु ग्रह
सूर्य	चंद्र, मंगल, बृहस्पति	बुध	शुक्र, शनि
चंद्रमा	सूर्य, बुध,	मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि	
मंगल	सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पति	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सूर्य, शुक्र	मंगल, बृहस्पति, शनि	चंद्रमा
बृहस्पति	सूर्य, चंद्रमा, मंगल	शनि	शुक्र, बुध
शुक्र	शनि, बुध	बृहस्पति, मंगल	सूर्य, चंद्रमा
शनि	बुध, शुक्र	बृहस्पति	सूर्य, चंद्रमा, मंगल

ग्रहों की तात्कालिक मित्रता

किसी भी ग्रह की तात्कालिक मित्रता कुंडली विशेष में उसकी ग्रह स्थिति के अनुसार निर्धारित की जाती है। अतः यहाँ कालपुरुष कुंडली में ग्रहों की परम उच्च अंशों के उदाहरण पर तात्कालिक मित्रता का निर्धारण करते हैं।

नियमः

1. कोई ग्रह जिस भाव में बैठा हो उस भाव से द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं द्वादश एकादश और दशम भाव में बैठे ग्रह उस ग्रह के तात्कालीन मित्र होते हैं।
2. कोई ग्रह जिस भाव में बैठा हो उस भाव में बैठा अन्य ग्रह एवं पंचम, षष्टम, सप्तम, अष्टम और नवम भाव में बैठे ग्रह उस ग्रह के तात्कालीन शत्रु होते हैं।

कुंडली में तात्कालीन मित्रता:

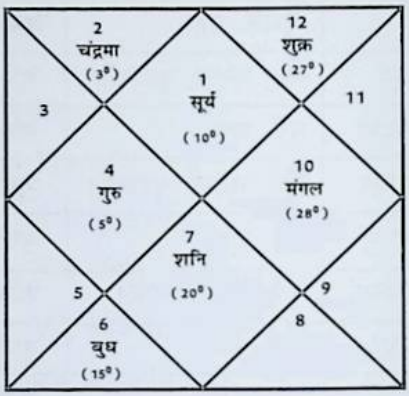

1. **सूर्य:** मित्र चंद्रमा, बृहस्पति, शुक्र, मंगल
   शत्रु बुध, शनि
2. **चंद्रमा:** मित्र गुरु, सूर्य, शुक्र
   शत्रु बुध, शनि, मंगल
3. **मंगल:** मित्र शुक्र, सूर्य, शनि
   शत्रु बुध, चंद्रमा, गुरु
4. **बुध:** मित्र शनि, गुरु
   शत्रु सूर्य, शुक्र, चंद्रमा, मंगल
5. **बृहस्पति:** मित्र चंद्रमा, बुध, शनि, सूर्य
   शत्रु मंगल, शुक्र
6. **शुक्र:** मित्र मंगल, सूर्य, चंद्रमा
   शत्रु गुरु, बुध, शनि
7. **शनि:** मित्र बुध, गुरु, मंगल
   शत्रु चंद्रमा, सूर्य, शुक्र

पंचधा मैत्री

किसी भी कुंडली विशेष में ग्रहों के नैसर्गिक संबंध एवं तात्कालीन संबंधों को मिलाकर पंचधा मैत्री का निर्माण किया जाता है।

नियम:

नैसर्गिक मित्र + तात्कालीन मित्र = अतिमित्र

नैसर्गिक सम + तात्कालीन मित्र = मित्र

नैसर्गिक शत्रु + तात्कालीन मित्र = सम

नैसर्गिक मित्र + तात्कालीन शत्रु = सम

नैसर्गिक सम + तात्कालीन शत्रु = शत्रु

नैसर्गिक शत्रु + तात्कालीन शत्रु = अतिशत्रु

पंचधा मैत्री चार्ट

सूर्यः	चंद्रमा (नैसर्गिक मित्र + तात्कालीन मित्र)	=	अतिमित्र
	गुरु (नैसर्गिक मित्र + तात्कालीन मित्र)	=	अतिमित्र
	बुध (नैसर्गिक सम + तात्कालीन शत्रु)	=	शत्रु
	शनि (नैसर्गिक मित्र + तात्कालीन शत्रु)	=	सम
	मंगल (नैसर्गिक मित्र + तात्कालीन मित्र)	=	अतिमित्र
	शुक्र (नैसर्गिक शत्रु + तात्कालीन मित्र)	=	सम
चंद्रमाः	सूर्य (नैसर्गिक मित्र + तात्कालीन मित्र)	=	अतिमित्र
	शुक्र (नैसर्गिक सम + तात्कालीन मित्र)	=	मित्र
	मंगल (नैसर्गिक सम + तात्कालीन शत्रु)	=	शत्रु
	शनि (नैसर्गिक मित्र + तात्कालीन शत्रु)	=	सम
	बुध (नैसर्गिक सम + तात्कालीन शत्रु)	=	सम
	गुरु (नैसर्गिक समु + तात्कालीन मित्र)	=	मित्र

ग्रहों की बालादि अवस्था

ग्रहों की बालादि अवस्था	विषम राशि में	सम राशि में
(0^0-6^0)	बाल अवस्था	मृत अवस्था
(6^0-12^0)	कुमार अवस्था	वृद्ध अवस्था
(12^0-18^0)	युवा अवस्था	युवा अवस्था
(18^0-24^0)	वृद्ध अवस्था	कुमार अवस्था
(24^0-30^0)	मृत अवस्था	बाल अवस्था

बाधक ग्रह

1. चर लग्नों (1,4,7,10) में एकादशेश बाधक ग्रह होता है।
2. स्थिर लग्नों (2,5,8,11) में नवमेश बाधक ग्रह होता है।
3. द्विस्वभाव लग्नों (3,6,9,12) में सप्तमेश बाधक ग्रह होता है।

केन्द्र, पणफर, ओपोक्लिम भाव

1. केन्द्रः लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम भाव (1,4,7,10) विष्णु स्थान
2. पणफरः द्वितिय, पंचम, अष्टम, एकादश भाव (2,5,8,11)
3. ओपोक्लिमः तृतीय, षष्टम, नवम, द्वादश भाव (3,6,9,12)

त्रिकोण भाव (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)

1. प्रथम त्रिकोण (लक्ष्मी स्थान): लग्न, पंचम, नवम (1,5,9,) धर्म त्रिकोण
2. द्वितिय त्रिकोणः द्वितीय, षष्ठम, दशम (2,6,,10) अर्थ त्रिकोण
3. तृतीय त्रिकोणः तृतीय, सप्तम, एकादश (3,7,11) काम त्रिकोण
4. चतुर्थ त्रिकोणः चतुर्थ, अष्टम, द्वादश (4,8,12) मोक्ष त्रिकोण

ग्रह स्थिति से दशा विचार

1. **संपूर्ण दशाः** उच्च राशिस्थ ग्रह अथवा षडबल में अतिबली ग्रह की दशा संपूर्ण दशा कहलाती है।
2. **पूर्णादशाः** स्वराशि में स्थित ग्रह, शुभ ग्रह से युक्त, दृष्ट, जिस ग्रह का इष्ट फल अधिक हो ऐसे ग्रह की दशा पूर्णादशा कहलाती है।
3. **शुभ दशाः** मित्र क्षेत्री, मित्र ग्रह या शुभ ग्रह से युत अथवा दृष्ट, वर्गोत्तम ग्रह, उच्च नवांश में बैठे ग्रह, सप्तवर्ग में बली ग्रह की दशा शुभ दशा कहलाती है।
4. **आरोही दशाः** जो ग्रह अपनी नीच राशि को छोड़कर कुंडली में अपनी उच्च राशि की ओर बढ़ रहा हो, तो उस ग्रह की दशा आरोही दशा कहलाती है।
5. **अवरोही दशाः** जो ग्रह परम उच्च स्थिति त्याग कर अपनी नीच राशि की ओर अग्रसर हो वह दशा अवरोही दशा कहलाती है।
6. **अशुभ या अधमा दशाः** जो ग्रह नीच राशिस्थ, शत्रु क्षेत्री, नवांश चक्र में नीचस्थ राशि, नवांश वर्ग में शत्रु राशि और शत्रु ग्रह से युक्त ग्रह की दशा अशुभ या अधमा दशा कहलाती है।

7. **रिक्ता दशाः** जो ग्रह अति नीच षडवल में निर्बल व पीडित ग्रह की दशा रिक्ता दशा कहलाती है।
8. **अनिष्ट दशाः** परम नीच, शत्रु राशि, शत्रु या नीच नवांश, पाप ग्रह से युक्त, दृष्ट ग्रह की दशा अनिष्ट दशा कहलाती है।
9. **कष्ट दशाः** सूर्य के अति समीप होने से ग्रह अस्त हो जाते हैं। ऐसे ग्रह की दशा कष्ट दशा कहलाती है।

कुंडली में, शुभ, सम, त्रिषढ़ाय, त्रिक, उपचय भाव

1. शुभ भाव 1,5,9
2. सम भाव 4,7,10,2, 12,8
3. त्रिषढ़ाय भाव 3,6,11
4. उपचय भाव 3,6,10,11
5. त्रिक भाव 6,8,12
6. धन भाव 2,11
7. विष्णु स्थान 1,4,7,10
8. लक्ष्मी स्थानः 1,5,9
9. मारक भावः 2,7

ग्रहों की दस अवस्थाएँ

1. **दीप्त अवस्था/प्रदीप्त अवस्था:**—जब ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो उस अवस्था की प्रदीप्त अवस्था कहा जाता है जिसमें ग्रह 100% फल देता है।
2. **सुखद अवस्था:**—जब ग्रह अपनी मूलत्रिकोण राशि में होता है तो उस अवस्था को सुखद अवस्था कहा जाता है जिसमें ग्रह 80% फल देता है।
3. **स्वस्थ्य अवस्था:**—जब ग्रह अपनी स्वराशि में हो तो उस अवस्था को स्वस्थ्य अवस्था कहा जाता है जिसमें ग्रह 75% फल देने में समर्थ होता है।
4. **मुदित अवस्था:**—जब ग्रह अपनी मित्र राशि में होता है तो उस अवस्था को मुदित अवस्था कहा जाता है जिसमें ग्रह 60% फल देने में समर्थ होता है।
5. **शांत अवस्था:**—जब ग्रह षोडशवर्गों (चार्टों) में शुभ ग्रह के साथ बैठा हो या शुभ भाव में हो तो उस अवस्था को शांत अवस्था कहा जाता है जिसमें ग्रह 50% शुभ फल देता है।
6. **शक्त या संकट अवस्था:**—जब ग्रह वक्री अथवा अस्त अवस्था में हो परंतु पाप ग्रह से युत अथवा दृष्ट ना हो तो उसे शक्त अवस्था कहा जाता है जिसमें 40% फल देता है।
7. **पीडित अवस्था:**—जब ग्रह पूर्ण रूप से अस्त हो तो ग्रह पीड़ित अवस्था में होता है। जिसमें फल 25% रह जाता है।
8. **दीन अवस्था:**—जब ग्रह अपनी नीच राशि में होता है। तो दीन अवस्था में होता है जिसमें 80% बुरा फल होता है।
9. **विकल अवस्था:**—जब ग्रह पर एक से अधिक पाप ग्रहों की दृष्टि आ रही हो तो विकल अवस्था में होता है जिसमें 90% खराब फल मिलता है।
10. **खल अवस्था:**—जब दो या अधिक ग्रह एक ही स्थान पर 1° के अंतर के भोगांशों में हों तो उस अवस्था को ग्रह युद्ध की अवस्था कहा जाता है। जिसमें कम भोगांश वाला ग्रह विजयी होता है अधिक भोगांश वाला ग्रह हारा हुआ होता है और उसे खल अवस्था में माना जाता है जिसमें वह शुभ फल देने में असमर्थ होता है।

केन्द्राधिपति दोष

नियमः

1. लघु पाराशरी के अनुसार जब किसी ग्रह को एक केन्द्र एवं एक मारक भाव का स्वामित्व प्राप्त हो तो उस ग्रह को केन्द्राधिपति दोष लगता है।
2. केन्द्राधिपति दोष नैसर्गिक शुभ ग्रहों को ही लग सकता है जिसमें से सबसे अधिक दोष बृहस्पति को, बृहस्पति से कम शुक्र को शुक्र से कम दोष बुध को एवं बुध से कम दोष चंद्रमा को लगता है।

1. मेष लग्न में शुक्र को द्वितियेश एवं सप्तमेश होने के कारण केन्द्राधिपति दोष लगता है।
2. मिथुन लग्न में बृहस्पति को सप्तमेश एवं दशमेश होने के कारण केन्द्राधि पति दोष लगता है।
3. कन्या लग्न में बृहस्पति को चतुर्थश और सप्तमेश होने के कारण केन्द्राधि पति दोष लगता है।
4. तुला लग्न में मंगल को द्वितियेश और सप्तमेश का स्वामित्व प्राप्त है, परंतु नैसर्गिक पाप ग्रह होने के कारण मंगल को केन्द्राधिपति दोष नहीं लगता है।
5. वृश्चिक लग्न में शुक्र को सप्तमेश (मारकेश और केन्द्रेश) होने के कारण केन्द्राधिपति दोष लगता है।
6. धनु लग्न में बुध को सप्तमेश एवं दशमेश होने के कारण केन्द्राधिपति दोष लगता है परन्तु बुध पापी नहीं होना चाहिये।
7. मकर लग्न में चंद्रमा को सप्तमेश और केन्द्रेश होने के कारण केन्द्राधिपति दोष लग सकता है परंतु यह निर्धारण करना आवश्यक है कि वह पक्षबली होने के कारण शुभ है अथवा अशुभ।
8. मीन लग्न में बुध के चतुर्थेश और सप्तमेश होने के कारण केन्द्राधिपति दोष लगता है परंतु यहाँ बुध पापी नहीं होना चाहिए।

योग

धनयोग

किसी भी कुंडली में द्वितिय भाव एवं एकादश भाव धन भाव कहलाते हैं एवं लग्न से त्रिकोण स्थान लक्ष्मी स्थान कहलाते हैं। जब भी लक्ष्मी स्थानों का संबंध धन भाव से बनता है तो धन योग का निर्माण होता है।

धन भाव 2, 11

लक्ष्मी स्थान 1,5,9

धनयोग 2+1, 2+5, 2+9, 2+11, 1+11, 5+11 और 9+11 भाव

राजयोग

किसी भी कुंडली में लग्न से केन्द्र भाव विष्णु स्थान कहलाते हैं एवं लग्न से त्रिकोण स्थान लक्ष्मी स्थान कहलाते हैं। जब भी इन विष्णु एवं लक्ष्मी स्थानों का संबंध अर्थात् परस्पर इन भावों के स्वामी आपस में संबंध बनाते हैं तो राजयोग का निर्माण होता है।

विष्णु स्थान 1,4,7 और 10 भाव

लक्ष्मी स्थान 1,5, 9 भाव

अत: बनने वाले राजयोग 1+5, 1+9, 4+5, 4+9, 7+5, 7+9, 10+5, और 10+9 भाव।

राहु-केतु से बनने वाले राज योग

जब किसी कुंडली में राहु-केतु विशेष राज योग बनाते है तब वे अपनी महादशा या अन्तरदशा में अपना शुभ फल देने में सक्षम होते हैं। इन राजयोगों के बनने की तीन अवस्थाएं हैं।

1. जब कभी राहु या केतु त्रिकोण भाव में विद्यमान हो और कुंडली के केन्द्रेश से संबंध बनाये।
2. जब कभी राहु या केतु केन्द्रभाव में विद्यमान हो और कुंडली के त्रिकोणेश से संबंध बनाये।

3. जब कभी राहु या केतु केन्द्र या त्रिकोण से अन्य किसी स्थान में विद्यमान हो और कुंडली के केन्द्रेश एवं त्रिकोणेश दोनों से संबंध हो तो राजयोग बनाते हैं।

नीच भंग राजयोग

नीच भंग से अभिप्राय है किसी ग्रह के नीच राशि में होने पर उसकी नीचता भंग हो जाना अर्थात् उसके बुरे प्रभाव में कमी आ जाना।

नियमः

1. जिस भाव में ग्रह नीच का हो, वह भाव लग्न या चंद्र से केन्द्र में हो।
2. जिस राशि में वह नीच ग्रह उच्च का होता है उस राशि का स्वामी लग्न या चंद्र से केन्द्र में हो।
3. जिस राशि में ग्रह नीच का बैठा हो, उस राशि का स्वामी, अपने उस घर को एवं ग्रह को देख रहा है।
4. जिस राशि में नीच ग्रह बैठा हो उस राशि को वह ग्रह देखे जिस राशि में वह ग्रह उच्च का होता है।
5. दो नीच ग्रह एक दूसरे के भाव को देख रहे है।
6. जो ग्रह नीच का हो वह नवांश में उच्च का हो जाय
7. जहाँ ग्रह नीच का हो वहाँ पर जो ग्रह उच्च का हो वह भी साथ में बैठ जाय (मीन में बुध एवं शुक्र)।

विपरीत राजयोग

षष्टम, अष्टम एवं द्वादश स्थान अशुभ स्थान माने जाते हैं। जब इन भावों के स्वामी आपस में स्थान परिवर्तन करते हैं तो तीन प्रकार के विपरित राजयोग बनते हैं।

1. हर्ष विपरीत राजयोग जब षष्टेश अष्टम या द्वादश स्थान जाय।
2. सरल विपरीत राजयोग जब अष्टमेश षष्टम या द्वादश भाव में चला जाए।
3. विमल विपरीत राजयोग जब द्वादशेश षष्टम या अष्टम स्थान में चला जाए।

चन्द्र से बनने वाले योग

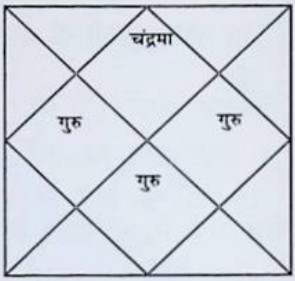

1. **गजकेसरी योग (शुभफल):** शास्त्रानुसार "चंद्रमा से केन्द्र में गुरु हों" अतः चंद्रमा से चतुर्थ, सप्तम, दशम में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है। जन सामान्य विचार से चंद्रमा और गुरु की युति को भी गजकेसरी योग में माना गया है क्योंकि प्रथम भाव भी केन्द्र होता है परंतु नियमानुसार विद्वानों में मतभेद भी पाया गया है।

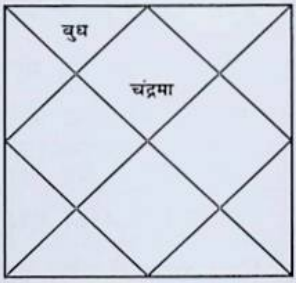

2. **सुनफा योग (शुभफल):** जब भी चंद्रमा से द्वितीय भाव में सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह हो तो सुनफा योग का निर्माण होता है। अतः यदि चंद्रमा से द्वितीय भाव में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि में से कोई ग्रह हों तो सुनफा योग का निर्माण होता है।

3. **अनफा योग (शुभफल):** जब भी चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य के अतिरिक्त अन्य कोई ग्रह हो तो अनफा योग का निर्माण होता है। अतः यदि चंद्रमा से द्वादश भाव में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि हो तो अनफा योग का निर्माण होता है।

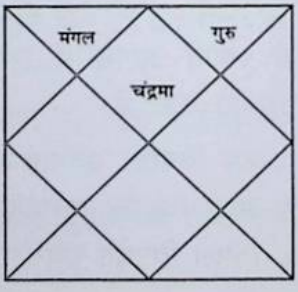

4. **दुरूधरा योग (शुभफल):** जब चंद्रमा से द्वितीय एवं द्वादश भाव में सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह विद्यमान हो तो दुरूधरा योग का निर्माण होता है। अतः यदि चंद्रमा से द्वितिय एवं द्वादश भाव में गुरु, बुध, मंगल, शुक्र, शनि विद्यमान हो तो दुरूधरा योग का निर्माण होता है।

5. **केन्द्रुम योग (अशुभफल):**—जब भी चंद्रमा से द्वितीय एवं द्वादश भाव में कोई ग्रह ना हो तो केन्द्रुम योग का निर्माण होता है।

6. **अमला योग (शुभफल):**—जब भी चंद्रमा से दशम भाव में कोई ग्रह विद्यमान हो तो अमला योग का निर्माण होता है।

7. **शकट योग (अशुभफल):**—जब भी चंद्रमा से गुरु षष्टम या अष्टम में विद्यमान हो तो शकट योग का निर्माण होता है।

8. **अधि योग (शुभफल):**—जब चंद्रमा से षष्टम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शुभ ग्रह हों तो अधि : योग का निर्माण होता है।

सूर्य से बनने वाले योग

1. **वेशी योग (शुभफल):**—जब सूर्य से द्वितीय भाव में चंद्र को छोड़कर कोई अन्य ग्रह विद्यमान हों तो वेशी योग का निर्माण होता है। अतः यदि सूर्य से द्वितीय भाव में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि हो तो वेशी योग बनता है।

2. **वोशी या वाशी योग (शुभफल):**—जब सूर्य से द्वादश भाव में चंद्र को छोड़कर कोई अन्य ग्रह विद्यमान हों तो वोशी योग का निर्माण होता है। अतः यदि सूर्य से द्वादश भाव में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि हो तो वोशी योग का निर्माण होता है।

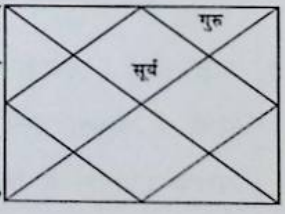

3. **उभयचारी योग (शुभफल):**—जब भी सूर्य से द्वितीय एवं द्वादश भावों में चंद्र को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो उभयचारी योग का निर्माण होता है। अतः यदि सूर्य से द्वितीय एवं द्वादश भावों में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि विद्यमान हो तो उभयचारी योग का निर्माण होता है।

4. **बुधादित्य योग (शुभफल):**—जब भी किसी कुंडली में सूर्य एवं बुध किसी राशि में एक साथ हों तो बुधादित्य योग का निर्माण होता है। सामान्य रूप से इस योग में जब सूर्य एवं बुध अंशानुसार नजदीक हो तो इस योग के फल जातक को देखने को मिलते हैं। क्योंकि बुध सदैव सूर्य के नजदीक अवस्था में होता है इसलिये बुध को अस्त का दोष नहीं लगता।

पंचमहापुरुष योग

1. **रूचक-(शुभफल):**—जब भी मंगल केन्द्र भावों में अपनी उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि अथवा स्वराशि में विद्यमान हो तो रूचक नामक पंचमहापुरुष योग का निर्माण होता है।

2. **भद्र योग (शुभफल):**—जब भी बुध केन्द्र भावों में अपनी उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि अथवा स्वराशि में विद्यमान हों तो भद्र नामक पंचमहापुरुष योग का निर्माण होता है।

3. **हंस योग (शुभफल):**—जब भी बृहस्पति केन्द्र भावों में अपनी उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि अथवा स्वराशि में विद्यमान हों तो हंस नामक पंचमहापुरुष योग का निर्माण होता है।

4. **मालव्य योग (शुभफल):**—जब किसी कुंडली में शुक्र केन्द्र भावों में अपनी उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि, अथवा स्वराशि में विद्यमान हो तो मालव्य नामक पंचमहापुरुष योग का निर्माण होता है।

5. **शश-योग (शुभफल):**—जब किसी कुंडली में शनि केन्द्र भावों में अपनी उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि, अथवा स्वराशि में विद्यमान हो तो शश नामक पंचमहापुरुष योग का निर्माण होता है।

अन्य योग

1. **शुभ कर्त्तरी (शुभफल):**—जब किसी भाव अथवा किसी ग्रह से द्वितीय एवं द्वादश भावों में नैसर्गिक शुभ ग्रह विद्यमान हो तो वह भाव अथवा वह ग्रह शुभ कर्त्तरी में माना जाता है।

2. **पाप कर्त्तरी (अशुभफल):**—जब किसी भाव अथवा किसी ग्रह से द्वितीय एवं द्वादश भावों में नैसर्गिक पाप ग्रह विद्यमान हों तो वह भाव अथवा वह ग्रह पाप कर्त्तरी में माना जाता है।

3. महाभाग्य योग (शुभफल):—1. पुरुष की कुंडली में जब दिन का जन्म हो, लग्न, सूर्य एवं चंद्रमा विषम राशि में विद्यमान हों तो महाभाग्य योग का निर्माण होता है। (दिन-सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

4. महाभाग्य योग(शुभफल):—स्त्री की कुंडली में जब रात्रि का जन्म हो, लग्न, सूर्य एवं चंद्रमा सम राशि में विद्यमान हो तो महाभाग्य योग का निर्माण होता है। (रात्रि-सूर्यास्त से सूर्योदय तक)

5. अधम-मध्यम-उत्तम योग:—

a. सूर्य से चन्द्रमा केन्द्र भावों (1,4,7,10) में हो-अधम योग (अशुभ)

b. सूर्य से चंद्रमा पणफर भावों (2,5,8,11) में हो मध्यम योग (सामान्य)

c. सूर्य सं चंद्रमा ओपोक्लिम भावों (3,6,9,12) में हो-उत्तम योग (शुभ)

6. सरस्वती योग (शुभ योग):—जब किसी कुंडली में केन्द्र (1,4,7,10), त्रिकोण (5,9) एवं द्वितीय भाव में एक साथ या अलग-अलग बुध, बृहस्पति एवं शुक्र विद्यमान हो तो सरस्वती योग का निर्माण होता है।

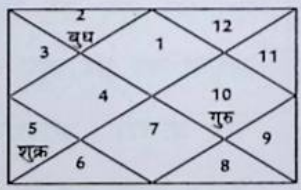

7. महायोग (शुभ योग):—जब किसी कुंडली में लग्नेश, द्वितियेश, चतुर्थेश, पंचमेश, सप्तमेश, नवमेश, दशमेश में से किन्हीं दो का आपस में राशि परिवर्तन हो तो उससे महायोग का निर्माण होता है।

9. खल योग (अशुभ योग):—जब किसी कुंडली में तृतीयेश का राशि परिवर्तन लग्नेश, द्वितियेश, चतुर्थेश, पंचमेश, सप्तमेश, नवमेश, दशमेश, एकादशेश से हो तो खल योग का निर्माण होता है।

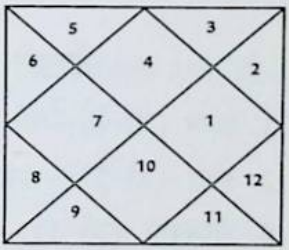

25. दैन्य योग (अशुभ योग):—जब किसी कुंडली में षष्टेश, अष्टमेश या द्वादशेश का राशि परिवर्तन किसी भी अन्य भावेश से हो तो दैन्य योग होता है

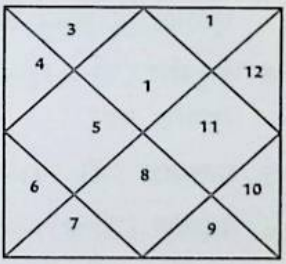

वर्ग तालिका (Division Chart)

भचक्र का 360° अंश और 30 अंश की बारह राशियाँ और 13°-20' कला के 27 नक्षत्रों में विभाजित किया गया है। इसी प्रकार प्रत्येक राशि को भिन्न-भिन्न समान भागों में बांटने पर जो भचक्र के खण्ड बनते हैं उन्हें वर्ग कहते हैं। इन अलग-अलग वर्गों से जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार किया जाता है। इन वर्गों में षोडश वर्ग अधिक महत्त्वपूर्ण माने जाते है।

1. षडवर्ग: यह कुल छः होते हैं 1. लग्न (डी-1) 2. होरा (डी-2) 3. द्रेष्कोण (डी-3) 4. नवांश (डी-9) 5. द्वादशांश (डी-12) 6. त्रिशांश (डी-30)

2. सप्तवर्ग:–यह सात होते हैं: षड्वर्ग+सप्तमांश वर्ग (डी-7)

3. दशवर्ग:–यह दस होते हैं: सप्तवर्ग+दशमांश(डी-10)+षोडषांश (डी-16)+षष्टयंश (डी-60)

4. षोडषवर्ग:–यह सोलह होते हैं: दश वर्ग + चतुर्थांश (डी-4), + विशांश (डी-20), +चतुर्विशांश (डी-24), +सप्तविंशांश (डी-27), खवेदांश (डी-40), पंचचत्वरिशांश (अक्षवेदांश) (डी-45)

देखने वाली विभिन्न तालिकाएं

1. **लग्न** (डी-1):–जो प्रथम भाव से देखा जाता है।
2. **होरा** (डी-2):–धन, परिवार, सुख, समृद्धि, संपन्नता।
3. **द्रेष्कोण** (डी-3):–भाई-बहिन, मृत्यु के समय की अवस्था, प्रतिभा, मुसीबत के समय लड़ने की क्षमता।
4. **चतुर्थांश** (डी-4):–(तुर्यांश) प्रारब्ध, जिंदगी की किस्मत, जमीन जायदाद, सम्पत्ति आदि
5. **सप्तमांश** (डी-7):–बुद्धि, संतान, पोते-पोती।
6. **नवमांश** (डी-9):–जो शाश्वत है, जो Life का Promise है, पति-पत्नी।
7. **दशमेश** (डी-10):–कर्ज, आजीविका, भाग्य में आने वाले बदलाव, सम्मान सफलताएँ, अपने हाथों से होने वाली आय, उन्नति या अवनति।
8. **द्वादशांश**(डी-12):–माता-पिता, दादा-दादी, अपने वंश के बड़े-बुजुर्ग, भूतकाल, भविष्यकाल एवं विदेश।
9. **षोडषांश (कालांश)** (डी-16):–चर सम्पत्ति, वाहन-घोड़ा गाड़ी, खुशी दु:ख और उनके कारण इच्छाओं की पूर्ति।
10. **विंशांश (उपासनांश)** (डी-20):–धार्मिक प्रवृत्ति, धार्मिक कार्यों में इच्छा और उनसे मिलने वाला फल, वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक उन्नति।
11. **चतुर्विंशांश (सिद्धांत)** (डी-24):–अपनी पढ़ाई-लिखाई एवं उससे मिलने वाली सफलता और उसमें निपुणता, ज्ञान, विद्या, शिक्षा, Subject choice भी।

12. **सप्तविंशांश** (डी-27):—शारीरिक बल, शारीरिक बिमारियाँ, और उनसे लड़ने की क्षमता, शक्ति, मुसीबतें।

13. **त्रिशांश** (डी-30):—जीवन के सुख:दुख:, परेशानियाँ एवं अरिष्ट (जो बुरा होना है) दुर्घटनाएँ।

14. **चत्वारिशांश** (डी-40):—जीवन में कैसा फल मिलेगा, जीवन में शुभ अशुभ।

15. **पंच-चत्वरिशंश** (डी-45):—चरित्र, व्यक्तित्त्व।

16. **षष्टयांश** (डी-60):—जीवन होने वाली और मिलने वाली सभी चीजें डी-30) की तरह है परंतु डी-30 से अधिक बली है।

जैमिनी वर्ग:—

1. डी-5:—इष्टदेव, पूजा पाठ, कुलदेव।
2. डी-6:—छोटी बीमारियां।
3. डी-8:—लम्बी रहने वाली बिमारियां।
4. डी-11:—बिना मेहनत का लाभ।

उच्च वर्ग चार्ट:—

डी-72, डी-81, डी-108, डी-144,

डी-150

डी-300 नाड़ी ज्योतिष

राजयोग भंग

लघु पाराशरी के अनुसार जब भी दशमेश ही एकादशेश भी हो अथवा नवमेश ही अष्टमेश भी हो तो उनसे बनने वाला राजयोग भंग हो जाते हैं और अपने शुभ फलों के देने में प्रभावशाली नहीं रहते। यदि यही बात मानी जाती हैं तो फिर मिथुन लग्न या मेष लग्न को ही बोला जाता है क्योंकि इन्हीं दोनों लग्नों में यह स्थित संभव है। अत: यहाँ विस्तृत रूप से देखा जाय तो दशमेश सबसे बली केन्द्र भाव है जो सभी केन्द्र भावों का प्रतिनिधित्व करता है वहीं नवमेश सबसे वली त्रिकोण भाव है जो सभी त्रिकोणों का प्रतिनिधित्व करता है। अत: यहाँ राजयोग भंग से अभिप्राय: है कि जब भी केन्द्रेश एकादशेश

भी हो अथवा त्रिकोणेश अष्टमेश भी हो तो उस ग्रह से बनने वाला कोई भी राजयोग भंग समझा जाएगा या पूरे शुभ फल देने में समर्थ नहीं होगा।

मेष लग्न में	शनि से बनने वाला राजयोग भंग
वृषभ लग्न में	कोई नहीं
मिथुन लग्न में	शनि से बनने वाला राजयोग भंग
कर्क लग्न में	कोई नहीं
सिंह लग्न में	बृहस्पति से बनने वाला राजयोग भंग
कन्या लग्न में	कोई नहीं
तुला लग्न में	कोई नहीं
वृश्चिक लग्न में	कोई नहीं
धनु लग्न में	कोई नहीं
मकर लग्न में	मंगल से बनने वाला राजयोग भंग
कुंभ लग्न में	बुध से बनने वाला राजयोग भंग
मीन लग्न में	कोई नहीं

कुंडली में निर्धारक तत्व संबंधी नियम

1. केन्द्र का स्वामी सौम्य ग्रह (नैसर्गिक शुभ) हो तो वह अपना शुभत्व खो देता है परंतु वह पापी नहीं बन जाता, बल्कि उसका शुभ या पाप प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि उस ग्रह की दूसरी राशि कहाँ स्थित है। यदि चंद्र जिसकी केवल एक ही राशि होती है वह केन्द्रेश बन जाय तो वह शुभ प्रभाव देंगा या अशुभ प्रभाव यह इस बात पर निर्भर करता है कि लग्नेश उस ग्रह को मित्र मानता है या शत्रु (इससे यह तात्पर्य नहीं है कि ग्रह लग्नेश को क्या मानता है)।
2. केन्द्र का स्वामी यदि क्रूर ग्रह (नैसर्गिक अशुभ ग्रह) हो तो वह अपना अशुभ फल खो देता है परंतु वह शुभ नहीं बन जाता, बल्कि उसका शुभ फल या पाप फल होना इस बात पर निर्भर करता है कि उस ग्रह की अन्य दूसरी राशि का क्या स्वामित्व है। यदि सूर्य जिसकी केवल एक ही राशि होती है वह केन्द्रेश बन जाय तो वह शुभ प्रभाव देगा या अशुभ प्रभाव, यह इस बात पर निर्भर करता है कि लग्नेश उस ग्रह को मित्र मानता है या शत्रु (इससे यह मतलब कदापि नहीं है कि ग्रह लग्नेश को क्या मानता है)
3. नैसर्गिक शुभ ग्रहः गुरु, शुक्र

   नैसर्गिक अशुभग्रहः मंगल, शनि

   क्रूर ग्रहः सूर्य

   बुधः शुभ ग्रहों का साथ तो शुभ, अकेला हो तो भी शुभ, अशुभ ग्रहों के साथ अशुभ होता है।

   चंद्रमाः शुक्ल पक्ष अष्टमी से कृष्ण पक्ष अष्टमी तक शुभ

   कृष्ण पक्ष अष्टमी से शुक्ल पक्ष अष्टमी तक अशुभ।

   राहु-केतुः जिसके साथ जहाँ हो, जिस राशि में हो वैसा ही फल देते हैं।
4. त्रिकोणेश सदैव ही शुभ फल देते हैं। उनकी शुभता में कमी अथवा वृद्धि का प्रभाव दो बातों पर निर्भर करता है

1. उस ग्रह की मूलत्रिकोण राशि कहाँ स्थित है।
2. उस ग्रह की दूसरी राशि कहाँ स्थित है।

उदाहरण स्वरूप कुंभ लग्न में बुध पंचमेश होकर शुभ है परंतु उसकी अन्य दूसरी राशि अष्टम भाव में है जो शुभत्व में कमी करती है साथ ही उस ग्रह की मूलत्रिकोण राशि भी अष्टम में है अतः अशुभ प्रभाव बढ़ गया, अतः बुध शुभत्व प्राप्त होते हुए भी अशुभ प्रभाव भी देगा अतः मिश्रित फलदायक होगा।

5. त्रिषढ़ाय भाव के स्वामी सदैव अशुभ फल देते हैं। उनके अशुभफल में बढ़ोतरी होगी अथवा कमी यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस ग्रह की अन्य दूसरी राशि कहाँ स्थित है, साथ ही उस ग्रह की मूलत्रिकोण राशि कहाँ स्थित है।

त्रिकोण भावः प्रथम, पंचम, और नवम

केन्द्र भावः प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम

त्रिक भावः षष्टम, अष्टम और द्वादश

त्रिषढ़ाय भावः तृतीय, षष्टम और एकादश

उपचय भावः तृतीय, षष्टम, दशम और एकादश

सम भावः द्वितीय और द्वादश

सदैव अशुभः अष्टम भाव।

6. उपरोक्त कुंडली में सामान्य बली त्रिकोण लग्न है (+1), लग्न से बली त्रिकोण पंचम भाव है (+2), एवं पंचम से बली त्रिकोण नवम भाव (+3)

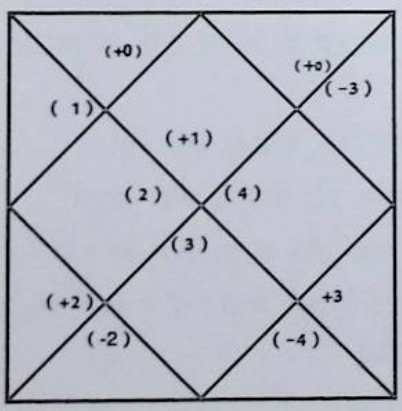

है। यहाँ इनका शुभत्व बली है।

7. कुंडली में सामान्य बली केन्द्र लग्न (1) है, लग्न से बली केन्द्र चतुर्थ (2) है, चतुर्थ से बली केन्द्र सप्तम (3) है, सप्तम से बली केन्द्र दशम (4) है। यहाँ पर इनका समत्व बली है शुभ अशुभ से उनका कोई अभिप्राय नहीं है।

8. कुंडली में सामान्य पापी ग्रह तृतीयेश (-1) है, तृतीयेश से अधिक पापी ग्रह षष्ठेश (-2) है और षष्टेश से अधिक पापी ग्रह एकादशेश (-3) है। यहाँ इनका पाप प्रभाव बली है।

9. अष्टमेश सबसे अधिक पापी (-4) होता है, परंतु दो अवस्थाओं में ग्रह को अष्टमेश होने का दोष नहीं लगता है।

क. सूर्य एवं चद्रमा जिनकी एक ही राशि का स्वामित्व प्राप्त है यदि यह अष्टमेश हो तो इनको अष्टमेश होने का दोष नहीं लगता, परंतु अष्टम भाव में विराजमान होना अलग बात है और अष्टम भाव में बैठने का दोष अवश्य ही लगेगा।

ख. लग्नेश को अष्टमेश होने का दोष नहीं लगता। यह अवस्था केवल मेष एवं तुला लग्न में ही संभव होती है।

10. द्वितीयेश एवं द्वादशेश सम फल प्रद होते हैं। इनका शुभ अथवा अशुभ फल इस बात पर निर्भर करेगा कि उस ग्रह की दूसरी राशि कहाँ स्थित है। यदि सूर्य या चंद्रमा द्वितीयेश या द्वादशेश हों तो वह जिस ग्रह के साथ बैठेगे वैसा ही प्रभाव लिये होंगे अथवा जिस राशि में बैठेगे उसके स्वामी के अनुसार शुभ अथवा अशुभ का निर्णय करेंगे।

11. कोई भी ग्रह कुंडली में व्यवहारिक रूप से समफल प्रद नहीं हो सकता ऐसे में समफल प्रद ग्रहों का शुभ अथवा अशुभ फल दो बातों पर निर्भर करता है।

क. वह किस ग्रह के साथ है और उस ग्रह का क्या स्वामित्व है।

ख. लग्नेश उस सम ग्रह को क्या मानता है।

12. सप्तमेश जब द्वादशेश भी हो तो वह कुंडली के लिये अशुभ ग्रह बन जाता है।

13. किसी कुंडली में नैसर्गिक अशुभ एवं क्रूर ग्रह त्रिषढ़ाय भावों में हो तो शुभ फल प्रद होते है। वहीं नैसर्गिक शुभ ग्रह केन्द्र एवं त्रिकोणों में शुभफल प्रद होते हैं। अष्टम एवं द्वादश स्थान यदि रिक्त हो तो अच्छे फल होते हैं। सामान्यत: एकादश स्थान में सभी ग्रह अच्छा लाभ देने में सक्षम होते हैं।

मेष लग्न

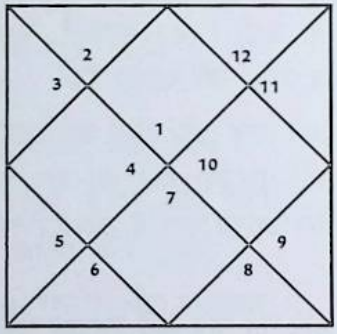

1. सूर्य–त्रिकोणेश है इसलिये शुभ है।
2. चंद्रमा–समफलप्रद परंतु लग्नेश का मित्र है इसलिये शुभ है।
3. मंगल–लग्नेश और अष्टमेश दोष रहित है इसलिये शुभ है।
4. बुध–तृतीयेश और षष्ठेश है इसलिये अति अशुभ है।
5. बृहस्पति–नवमेश और द्वादशेश है इसलिये शुभ है।
6. शुक्र–द्वितियेश और सप्तमेश लग्नेश से भी सम अत: जिसके साथ जहाँ बैठे वैसा ही प्रभाव देगा।
7. शनि–दशमेश (सम) और एकादशेश (अशुभ) है इसलिये अशुभ है।

वृषभ लग्न

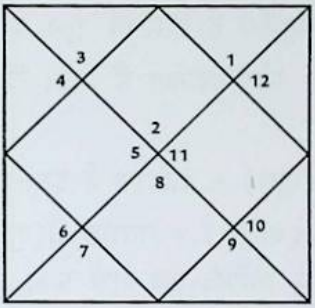

1. सूर्य– चतुर्थेश (सम) परंतु लग्नेश का शत्रु है इसलिये अशुभ है।
2. चंद्रमा– तृतीयेश है इसलिये अशुभ है।
3. मंगल– सप्तमेश + द्वादशेश है इसलिये अशुभ है।
4. बुध– द्वितीयेश (सम)+ पंचमेश (शुभ) है इसलिये शुभ प्रभाव है।
5. बृहस्पति– अष्टमेश (अशुभ) + एकादशेश (अशुभ) है इसलिये अशुभ प्रभाव है।
6. शुक्र– लग्नेश (शुभ)+ षष्ठेश (अशुभ)-मूलत्रिकोण राशि भी षष्टम में है इसलिये मिश्रित एवं शुभ फल है।
7. शनि– नवमेश (शुभ) + दशमेश (सम) है इसलिये योगकारक एवं अतिशुभ है)

मिथुन लग्न

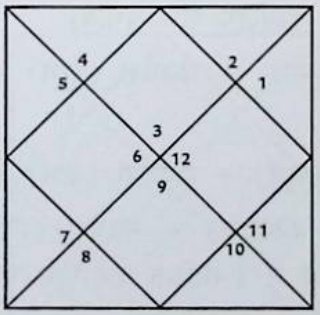

1. सूर्य– तृतीयेश है इसलिये अशुभ है।
2. चंद्रमा– द्वितीयेश है इसलिये जिसके साथ या जहाँ बैठे वैसा ही प्रभाव होगा।

3. मंगल– षष्ठेश (अशुभ) + एकादशेश (अशुभ) है इसलिये अतिअशुभ है।
4. बुध– लग्नेश + चतुर्थेश है इसलिये शुभ है।
5. बृहस्पति– सप्तमेश और दशमेश है अतः जिसके साथ वैसा ही प्रभाव सम्मिलित होगा।
6. शुक्र– पंचमेश है (शुभ) + द्वादशेश है इसलिये मिश्रित और शुभ प्रभाव।
7. शनि– अष्टमेश है (अशुभ) + नवमेश है(शुभ) और मूल त्रिकोण राशि नवम में है इसलिये मिश्रित एव शुभ फल प्रद।

कर्क लग्न

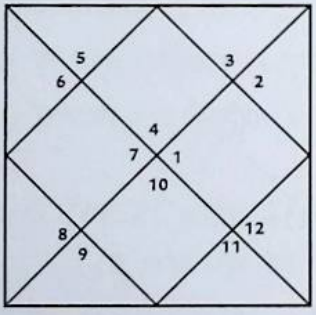

1. सूर्य– द्वितियेश (सम) जिसके साथ होगा, जहाँ होगा वैसा ही प्रभाव देगा।
2. चंद्रमा– लग्नेश है इसलिये शुभ प्रभाव।
3. मंगल– दशमेश (सम) + पंचमेश (शुभ) है इसलिये योगकारक एवं अतिशुभ।
4. बुध– तृतीयेश (अशुभ) + द्वादशेश (सम) है इसलिये अशुभ फलप्रद।
5. बृहस्पति– षष्ठेश (अशुभ) + नवमेश (शुभ) है इसलिये और मूल त्रिकोण राशि षष्टम में है मिश्रित एवं शुभ फल।
6. शुक्र– चतुर्थेश (सम) + एकादशेश (अशुभ) है इसलिये अशुभ फलप्रद।
7. शनि– सप्तमेश (सम) + अष्टमेश (अशुभ) है इसलिये अशुभ फलदायक।

सिंह लग्न

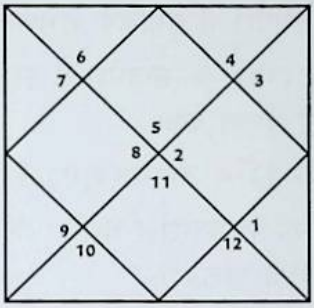

1. सूर्य– लग्नेश है शुभ प्रभाव।
2. चंद्रमा– द्वादशेष (सम) जिसके साथ होगा या जहाँ होगा वैसा ही प्रभाव देगा।
3. मंगल– चतुर्थेश (सम) + नवमेश (शुभ) योगकारक एवं अतिशुभ प्रभाव।
4. बुध– द्वितियेश (सम) + एकादशेश (अशुभ) है इसलिये अशुभ फलप्रद।
5. बृहस्पति– पंचमेश (शुभ) + अष्टमेश (अशुभ) और मूल त्रिकोण राशि पंचम में है इसलिये मिश्रित एवं शुभ फल प्रद।
6. शुक्र– तृतीयेश (अशुभ) + दशमेश (सम) है इसलिये अशुभ प्रभाव
7. शनि– षष्ठेश (अशुभ) + सप्तमेश (सम) है इसलिये अशुभ प्रभाव

कन्या लग्न

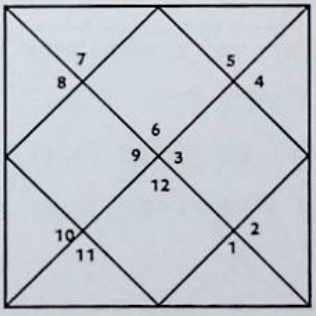

1. सूर्य– द्वादशेश (सम): जिसके साथ होगा या जहाँ होगा वैसा ही प्रभाव देगा।
2. चंद्रमा– एकादशेष (अशुभ) है इसलिये अशुभ फलप्रद।

3. मंगल– तृतीयेश (अशुभ) + अष्टमेश (अशुभ) है इसलिये अतिअशुभ।
4. बुध– लग्नेश + दशमेश है इसलिये शुभफल प्रद।
5. बृहस्पति– चतुर्थेश (सम) + सप्तमेश है इसलिये जिसके साथ होगा एवं जहाँ होगा वैसा ही प्रभाव देगा।
6. शुक्र– द्वितियेश (सम) + नवमेश(शुभ) है इसलिये शुभफलप्रद।
7. शनि– पंचमेश(शुभ) + षष्ठेश (अशुभ) और मूल त्रिकोण राशि षष्ठम में है इसलिये मिश्रित फलप्रद।

तुला लग्न

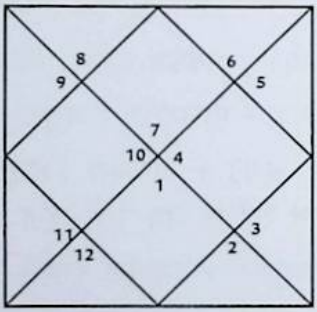

1. सूर्य– एकादशेश (अशुभ) है इसलिये अशुभफल प्रद।
2. चंद्रमा– दशमेश (सम) एवं लग्नेश का शत्रु है इसलिये अशुभफल प्रद।
3. मंगल– द्वितियेश(सम) एवं सप्तमेश(सम) अतः जिसके साथ होगा या जहाँ होगा वैसा ही प्रभाव देगा।
4. बुध– नवमेश (शुभ) एवं द्वादशेश (सम) अतः शुभ फलप्रद।
5. बृहस्पति– तृतीयेश (अशुभ) एवं षष्ठेश (अशुभ) है इसलिये अति अशुभफलप्रद।
6. शुक्र– लग्नेश (शुभ) एवं अष्टमेश (दोषरहित)है इसलिये शुभ फलप्रद।
7. शनि– चतुर्थेश (सम) एवं पंचमेश (शुभ) (योगकारक) एवं अतिशुभ फलदायक।

वृश्चिक लग्न

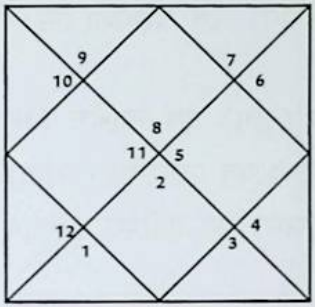

1. सूर्य– दशमेश (सम) है एवं लग्नेश का मित्र है इसलिये शुभ फलप्रद।
2. चंद्रमा– नवमेश (शुभ) है इसलिये शुभ फलप्रद।
3. मंगल– लग्नेश (शुभ) एवं षष्ठेश (अशुभ) एंव मूलत्रिकोण राशि षष्ट में है। अतः मिश्रित फलदायक।
4. बुध– अष्टमेश (अशुभ) एवं एकादशेश (अशुभ) है इसलिये अतिअशुभ फल दायक।
5. बृहस्पति– द्वितियेश (सम) एवं पंचमेश (शुभ) है इसलिये शुभ प्रभाव।
6. शुक्र– सप्तमेश (सम) एवं द्वादशेश (सम) सप्तम का द्वादश से संबंधहै इसलिये अशुभ प्रभाव।
7. शनि– तृतीयेश (अशुभ) एवं चतुर्थेश (सम) है इसलिये अशुभ प्रभाव।

धनु लग्न

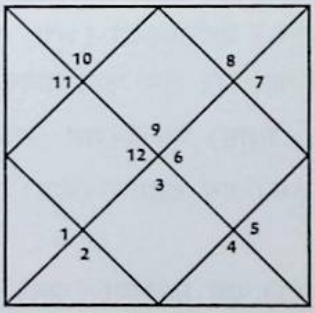

1. सूर्य– नवमेश (शुभ) है इसलिये शुभ प्रभाव।
2. चंद्रमा– अष्टमेश (दोष रहित) है इसलिये मिश्रित फलप्रद।

3. मंगल– पंचमेश (शुभ) एवं द्वादशेश(सम) है इसलिये शुभ प्रभाव।
4. बुध– सप्तमेश (सम) एवं दशमेश(सम) जिसके साथ होगा वैसा ही प्रभाव होगा।
5. बृहस्पति– लग्नेश (शुभ) एवं चतुर्थेश (सम) है इसलिये शुभफलप्रद।
6. शुक्र– षष्ठेश (अशुभ) एवं एकादशेश (अशुभ)है इसलिये अतिअशुभ प्रभाव।
7. शनि– द्वितियेश (सम) एवं तृतीयेश (अशुभ) है इसलिये अशुभ प्रभाव।

मकर लग्न

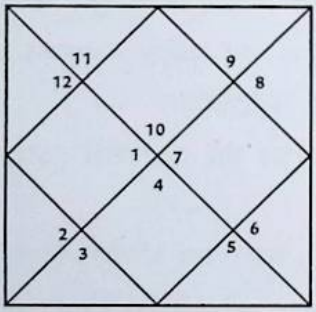

1. सूर्य– अष्टमेश (दोष रहित) है इसलिये मिश्रित प्रभाव।
2. चंद्रमा– सप्तमेश (सम) जिसके साथ बैठा होगा वैसा ही प्रभाव होगा।
3. मंगल– चतुर्थेश (सम) एवं एकादशेश (अशुभ) है इसलिये अशुभ प्रभाव।
4. बुध– षष्ठेश (अशुभ) एवं नवमेश (शुभ) एवं मूलत्रिकोण राशि नवम में है इसलिये मिश्रित, एव शुभ फल दायक।
5. बृहस्पति– तृतीयेश (अशुभ) एवं द्वादशेश (सम)है इसलिये अशुभ प्रभाव।
6. शुक्र– पंचमेश (शुभ) एवं दशमेश (सम) (योगकारक)एवं अति शुभ प्रभाव।
7. शनि– लग्नेश (शुभ) एवं द्वितियेश (सम) है इसलिये शुभप्रभाव।

कुंभ लग्न

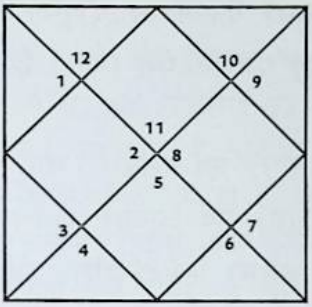

1. सूर्य– सप्तमेश (सम) एवं लग्नेश का शत्रु है इसलिये अशुभफल प्रद।
2. चंद्रमा– षष्ठेश (अशुभ) है इसलिये अशुभ प्रभाव।
3. मंगल– तृतीयेश (अशुभ) एवं दशमेश(सम) है इसलिये अशुभ फलप्रद।
4. बुध– पंचमेश (शुभ) एवं अष्टमेश (अशुभ) एवं मूलत्रिकोण राशि अष्टम में है इसलिये मिश्रित एवं शुभ फल प्रद।
5. बृहस्पति– द्वितियेश (सम) एवं एकादशेष (अशुभ)है इसलिये अशुभ प्रभाव।
6. शुक्र– चतुर्थेश (सम) एवं नवमेश (शुभ) (योगकारक)एवं अतिशुभ प्रभाव।
7. शनि– लग्नेश (शुभ) एवं द्वादशेश (सम) है इसलिये शुभ प्रभाव।

मीन लग्न

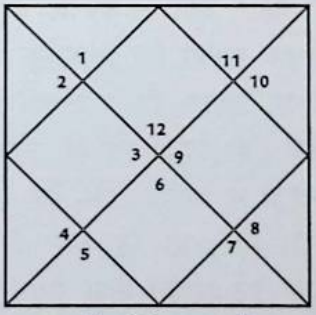

1. सूर्य–षष्ठेश (अशुभ)–अशुभ है लेकिन लग्नेश का मित्र इसलिये मिश्रित फल।

2. चंद्रमा–पंचमेश (शुभ) है इसलिये शुभ प्रभाव।
3. मंगल–द्वितियेश (सम) एवं नवमेश (शुभ) है इसलिये शुभ प्रभाव।
4. बुध–चतुर्थेश (सम) एवं सप्तमेश (सम) है इसलिये जिसके साथ वैसा ही प्रभाव।
5. बृहस्पति–लग्नेश (शुभ) एवं दशमेश (सम) है इसलिये शुभ प्रभाव।
6. शुक्र–तृतीयेश (अशुभ) एवं अष्टमेश (अशुभ) है इसलिये अतिअशुभ।
7. शनि–एकादशेश (अशुभ) एवं द्वादशेश (सम)है इसलिये अशुभ प्रभाव फल।

गोचरस्थ एवं अगोचरस्थ ग्रह

जो ग्रह उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि, स्वग्रही, मित्र राशि में हो, एवं शत्रु क्षेत्री, नीचस्थ राशि, अस्तंगत न हो और जिसका षष्ठम, अष्टम एवं द्वादश भाव से कोई संबंध ना हो तो वह ग्रह गोचरस्थ ग्रह कहलाते हैं।

जो ग्रह शत्रु क्षेत्री, नीचस्थ, ग्रह युद्ध में पराजित ग्रह, अस्तंगत ग्रह या षष्ठम, अष्टम, द्वादश भाव से संबंधित ग्रह हो तो वह ग्रह अगोचरस्थ ग्रह कहलाते हैं। गोचरस्थ ग्रह शुभ प्रभाव देने में सक्षम होते हैं और अगोचरस्थ ग्रह अपना शुभ प्रभाव देने में सक्षम नहीं होते।

इन्दू लग्न

कुंडली में लग्न से नवमेश तथा चंद्रमा से नवमेश को देखें एवं उनकी कलाओं का योग करें तो इन्दू लग्न आता है। विभिन्न ग्रहों की कलाएँ निम्नलिखित हैं:–

सूर्य–30, चन्द्र–16, मंगल-6, बुध–8, बृहस्पति-10, शुक्र-12, शनि-1

यदि यह योग 12 से अधिक हो तो उसमें से 12 को घटा दें जब तक वह 12 या 12 से कम ना हो जाय। प्राप्त संख्या को चंद्रमा जहाँ बैठा हो वहाँ से गिने जो राशि प्राप्त हों वही इन्दू लग्न है। एवं उस राशि का स्वामी इन्दू लग्नेश है इस इन्दू लग्न एवं इन्दू लग्नेश के साथ जितने योग सम्मिलित होगें, उस कुंडली में धन योग उतना ही प्रबल होगा।

भावतः भावम् सिद्धांत

भावत भावम सिद्धांत से अभिप्रायः आर्ष पद्धति से है। इस पद्धति के अनुसार हमें जिस भाव के कारकत्व का विचार करना है उसे लग्न बना लें तथा वहाँ से उस भाव की गितनी करनी चाहिये इस प्रकार यदि द्वितिय भाव के कारकत्व का विचार करना हो तो द्वितिय भाव को लग्न बनाकर वहाँ से द्वितिय भाव का भी विचार करें अतः द्वितिय से द्वितिय भाव तृतीय भाव है।

मुख्य रूप से किसी भी भाव की Shadow (परछाई) भावतः भावम् सिद्धांत है और उस भाव संबंधी सूक्ष्म विचार हेतु भावत भावम् सिद्धांत लागू करना चाहिये इस प्रकार विभिन्न भावों के कारकत्व के लिये निम्नलिखित भावों को भी देखना चाहिये।

भाव		भावतः भावम्
द्वितिय	द्वितिय से द्वितीय	तृतीय भाव
तृतीय	तृतीय से तृतीय	पंचम भाव
चतुर्थ	चतुर्थ से चतुर्थ	सप्तम भाव
पंचम	पंचम से पंचम	नवम भाव
षष्ठम	षष्टम से षष्टम	एकादश भाव
अष्टम	अष्टम से अष्टम	तृतीय भाव
नवम	नवम से नवम	पंचम भाव
दशम	दशम से दशम	सप्तम भाव
एकादश	एकादश से एकादश	नवम भाव
द्वादश	द्वादश से द्वादश	एकादश भाव

यहाँ लग्न का भावत भावम् स्वयं लग्न ही है अतः लग्न इसीलिये स्वयं में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

ग्रहों से बनने वाले संबंध

किसी भी कुंडली में ग्रहों से मुख्य रूप से चार प्रकार के संबंध बन सकते हैं:–

1. **युति संबंधः**–जब दो ग्रह आपस में एक साथ बैठे हों तो उस एक साथ की ग्रह स्थिति को युति संबंध कहते हैं।
2. **परस्पर दृष्टि संबंधः**–जब दो ग्रह आपस में एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखते हों तो उसे परस्पर दृष्टि संबंध कहते हैं।
3. **क्षेत्र संबंधः**–जब दो ग्रह आपस में एक दूसरे की राशि में बैठे हो तो उसे क्षेत्र संबंध कहते हैं, जैसे शनि धनु राशि (गुरु की राशि) में हो और गुरु मकर राशि (शनि की राशि) में विद्यमान हो।
4. **अत्येत्तर दृष्टि संबंध (क्षेत्र दृष्टि संबंध):**–जब कुंडली में कोई एक ग्रह दूसरे ग्रह की राशि में विघमान हों और उस राशि का स्वामी उसे (पूर्ण दृष्टि से) देख रहा हो। उदाहरण स्वरूप बृहस्पति शनि की मकर राशि में बैठा हो और शनि वृश्चिक राशि से तृतीय पूर्ण दृष्टि से गुरु को देख रहा हो तो ऐसे संबंध को क्षेत्र दृष्टि संबंध कहा जाता है।

ग्रहों के प्रसिद्ध नाम			
ग्रहों के प्रसिद्ध नाम	अंग्रेजी में नाम	अरबी फारसी नाम	पर्यायवाची संस्कृत शब्द
सूर्य	Sun	शम्स आफताब फारसी	आदित्य, अर्क, अर्यमा अंशुमाली, ईषापति, कर्मसाक्षी, ग्रहपति, चण्डांशु, चित्रभानु, दिवाकर, दिनकर, दिनमणि, दिनेश, दिनकृत, प्रभाकर, पद्माक्ष, भग, भानु, रवि, लोकबन्धु, विभाकर विभास्वत्, विरोचन विभावसु, दिवस्वान्, सविता सहस्त्रांशु, हंस, भास्कर, मार्तण्ड, मिहिर, मित्र, दीप्तरश्मि।
चन्द्रमा	Moon (Cynthia)	कमर फारसी माह	अब्ज, इन्दु, कलानिधि, चन्द्र जैवातृक, द्विजराज, नक्षत्रेश, निशापति, निशाकर मयंक, राकेश, रजनीश विधु, मनोज, शुभ्रांशु, सोम, शशि, शशांक, शीतरश्मि, सुधा कर, हिमांशु, हिमकर, शीतांशु उडुपति, तारापति, हिमगु।

मंगल	Mars	मर्रीख बेहराम	अंगारक, कुज, भौम, भूसुत, लोहितांग, क्षितिज, अवनिज, क्रूरनेत्र, धराज, क्षितिनंदन
बुध	Mercury	उतारद तीर	इन्दुसुत, चन्द्रपुत्र वित्, सौमय, रोहिणेय श्यामगाव, हेम्न, तारातनय तारासूनु
गुरु	Jupiter	मुश्तरी अहूरमकद	आंगिरस, अंगिरा, आर्य गुरु धिषण, जीव, सुराचार्य, वाचस्पति, सुरगुरु, प्रशांत देवगुरु, त्रिदिवेशबनद्य
शत्रु	Venus	जुहरी नाहीद	आस्फुजित, कवि, काव्य, भार्गव, भृगु, भृगुसुख, दैत्यगुरु सूनू, अच्छ, काण, दानवेज्य,
शनि	Saturn	जुहुल केदवान	असित, आर्कि, कोण, छायात्मज, मांदि, शनैश्चर, सूर्यसूनु, सूर्यपुत्र रविज, अर्कपुत्र, अर्कपुत्र, सौरि, नील, भास्करि
राहु	Dragon's Head (Node)	रास	अंगु, तम, विधुन्तुद, स्वभनि अभि, कृष्णांग, कपिलास, दीर्घ, असुर सर्प, फणि, आगव।
केतु	Dragons Tail (Node)	जनव	ध्वज, शिखि, सहपुच्छ

नोट:—मंगल-भूमिसुत, बुध चन्द्रपुत्र तथा शनि—सूर्यपुत्र माना गया है।

सूर्य को ग्रहपति, चन्द्रमा की तारापति (नक्षत्र), बृहस्पति को इन्द्र तथा देवताओं का गुरु, शुक्र को दैत्यों का गुरु ऐसा कहते हैं।

राशियों के नाम

राशि का प्रसिद्ध नाम	अंग्रेजी नाम	पर्यायवाची संस्कृत शब्द	फारसी नाम	अरबी नाम
मेष	Aries (Ram)	अज, करण, क्रिया, एडक, छाग, छगल (मेठू, उर-भ्र, अणीयु, वृष्णि, अम्बु) (ये गाडर-मेठे के नाम हैं) प्रथम, (वस्त, विश्व, आद्य)	बुरे	हमल
वृषभ	Taurus(Bull)	(वृषभ, तावुरी) (उक्षण, भद्र, गत्व बलीवर्द, गो, वृषभ (ये बैल के नाम है)।		मोर
मिथुन	Gemini (Twins)	(जितुम, नृयुक् (यम)	दोपेकर	जीजा
कर्क	Cancer(Crabl)	(कुलीर, कर्कट, आटक, इन्द्रु)	खरचंग	सरतान
सिंह	Leo(Lion)	(लेय, कंठीरव) (मृगेन्द्र पंचास्य, हर्यक्ष, केसरी, हरि, वनराज ये सिंह के नाम है।)	शीर	असद
कन्या	Virgo(Virgin)	(पाथोन) (अबला, तन्वी,	खुशे तरुणी, कुमारी)	सम्बला
तुला	Libra(Scalpel)	(जूक) तौलि, घट)	तराजु	मीजा

वृश्चिक	Scorpio	(कौर्प्य, अलि, द्रुण कच्चदुम अकख अष्टम, कौपि।)
धनु	Sagittarius (Centaur bowman)	(चाय, तौक्षिक, धन्धी, शरासन) कमान कोस
मकर	(Capricorn)	(मृग, आकीकरो वक्र) नक, एन बोझ जद्दी
कुंभ	Aquarius (Watercarrier)	(घट, हद्रोग, घटस्तीय, धरामिधान। दुम दुल
मीन	Pisces (Fishes)	अन्यभ, ज्ञय, अन्त्यभ, माही दुत क्रिया, रिप्फ, मत्स्य, पृथुरीम।) राशि= Singh of Zodiac ऋक्ष संधि Cusp

भावों के प्रसिद्ध नाम

प्रथम	House of ascendant	(लग्न, उदय, आद्य, तनु, जन्म, (विलग्न, होय)
द्वितीय	II House	(स्व, कुटुम्ब, वाक्, अर्थ, मुक्ति, नयन)
तृतीय	III House	(दुश्चिक्य, विक्रम=पराक्रम, सहोदर, सहज, वीर्य, धैर्य)
चतुर्थ	IV House	(सुख, पाताल, वृद्धि, हिबुक, क्षिति) (मातृ, विद्या, चतुष्टय, तुर्य, वेश्म, यान, अम्बु, गेह, बन्धु, मित्र)
पंचम	V House	(घो, बुद्धि, पितृ, नंदन, पुत्र, देवराज) पंचक)
षष्ठ	VI House	(रोग, अंग, शस्त्र, भय, रिपु, क्षत)

सप्तम	VII House	(जामित्र, द्यून, काम, गमन कलत्र, संपत, अस्त)
अष्टम	VIII House	(आयु, रन्ध्र, रण, मृत्यु, विनाश)
नवम	IX House	(धर्म, गुरु, शुभ, तप, नव, लाग्य, अंक)
दशम	X House Mid-Heaven	(व्यापार, मेषूरण, मध्य, मान, ज्ञान) (राज, त्रास्पद, कर्म, ख, व्योम)
एकादश	XI House	(उपान्त्य, भव, आय, लाभ)
द्वादश	XII House	(व्यय, अन्त्यम)

	ग्रहों के कारकत्त्व
सूर्यः	आत्मा, शक्ति, तीक्ष्णता, अग्नि, शिवजी की उपासना, राजा का सहयोग, कडवा स्वाद, पिता, आत्मज्ञान, महत्त्वाकांक्षा, हड्डियाँ, बल, पराक्रम, पेट, वन या जंगल, राजा, अध्यक्ष, पित्त, सिर सम्बन्धित रोग, तांबा, रक्त, सात्विकता, लाल चन्दन, केसर, मोटा सूत, अल्पकेशी हृदय (दिल), सरकार, स्वास्थ्य, औषधि , दायी आँख, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, शासकीय अधिकार, बड़ी कम्पनियों के मालिक, मान-सम्मान नेतागिरी, धार्मिकता, राजनीतिक विषय, विभिन्न देशों के बीच के सम्बन्ध धर्मगुरु, धार्मिक-संस्थायें गेहूं, मिर्गी रोग।
चन्द्रमाः	बुद्धि, फूल, सुगन्ध, कफ, मिर्गी, मनोभाव, निद्रा, सुख, जलीय पदार्थ, चाँदी, यात्राएं, माता, मोती, क्षय रोग, मन, उदर, शहद, हंसी-मजाक, नमकीन या खारापन, रक्त प्रवाह, सुन्दर या रेशमी वस्त्र, दया, औषधि, समुद्र उत्पाद, पेट्रोलियम पदार्थ, बांया नेत्र, फेरी वाले, जल परिवहन, मंदिरा, तेल, रसायन द्रव्य, चंचलता, कलात्मक व्यवहार, कल्पनाशक्ति, खेती-बाड़ी, लोकतन्त्र,, नौसेना, महिलाएँ, जनता के विचार, सामाजिक कार्य एवं सेवाएं, ट्रेवल-एजेन्सी, नर्सिंग, कपड़ों का उद्योग, दूध, होटल।
मंगलः	साहस, पराक्रम, भूमि तथा जमीन, माँसल-शक्ति, युद्ध, प्रशासक, चोर, शत्रु, संघर्ष, क्रोध, अग्नि, विवाद, पित्त, गर्मी, जख्म एवं घाव, मंत्री, सेनापति, मिट्टी के बने बर्तन, पौरुष शक्ति, जला हुआ स्थान, रक्त, षड्यंत्र, भाई-बहन, यंत्रकार, मुकदमेवाजी, वैचारिक मतभेद, सेना, आंतकवाद, दुर्घटनाएं, भूकम्प, महामारी, सुनामी, तेज हवाएं तथा तूफान, सीमा विवाद, घुसपैठ, हथियार तथा बम, जनता का आक्रोश, ज्वालामुखी, मठ, चोरी, झूठ।
बुधः	शिक्षा तथा विद्या, गणित व सांख्यिकी बुद्धिमानी, विद्धता, वाणी, लेखन कार्य, हरा रंग, ज्योतिष शास्त्र, वाणिज्य व्यापार,

	नपुंसक, त्वचा, काँसा धातु, नाक, कान, गला, तन्त्र-मन्त्र, नृत्य, भक्ति, तबला, मृदंग, हंसी-मजाक, भगवान विष्णु की उपासना, दूर संचार माध्यम, रेल-परिवहन, मुद्रण-प्रकाशन, साहित्य, पत्रकारिता, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, कोरियर सेवा, लिखित कार्य शिक्षण संस्थाएं, स्कूल, पुस्तकालय, व्याख्याता, लेखक, सम्पादक, संवाददाता, नाट्य समारोह, पुस्तक विक्रेता, आकर्षण, मूर्ख, जड़बुद्धि, मानसिक रोग, नसो से सम्बन्धित बिमारियाँ, बुद्धिजीवी, मनोरंजन जगत, लिखित समझौते, मौसम विज्ञान में बदलाव, तक-वितर्क की क्षमता, प्रबंधन, मामा, आवागमन।
बृहस्पतिः	गुरु, ब्राह्मण, शिक्षक, मंत्र, बुद्धि, विद्या धार्मिक एवं सामाजिक कर्त्तव्य, विशाल काया, ज्योतिष शास्त्र, यश, कीर्ति, पाचन क्रिया के रोग, वेद-शास्त्र, परोपकार, निष्पक्षता, चर्बी तथा मोटापा, प्रवचक, मन्त्रबल, विशिष्ट ज्ञान, सात्विकता, स्वर्ण, पुखराज, विवेक, ज्ञान, हल्दी केसर, दार्शनिक, नीतिवान, बैंक, धन, खजाना, धार्मिक संस्थान, राजस्व आय, न्यायिक कार्य, न्यायपालिका, लम्बी यात्रा, सन्तान, प्रबंधन, कानूनी शिक्षा।
शुक्रः	विवाह, परिधान एवं पोशाक, स्त्री, काम-इच्छा, फूल, यौवन, राजसिक प्रवृत्ति, भैंगापन, आंखों की रोशनी, कविता, नृत्य, गीत, संगीत, सुख-, वैभव, सौन्दर्य, भौतिक सुख-सम्पदा, चाँदी, हीरा, आभूषण, लक्ष्मी या पार्वती का उपासक, दिन में माता का कारक, वीर्य, काले-केश, तिरछी नजर, खट्टापन, मंत्री सभी प्रकार के वाहन, घुंघराले बाल, सिनेमा, फ्रिज, एयरकन्डिशन, हीरे ज्वाहरात, ब्यूटी-पॉर्लर, सौन्दर्य सामग्री, फैशन, मॉडलिंग, इत्र एवं सुगन्धित पदार्थ, होटल, राजसी भोजन, नकली आभूषण, फोटोग्राफी, मंच कलाकार, कला प्रतियोगिता राष्ट्रीय मुद्रा, उत्सव, फिल्में, तलाक दर, सामाजिक कार्य एवं बातें, मुद्रा का मूल्य, न्यायपालिका।
शनिः	आलस्य, शारीरिक कष्ट, मृत्यु, नौकर तथा सेवक वर्ग, आयुष्य, नपुसंकता, निम्नजाति वर्ग, वृद्धावस्था, मैले एवं गन्दे वस्त्र, बुरे

	विचार, काला रंग, क्रूर कर्म, लोहे की वस्तुएँ, शुद्र, संस्कृति का ज्ञान, प्राचीन विद्या का ज्ञान, लंगड़ापन, कृषि वर्ग, बिखरे हुए बाल, कठोर बाल, बड़े दाँत, भैंस, तेल, लोकतन्त्र, हड़ताल, निर्यात में गिरावट, शहीद, देशभक्त, खनिज पदार्थ, क्रांतिकारी वर्ग, बैंक-घोटाला, आपातकालीन स्थिति, प्राकृतिक आपदाएँ, राष्ट्रीय शोक, दिवालियापन, चमड़ा, नेतृत्व की क्षमता एवं गुण, राजनीति, शारीरिक श्रम, एकान्त वातावरण, कूड़ा घर तथा कबाड़ खाना, रात्री में पिता का कारक।
राहुः	कुतर्क एवं बहस, कठोर व दुःखदायी वचन, निम्नजाति, म्लेच्छ जातियाँ, नास्तिक प्रवृत्ति, जुआँ, विदेश यात्रा, भ्रम, संशय, उलझन, झूठा, सर्प स्वप्न का फल, आँधी तूफान, खाँसी, दुर्गा का उपासक, काले बादल, घना अंधेरा, रेंगने वाले जीव, दादा का कारक, कपट एवं ठग, हिंसात्मक व्यवहार, तंत्र-मंत्र सम्बन्धित क्रियाए, जादूगर, संक्रमण, अपंगता, मुस्लिम वर्ग, दादागिरी, मिर्गी, भूत-प्रेत की बाधा, पागलपन, स्नायु-तंत्र की दुर्बलता, कुकर्म, गुप्तचर, दंगे-फसाद, असामाजिक तत्व, अचानक घटने वाली घटनाएँ, हवाई-जहाज, इलैक्ट्रॉनिक्स, रिश्वत, कम्प्यूटर हार्डवेयर, विदेश के लिए इमीग्रेशन, दांतों के रोग।
केतुः	गणेश की उपासना, चण्डी देवी, वैद्य, चिकित्सक, कुत्ता, मुर्गा, मुक्ति एवं मोक्ष, महानतप, तन्त्रशास्त्र, संक्रमणता, नाना का कारक ड्रग्स, आध्यात्म, वेदान्त, फोड़े-फुन्सी, बारीक कीटाणु, सींग वाले पशु, झण्डा एवं ध्वजा, अफवाहें, मिथ्या आरोप, छल कपट, नास्तिक प्रवृत्ति, प्रेत बाधा, सभी प्रकार के चर्म रोग, धुंआ एवं धुन्ध, जख्म तथा घाव, गोपनीय कार्य, शमशान भूमि, जटिल रोग, रोग का समझ न आना कृतिम वस्तुएँ, जलन होना, मानसिक-आघात, आत्मघात करना, दिवालियापन, युद्ध में नुकसान, महामारी, कपड़ों की सिलाई एंव रेडीमेड कपड़े, कम्प्यूटर, सॉफ्टवेयर, कम्प्यूटर की भाषाएं, विदेशी भाषाएं।

	भावों के कारकत्त्व
प्रथम भावः	शरीर, रंग रूप, स्वास्थ्य, बाल (केश), व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सिर, कद, चहरे का रंग रूप। राष्ट्र का कार्यकलाप, जनता का स्वास्थ्य, आपातकालीन स्थिति में राष्ट्र का व्यवहार, जनता की सोच, राष्ट्र का लक्ष्य, राजनैतिक दल।
द्वितीय भावः	वाणी, धन, जिह्वा का स्वाद, आखों की सुन्दरता, कुटुम्ब, मुख की आभा, प्राथमिक शिक्षा, खान पान, चेहरा, दाँत, दाहिना नेत्र, जमा-धन। देश की आर्थिक उन्नति एवं स्थिति, राष्ट्र की क्रय एवं विक्रय करने की क्षमता, बैंक, सरकारी केन्द्र, शेयर बाजार में लगने वाला धन, सामान्य लाभ-हानि, मुद्रा, आयात-निर्यात, राष्ट्र का संचित धन, मुद्रास्फीति, टैक्स (कर) राजस्व (बजट) विभिन्न राज्य।
तृतीय भावः	धैर्य, साहस, उत्साह, संघर्ष, छोटे भाई-बहन, दायाँकान, स्वप्न, पराक्रम, कण्ठ, मनोरजंक एवं रुचिकर कार्य (Hobbies) देह बल एवं मांसल शक्ति, नौकर, गर्दन, पड़ौसी, खेल, छोटी यात्राएं, लेखन-क्रिया, बाजू, हाथ एवं कन्धे, आयुष्य, पत्राचार, दलाली योग्यता एवं दक्षता, स्मरण शक्ति, निवास परिवर्तन, यातायात एवं परिवहन-साधन, सम्पादन, सम्पति का बटवारा, डाक-तार, फोन मोबाइल, इन्टरनेट सेवा, संवाददाता, पत्रकारिता, औषधि, उपदेश, माता-पिता की मृत्यु का विचार। यातायात, परिवहन संचार, सेटेलाइट, संचार-साधन, टेलीविजन, रेलवे ट्रान्सपोर्ट, देश के लेखक, पुस्तक, समाचारपत्र, विज्ञापन, कम्प्यूटर, पड़ौसी देश से सीमा विवाद, सेना का अध्यक्ष, जनता का मानसिक स्तर एवं विचार, लिखित समझौते, अफवाहें, राज्यों की सीमा और राष्ट्रीय खेल।

चतुर्थ भावः	शिक्षा (विषय चुनने से पहले की शिक्षा) राज्य, घर, कार, एवं चार पहिये के वाहन, माता, कुआँ, पाताल, मन की प्रसन्नता, परिवार का सुख, भूमि एवं प्रापर्टी, पत्नि के कर्म, वेद शास्त्र के ज्ञान का प्रचार प्रसार, सभी प्रकार का पशु धन, छाती (सीना), हृदय (आन्तरिक भाग)। जमीन से सम्बन्धित वस्तुऐं, राजनीति, कारखाने, अनाज, खनिज पदार्थ, जमीन से सम्बन्धित ब्याज एवं किराया, होटल झुग्गी-झोपड़ियाँ, मौसम की स्थिति, भूकम्प, जंगल, ज्वालामुखी, खदानों की दुर्घटना, सरकार में विपक्ष, लोकतन्त्र तथा सरकार, नगर-निगम, उपचुनाव का परिणाम, स्कूल, शिक्षण संस्थानों के भवन, देश की आन्तरिक स्थिति, एकता, देश-भक्ति की भावना।
पंचम भावः	संतान सम्बन्धी सुख, मन, बुद्धि तथा शिक्षा, विद्या (विषय का चुनाव) प्रतिभा, पेट, उदर, पाचन तंत्र, मंत्रो द्वारा देवताओं की पूजा-अर्चना, विवेक तथा विद्धता, शासकीय मुहर, कर, आत्मा, प्राण-शक्ति, गर्भ, श्रुति तथा स्मृति, जुआ, सट्टा तथा लॉटरी, पितामह (दादा), स्मरणशक्ति, प्रेम-सम्बन्ध, अनैतिक यौन सम्बन्ध, शक्ति, भावना, भविष्य का ज्ञान, मंत्र-सिद्धि। देश की जनता, जन्मदर, विद्यालय, विद्यार्थी, शिक्षा-विभाग, आनन्द का साधन, रंगमंच-कलाकार, खेलकूद, जनता की सुविधा हेतु बगीचा, उद्यान, इत्यादि जनता की नैतिकता, सभी प्रकार के उत्सव, उच्च सामाजिक वर्ग, विदेशों के राजनैतिक दूत, राज्यसभा, शेयर मार्किट का उतार-चढ़ाव, खेल कूद की संस्थाएं, स्टेडियम, अभिनेता, राजसत्ता की योजना एवं विचारधारा, सार्वजनिक निन्दा।
षष्ठम भावः	रोग एवं व्याधि, विघ्न, बाधा, रुकावटे, संघर्ष स्पर्धा, युद्ध, मामा, शत्रुता, बीमारी, ऋण एवं कर्जा, कलंक, अपयश, लाभ-प्राप्ति, चोरी, कारागार, चोट, शस्त्र, युद्ध, दुष्कर्म,

	विपदा, दुर्घटना, नौकरी, सेवक, प्रतियोगिताएं, एवं कमर, उदर रोग। सैनिक, आंतकवादी, हड़ताल, युद्ध, राजकीय खाद्य भण्डार, जानवरों के पालन से सम्बन्धित स्थान, सीमा-विवाद, विद्रोह एवं हत्याएँ।
सप्तम भावः	विवाह, यौन सम्बन्ध, स्थान का परिवर्तन, पति-पत्नि का चरित्र एवं स्वभाव, वाणिज्य व्यापार, शत्रु का नाश, विवाद, सहयोगी, साझेदारी, काम-इच्छा, गुप्त रोग, परदेश में बसना। युद्ध, शत्रु, विदेशी गुप्तचर, अन्तर्राष्ट्रीय मामले, झगड़े, विवाद, अन्य राज्यों से सम्बन्ध एवं समझौते, अन्तर्राष्ट्रीय-व्यापार, अलगाव, अनुबन्ध, सन्धियाँ, सहकारी समितियाँ।
अष्टम भावः	आयुष्य, अपमान, असफलता, वसीयत, मृत्यु का भय एवं कारण, मारण-जारण सम्बन्धी तांत्रिक प्रयोग, गुप्तरोग, भूसम्पदा, पैतृक सम्पत्ति, स्त्री का मांगल्य, कलंक, विदेश यात्रा, पत्नि का धन, दुर्घटना, शोध, जासूसी, साधना, कर्ज, षडयंत्र, आविष्कार और लम्बी बीमारी। राष्ट्रीय अध्यक्ष की मृत्यु, राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री की मृत्यु, सरकार का अन्त, राज्य का विनाश, मृत्युदर, वैज्ञानिक अनुसंधान, चुंगी, आयकर पेंशन, गुप्त बातें, छिपा हुआ धन, आत्महत्या, प्राकृतिक आपदाऐं और महामारी।
नवम भावः	दान, पुण्य, तीर्थयात्रा, गुरु, गुरुजनों की सेवा, देवताओं की पूजा, उपासना, नीति-नियम, यात्रा, स्थान परिवर्तन, पिता, पिता का धन वैभव, भाग्य, सदाचार, धार्मिक संस्था, भविष्य का पूर्वानुमान, प्रसिद्धि और दार्शनिकता। सुप्रीम कोर्ट (उच्चतम न्यायलय) उच्च न्यायलय, अन्तराष्ट्रीय कानून, संयुक्त राष्ट्र संघ, विदेश मंत्रालय, नौसेना, विश्वविद्यालय, समुद्री-यात्रा, धार्मिक कार्य, विदेशी व्यापार, उपदेशक, अध्यापक, बंदरगाह और पर्यटन।

दशम भाव:	वाणिज्य, व्यापार, यश, प्रताप, प्रतिष्ठा कार्यसिद्धि एवं सफलता, आजीविका, कर्म, कार्य में अभिरुचि, आकाश, अधिकार। राजा, प्रधानमंत्री, राष्ट्रीय अध्यक्ष, राज्यपाल, सत्तापक्ष, प्रतिष्ठा, राज्य का मान सम्मान, संसद, राजनीति, राष्ट्रीय लक्ष्य तथा लाभ।
एकादश भाव:	आय तथा आमदनी, बड़ा भाई या बहन, विद्या में सफलता, विशिष्ट पद, सरलता से अधिक लाभ होना, बाँया कान, वैवाहिक सम्बन्ध, प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा, नोबल पुरस्कार, सभी प्रकार की विशेष प्राप्तियाँ और उपाधियाँ आदि। लोकसभा, विदेशी सरकार से सम्बन्ध एवं सन्धि, उपराष्ट्रपति, अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध।
द्वादश भाव:	असमय नींद टूटना, मन का दु:ख, सन्ताप, बंधन या कारावास, पिता की सम्पत्ति, बाँयी आँख, विवाह से अलग यौन-सम्बन्ध, शयन-सुख, मानसिक असंतुलन, धन का नाश, विदेश यात्रा, सभी प्रकार के खर्चे, दान-पुण्य, जीवन-साथी, गुरु का आश्रम, व्यसन, पैर, पैतृक अथवा जन्म-भूमि का छूटना, अस्पताल, जेल, मोक्ष, जातक की मृत्यु, पतन, विदेश। युद्ध तथा हानि, यातना गृह, षडयन्त्र, हत्याएं, लूटमार, बलात्कार, गुप्त योजनाएं विदेशी गुप्तचर, बगावत, गुप्त सन्धियाँ, सोचे-समझे अपराध, जुआ, तस्करी, सेवानिवृति, देशनिकाला, विदेश में मिलने वाली सफलता, गुप्तचर, खुफिया-विभाग।

Notes/टिप्पणी

Books by Vani Publications

Sl.No.	English Title	Price(Rs.)
1.	Ups and Downs in Career	150
2.	The Nehru Dynasty	200
3.	Astrology, Destiny and the Wheel of Time	250
4.	Dips into Divinity, Astrology & History	200
5.	Learn Successful Predictive Techniques of Hindu Astrology	180
6.	Karma & Rebirth in Hindu Astrology	180
7.	Learn Hindu Astrology Easily	180
8.	Predicting through Jaimini's Chara Dasha	180
9.	Planets & Children	150
10.	Predicting Through Karakamsha and Jaimini's Mandook Dasha	180
11.	Enigmas in Astrology	150
12.	Tried Techniques of Predictions; Some Memoirs of an Astrologer	100
13.	Finer Techniques of Astrological Predictions Vol. I	200
14.	Finer Techniques of Astrological Predictions Vol. II	200
15.	Saadhe Saati	150
16.	Famous Women	250
17.	Successful Marriages with Jupiter in Simha (bilingual)	120
18.	Predicting through Dwisaptati Sama Dasha	150
19.	Timing Events through Vimshottari Dasha	150
20.	Risks and Tricks in Astrological Predictions	150
21.	Predict Effectively through Yogini Dasha	150
22.	Predicting through Chatursheeti Sama Dasha	150
23.	Kaal Sarpa Yoga	150
24.	Yogis, Destiny and the Wheel of Time	250
25.	Astrology of Professions	200
26.	Predicting through Jaimini's Sthira Dasha	120
27.	Predicting through Shodashottari Dasha	100
28.	Pataki Risht Chakra	120
29.	Predicting through Shasti Hayani Dasha	120
30.	Jyothisha; the Super Science	150
31.	Predicting through Dwadashottari Dasha	125
32.	Delayed Marriage of Girls (bilingual)	120
33.	The First Born Child (bilingual)	150
34.	Astrology and Faith (bilingual)	120
35.	Planets & Education	200
36.	The Drekkana	250
37.	Single Woman and Astrology (bilingual)	150
38.	Practical Application of Nadi Techniques	150
39.	Astrology and Timing of Marriage (bilingual)	200
40.	Indian Marriages in Modern, Urban, Educated Society	250
41.	Time Tested Techniques of Mundane Astrology	300
42.	Predict through Jaimini's Navamsha Dasha	80
43.	Adoption (bilingual)	80
44.	Interpreting Divisional Charts	150
45.	Adhana Kundli	100
46.	Men who became stars	250
47.	Match Making (bilingual)	300

48. Advanced use of Chara Dasha 300
49. Ages of 36 and 72 Significant and Critical 250
50. Planets and Sisters and Brothers 250
51. Your Children and Your Karmas 400

Hindi Titles

1. जैमिनी चर दशा से भविष्यवाणी 150
2. विंशोतरी दशा से भविष्यवाणी 150
3. ज्योतिष प्रारब्ध काल चक्र 250
4. हिन्दू ज्योतिष का सरल अध्ययन 150
5. हिन्दू ज्योतिष में कर्म एवं पुनर्जन्म 180
6. व्यावसायिक जीवन में उतार चढ़ाव 120
7. कारकांश एवं मण्डूक दशा से भविष्यवाणी 120
8. आयु, अरिष्ट और अष्टम चन्द्र 120
9. सिंहस्थ गुरु में सफल विवाह (द्विभाषीय) 120
10. स्तोत्र मञ्जरी 150
11. कालसर्प योग 80
12. फलित ज्योतिष में चुनौतियां और युक्तियां 100
13. ज्योतिष और आजीविका 200
14. जैमिनी स्थिर दशा से भविष्यवाणी 100
15. पताकी रिष्ट चक्र 150
16. वाल्मीकि रामायण में ज्योतिषीय रूपरेखा 100
17. ग्रह और संतान 150
18. वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस में श्रृंगार रस 100
19. लड़कियों की शादी में विलम्ब (द्विभाषीय) 120
20. एक मात्र, ज्येष्ठ या कनिष्ठ संतान (द्विभाषीय) 100
21. ज्योतिष और आस्था (द्विभाषीय) 120
22. अविवाहित महिलायें और ज्योतिष (द्विभाषीय) 150
23. ज्योतिष और विवाह समय (द्विभाषीय) 200
24. सफल भविष्यवाणियां - तकनीक और दृष्टान्त 100
25. जैमिनी नवांश दशा से भविष्यवाणी 80
26. दत्तक सन्तान (द्विभाषीय) 80
27. कंटक शनि; अष्टम शनि शनि की साढ़ेसाती 150
28. दशा परिवर्तन (दशा छिद्र) सुखद या दुःखद 150
29. योगी प्रारब्ध एवं कालचक्र 250
30. अङ्गलक्षण 150
31. ज्योतिष के मूल सिद्धान्त 150
32. कुण्डली मिलान (द्विभाषीय) 300
33. मेदिनी ज्योतिष 300

Books are available at

Vani Publications

F-291, Saraswati Kunj, 25 I.P. Extension, Delhi - 110 092

Tel.: 22721624, 22721625

e-mail: • knrastro@hotmail.com • kn_rao@yahoo.com

Reg No. 40050/2001

Telephone : 011-22721624
Telefax : 011-22721625

the Society for Vedic Researches and Practices

(Registered under the Societies Registration Act XXI(1860) of Govt. of NCT of Delhi)

F/291, Saraswati Kunj
25, I.P. Extension
Delhi - 110092

Members of the Governing Body

K.N. Rao
Consultant and Teacher

K. Vijaylaxmi Rao
Consultant

Ms. Swati Chawla
Consultant

R.C. Dadwal
Consultant and Teacher

A.K. Jain
Practising Lawyer

Deepak Bisaria
Consultant and Teacher

Anil Singh
Consultant and Teacher

Dinesh Jain
Consultant

The Society was founded a few years ago by Shri K.N. Rao and the likeminded scholars of the subject to evolve more and more avenues to disseminate this ancient science as far as possible and as much as possible. And so far the Society has been successful in this exercise. They have sponsored a few research projects and got the findings published in the forms of monographs. The Society has also undertaken the publications of the translations of some of the earlier works of various scholars in Hindi.

The **preamble** of the Society lays special emphasis on:

undertaking original research in the science of Vedic astrology, and Indian/Hindu philosophy,

organising discussions and seminars on various researches and the subsequent publication of the findings,

helping the projects financially for conducting the research and its publication,

promoting scientific exchange of knowledge between various groups engaged in similar researches in India and abroad,

and

raising funds through various sources mainly from donations and contributions from time to time upon such terms and conditions as deemed necessary.

IMP: All donations to the Society are exempted u/s 80 G of the Income Tax Act 1961

e-mail: • knrastro@hotmail.com • kn_rao@yahoo.com

प्रियम्बदा अग्रवाल

आशुतोष शर्मा

भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भागवत पुराणान्तर्गत कहा है कि निर्णय लेने में जब भी समस्या उत्पन्न हो तो वेदों एवं शास्त्रों के प्रमाण को सर्वोपरि मानना चाहिये। ऐसे में ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान भी ज्योतिष के प्राचीन मूलभूत ग्रन्थों के माध्यम से लिया जाना चाहिये। आज के युग में देश काल पात्र की समय सीमा के अंतर्गत विद्वानों ने ज्योतिष शास्त्र के मूल सिद्धान्तों में भी परिवर्तन करना आरंभ कर दिया है, ऐसे में सभी को सही जानकारी और मूल सिद्धांतों का उपलब्ध न होना स्वभाविक है। हमारा प्रयास पुनः उन प्राचीन ग्रन्थों के अंतर्गत प्रस्तुत ज्योतिष सिद्धान्तों को उसी रूप में सामान्य जनों के लिये सुलभ करना रहा है, ताकि विषय की जटिलता दैविक संस्कृत भाषा में ही अटक कर न रह जाये। प्रस्तुत पुस्तक में ली गई सामग्री विभिन्न प्राचीन मतों और ग्रन्थों के संदर्भ और टीका के माध्यम से ली गई है। आशा करते हैं कि यह पुस्तक सभी ज्योतिष प्रेमियों के लिये इस मार्ग को प्रशस्त करने में एक सहायक भूमिका अदा करेगी।